भजन संहिता

[?][?][?]

कविताओं का संग्रह, भजन संहिता पुराने नियम की पुस्तकों में एक है जिसमें अनेक रचियताओं की रचनाओं का संग्रह है। इसके अनेक लेखक हैं: दाऊद, आसाप, कोरह के पुत्रों, सुलैमान, एतान, हेमान, मूसा और अज्ञात भजनकार हैं। सुलैमान और मूसा की अपेक्षा सब भजनकार या तो याजक थे या लेवी थे जो दाऊद के राज्य में पिवत्रस्थान में उपासना हेतु संगीत की व्यवस्था का दायित्व निभा रहे थे।

2222 2222 222 2222 लगभग 1440 - 430 ई. पृ.

व्यक्तिगत भजन इतिहास में मूसा के समय तक पुराने हैं और दाऊद, आसाप, सुलैमान तथा एज्जा पंथियों (बाबेल के दासत्व के बाद) तक के हैं। इसका अर्थ है कि इस पुस्तक में लगभग एक हजार वर्ष का भजन संग्रह है।

|?||?||?||?||?||?|

इस्राएल की प्रजा- परमेश्वर ने उनके लिए और सम्पूर्ण इतिहास में विश्वासियों के लिए क्या किया है।

भजनों के विषय रहे हैं: परमेश्वर और उसकी सृष्टि, युद्ध, आराधना, बुद्धि, पाप और बुराई, दण्ड, न्याय तथा मसीह का आगमन। भजन पाठकों को प्रोत्साहित करते हैं कि वे परमेश्वर का तथा उसके कामों का गुणगान करें। भजन हमारे परमेश्वर की महानता को प्रकाशित करते हैं। संकटकाल में हमारे लिए उसकी विश्वासयोग्यता की पुष्टि करते हैं और हमें उसके वचन की परम केन्द्रिता का स्मरण करवाते हैं।

????????

प्रशंसा

रूपरेखा

- $1. \, \text{मसीही पुस्तक} 1:1-41:13$
- 2. मनोकामना की पुस्तक 42:1-72:20
- 3. इस्राएल की पुस्तक 73:1-89:52
- 4. परमेश्वर के शासन की पुस्तक -90:1-106:48
- 5. गुणगान की पुस्तक -107:1-150:6

पहला भाग

1

77. 1-41

2222222 22 22222222 222 2222

¹ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की ???????? ???* नहीं चलता,

और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता;

और न ठट्टा करनेवालों की मण्डली में बैठता है!

2 परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता;

और उसकी व्यवस्था पर रात-दिन ध्यान करता रहता है।

और अपनी ऋतु में फलता है,

और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं।

और जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है।

4 दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते,

वे उस भूसी के समान होते हैं, जो पवन से उड़ाई जाती है।

5 इस कारण दुष्ट लोग अदालत में स्थिर न रह सकेंगे, और न पापी धर्मियों की मण्डली में ठहरेंगे; 6 क्योंकि यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है, परन्तु दुष्टों का मार्ग नाश हो जाएगा।

2

¹ जाति-जाति के लोग क्यों हुल्लड़ मचाते हैं,

और देश-देश के लोग क्यों षड्यंत्र रचते हैं?

² यहोवा के और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध पृथ्वी के राजागण मिलकर,

3 "??, ?? ???? ????? ???? ???? ?????, *,

और उनकी रस्सियों को अपने ऊपर से उतार फेंके।"

4 22 22 222222 222 22222222 22, 222222;

प्रभु उनको उपहास में उड़ाएगा।

5 तब वह उनसे क्रोध में बातें करेगा,

और क्रोध में यह कहकर उन्हें भयभीत कर देगा,

6 "मैंने तो अपने चुने हुए राजा को,

अपने पवित्र पर्वत सिय्योन की राजगद्दी पर नियुक्त किया है।"
⁷मैं उस वचन का प्रचार करूँगा:

जो यहोवा ने मुझसे कहा, "तू मेरा पुत्र है;

22. 1:49, 22.2.2. 13:33, 22.2.2. 1:5, 22.2.2. 5:5, 2 22. 1:17)

⁹तू उन्हें लोहे के डंडे से टुकड़े-टुकड़े करेगा। तू कुम्हार के बर्तन के समान उन्हें चकनाचूर कर डालेगा।" (????????. 2:27, ???????. 12:5, ???????. 19:15)

10 इसलिए अब, हे राजाओं, बुद्धिमान बनो; हे पृथ्वी के शासकों, सावधान हो जाओ।
11 डरते हुए यहोवा की उपासना करो,
और काँपते हुए मगन हो। (??????. 2:12)
12 पुत्र को चूमो ऐसा न हो कि वह कोध करे,
और तुम मार्ग ही में नाश हो जाओ,
क्योंकि क्षण भर में उसका कोध भड़कने को है।
धन्य है वे जो उसमें शरण लेते है।

3

दाऊद का भजन। जब वह अपने पुत्र अबशालोम के सामने से भागा जाता था ¹हे यहोवा मेरे सतानेवाले कितने बढ़ गए हैं! वे जो मेरे विरुद्ध उठते हैं बहुत हैं। ² बहुत से मेरे विषय में कहते हैं,

(सेला)

4मैं ऊँचे शब्द से यहोवा को पुकारता हूँ, और वह अपने पवित्र पर्वत पर से मुझे उत्तर देता है।

(सेला)

4

प्रधान बजानेवाले के लिये: तारवाले बाजों के साथ। दाऊद का भजन
1हे मेरे धर्ममय परमेश्वर, जब मैं पुकारूँ तब तू मुझे उत्तर दे; जब मैं संकट में पड़ा तब तूने मुझे सहारा दिया। मुझ पर अनुग्रह कर और मेरी प्रार्थना सुन ले।
2हे मनुष्यों, कब तक मेरी महिमा का अनादर होता रहेगा? तुम कब तक व्यर्थ बातों से प्रीति रखोगे और झूठी युक्ति की खोज में रहोगे?

(सेला)

³ यह जान रखो कि *2|2121212 212 21212 212 2121212 21212 21212 21212 21212 21212 21212 21212 21212 21212 21212 21*

जब मैं यहोवा को पुकारूँगा तब वह सुन लेगा।

4 काँपते रहो और पाप मत करो;
अपने-अपने बिछौने पर मन ही मन में ध्यान करो और चुपचाप
रहो।

(सेला)

(????. 4:26)

5 धार्मिकता के बलिदान चढ़ाओ, और यहोवा पर भरोसा रखो। 6 बहुत से हैं जो कहते हैं, "कौन हमको कुछ भलाई दिखाएगा?" हे यहोवा, तू अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका! 7 तूने मेरे मन में उससे कहीं अधिक आनन्द भर दिया है, जो उनको अन्न और दाखमधु की बढ़ती से होता है। 8 मैं शान्ति से लेट जाऊँगा और सो जाऊँगा; क्योंकि, हे यहोवा, केवल तू ही मुझ को निश्चिन्त रहने देता है।

5

प्रधान बजानेवाले के लिये: बांसुरियों के साथ, दाऊद का भजन ¹ हे यहोवा, मेरे वचनों पर कान लगा; मेरे कराहने की ओर ध्यान लगा। ² हे मेरे राजा, हे मेरे परमेश्वर, मेरी दुहाई पर ध्यान दे, क्योंकि मैं तुझी से प्रार्थना करता हूँ। ³ हे यहोवा, भोर को मेरी वाणी तुझे सुनाई देगी, मैं भोर को प्रार्थना करके तेरी बाट जोहुँगा।

उनके मन में निरी दुष्टता है। ११११११११ ११११११ ११११११ ११११११ १११११

भजन संहिता 5:4

वे अपनी जीभ से चिक्नी चुपड़ी बातें करते हैं। (2022. 3:13)

¹⁰ हे परमेश्वर तू उनको दोषी ठहरा;

वे अपनी ही युक्तियों से आप ही गिर जाएँ; उनको उनके अपराधों की अधिकाई के कारण निकाल बाहर कर,

क्योंकि उन्होंने तुझ से बलवा किया है।

11 परन्तु जितने तुझ में शरण लेते हैं वे सब आनन्द करें, वे सर्वदा ऊँचे स्वर से गाते रहें; क्योंकि तू उनकी रक्षा करता है, और जो तेरे नाम के प्रेमी हैं तुझ में प्रफुल्तित हों। 12 क्योंकि तु धर्मी को आशीष देगा; हे यहोवा,

तू उसको ढाल के समान अपनी कृपा से घेरे रहेगा।

6

प्रधान बजानेवाले के लिये: तारवाले बाजों के साथ। खर्ज की राग में, दाऊद का भजन

¹ हे यहोवा, तू *2022 2222 2222 2222 2222**,

और न रोष में मुझे ताड़ना दे।

2 हे यहोवा, मुझ पर दया कर, क्योंकि मैं कुम्हला गया हूँ;

हे यहोवा, मुझे चंगा कर, क्योंकि मेरी हड्डियों में बेचैनी है।

3 मेरा प्राण भी बहुत खेदित है।

और तू, हे यहोवा, कब तक? (शाय. 12:27)

⁴ ???? ?, ??? ??????!, और मेरे प्राण बचा;

अपनी करुणा के निमित्त मेरा उद्धार कर।

5 क्योंकि मृत्यु के बाद तेरा स्मरण नहीं होता;

अधोलोक में कौन तेरा धन्यवाद करेगा?

6मैं कराहते-कराहते थक गया;

मैं अपनी खाट आँसुओं से भिगोता हुँ;

प्रति रात मेरा बिछौना भीगता है।

⁷मेरी आँखें शोक से बैठी जाती हैं,

और मेरे सब सतानेवालों के कारण वे धुँधला गई हैं।

8 हे सब अनर्थकारियों मेरे पास से दूर हो;

यहोवा मेरी प्रार्थना को ग्रहण भी करेगा।

10 मेरे सब शत्रु लज्जित होंगे और बहुत ही घबराएँगे;

^{* 6:1} 20202 20202 202022 20202 20202: जैसे कि मानो उस पर आनेवाले कष्टों के द्वारा उसको झड़क रहा है। $\dot{}$ 6:4 2020 20, 200 2020202: जैसे कि मानो वह उसे छोड़कर चला गया और उसे मरने के लिए छोड़ दिया है। $\dot{}$ 6:9 2020202 2020202 2020202 2020202 2020202 2020202 2020202 2020202 2020202 2020202 2020202 20202

वे पराजित होकर पीछे हटेंगे, और एकाएक लज्जित होंगे।

7

दाऊद का शिग्गायोन नामक भजन जो बिन्यामीनी कूश की बातों के कारण यहोवा के सामने गाया

 1 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं तुझ में शरण लेता हूँ;

सब पीछा करनेवालों से मुझे बचा और छुटकारा दे,

²ऐसा न हो कि वे मुझ को सिंह के समान फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डालें;

और कोई मेरा छुड़ानेवाला न हो।

3 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, यदि मैंने यह किया हो, यदि मेरे हाथों से कुटिल काम हुआ हो,

⁴यिद मैंने अपने मेल रखनेवालों से भलाई के बदले बुराई की हो, या मैंने उसको जो अकारण मेरा बैरी था लूटा है

और मेरे प्राण को भूमि पर रौंदे, और मुझे अपमानित करके मिट्टी में मिला दे।

(सेला)

6 हे यहोवा अपने क्रोध में उठ; क्रोध से भरे मेरे सतानेवाले के विरुद्ध तू खड़ा हो जा; मेरे लिये जाग! तूने न्याय की आज्ञा दे दी है। ⁷ देश-देश के लोग तेरे चारों ओर इकट्टे हुए है; तू फिर से उनके ऊपर विराजमान हो। ⁸ यहोवा जाति-जाति का न्याय करता है;

यहोवा मेरी धार्मिकता और खराई के अनुसार मेरा न्याय चुका दे।

9 भला हो कि दुष्टों की बुराई का अन्त हो जाए, परन्तु धर्मी को तु स्थिर कर;

क्योंकि धर्मी परमेश्वर मन और मर्म का ज्ञाता है। 10 मेरी ढाल परमेश्वर के हाथ में है,

वह सीधे मनवालों को बचाता है।

11 2222222 221 22222 221 22222 221,

वरन् ऐसा परमेश्वर है जो प्रतिदिन क्रोध करता है।

12 यदि मनुष्य मन न फिराए तो वह अपनी तलवार पर सान चढ़ाएगा;

वह अपने तीरों को अग्निबाण बनाता है। 14 देख दुष्ट को अनर्थ काम की पीड़ाएँ हो रही हैं, उसको उत्पात का गर्भ है, और उससे झूठ का जन्म हुआ। 15 उसने गहुं खोदकर उसे गहरा किया, और जो खाई उसने बनाई थी उसमें वह आप ही गिरा। 16 उसका उत्पात पलटकर उसी के सिर पर पड़ेगा; और उसका उपद्रव उसी के माथे पर पड़ेगा। 17 मैं यहोवा के धर्म के अनुसार उसका धन्यवाद करूँगा, और परमप्रधान यहोवा के नाम का भजन गाऊँगा।

8

1 हे यहोवा हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है!

तूने अपना वैभव स्वर्ग पर दिखाया है।

² तूने अपने बैरियों के कारण बच्चों और शिशुओं के द्वारा अपनी प्रशंसा की है.

ताकि तू शत्रु और पलटा लेनेवालों को रोक रखे। (2020202020)

³ जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है,

और चन्द्रमा और तरागण को जो तूने नियुक्त किए हैं, देखता हूँ;

 4 $2\!\!\!/2$ $2\!\!\!/2$ $2\!\!\!/2$ $2\!\!\!/2$ $2\!\!\!/2$ $2\!\!\!/2$ $2\!\!\!/2$ कि तू उसका स्मरण रखे,

और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?

⁵ क्योंकि तूने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है।

6तूने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है;

2222 2222 2222 222 222 222 225 1 (1 <u>2222</u>). 15:27, <u>222</u>, <u>22222</u>. 2:6-8, <u>222222</u>. 17:31)

⁷सब भेड़-बकरी और गाय-बैल और जितने वन पशु हैं,

8 आकाश के पक्षी और समुद्र की मछलियाँ, और जितने जीव-जन्तु समुद्रों में चलते फिरते हैं। 9 हे यहोवा, हे हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है।

^{* 8:4} 202 2020 202020202 20202 202: मनुष्य कैसा महत्वहीन है, उसका जीवन भाप के समान है वह अति शीघ्र विलोप हो जाता है वह अति पापी और अशुद्ध है कि ऐसा प्रश्न किया जाए। † 8:6 20202 202

9

प्रधान बजानेवाले के लिये मुतलबैयन कि राग पर दाऊद का भजन 1 हे यहोवा परमेश्वर मैं अपने पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद करूँगा; मैं तेरे सब आश्चर्यकर्मों का वर्णन कुरूँगा। 2मैं तेरे कारण आनन्दित और प्रफुल्लित होऊँगा, हे परमप्रधान, मैं तेरे नाम का भजन गाऊँगा। 3 मेरे शत्रु पराजित होकर पीछे हटते हैं, वे तेरे सामने से ठोकर खाकर नाश होते हैं। 4तूने मेरे मुकद्दमे का न्याय मेरे पक्ष में किया है; तूने सिंहासन पर विराजमान होकर धार्मिकता से न्याय किया। 5 तूने जाति-जाति को झिड़का और दुष्ट को नाश किया है; तूने उनका नाम अनन्तकाल के लिये मिटा दिया है। 6 शत्रु अनन्तकाल के लिये उजड़ गए हैं; उनके नगरों को तुने ढा दिया, और उनका नाम और निशान भी मिट गया है। उसने अपना सिंहासन न्याय के लिये सिद्ध किया है; 8 और वह जगत का न्याय धर्म से करेगा. वह देश-देश के लोगों का मुकद्दमा खराई से निपटाएगा। (22). 9 यहोवा पिसे हुओं के लिये ऊँचा गढ़ ठहरेगा,

⁹ यहोवा पिसे हुओं के लिये ऊँचा गढ़ ठहरेगा, वह संकट के समय के लिये भी ऊँचा गढ़ ठहरेगा। ¹⁰ और तेरे नाम के जाननेवाले तुझ पर भरोसा रखेंगे, क्योंकि हे यहोवा तूने अपने खोजियों को त्याग नहीं दिया। ¹¹ यहोवा जो सिय्योन में विराजमान है, उसका भजन गाओ!

^{* 9:7 @@@@@ @@@@ @@@@@@@@ @@ @@@@@@@ @@:} यहोवा अनन्त है, सदैव एक जैसा है।

जाति-जाति के लोगों के बीच में उसके महाकर्मों का प्रचार करो!

12 क्योंकि खून का पलटा लेनेवाला उनको स्मरण करता है;

वह पिसे हुओं की दुहाई को नहीं भूलता।

13 हे यहोवा, मुझ पर दया कर। देख, मेरे बैरी मुझ पर अत्याचार कर रहे है,

तू ही मुझे मृत्यु के फाटकों से बचा सकता है;

14 तािक मैं सिय्योन के फाटकों के पास तेरे सब गुणों का वर्णन करूँ,

और तेरे किए हुए उद्धार से मगन होऊँ।

जातियाँ अपने को मनुष्यमात्र ही जानें।

15 अन्य जातिवालों ने जो गहुा खोदा था, उसी में वे आप गिर पड़े;

जो जाल उन्होंने लगाया था, उसमें उन्हीं का पाँव फँस गया।

16 यहोवा ने अपने को प्रगट किया, उसने न्याय किया है;

दुष्ट अपने किए हए कामों में फँस जाता है। (22222222221),

सेला)

17 दुष्ट अधोलोक में लौट जाएँगे, तथा वे सब जातियाँ भी जो परमेश्वर को भूल जाती है। 18 क्योंकि दिरद्र लोग अनन्तकाल तक बिसरे हुए न रहेंगे, और न तो नम्र लोगों की आशा सर्वदा के लिये नाश होगी। 19 हे यहोवा, उठ, मनुष्य प्रबल न होने पाए! जातियों का न्याय तेरे सम्मुख किया जाए। 20 हे यहोवा, उनको भय दिला!

(सेला)

^{ं 9:16 2/2/2/2/2/2/2/2/2:} अर्थात् बुदबुदाना, धीरे धीरे कहना जैसे वीणा की निम्न ध्वनी या जैसे कोई स्वयं से बातें करते समय बड़बड़ाता है और ध्यान करता है।

10

2 दुष्टों के अहंकार के कारण दीन पर अत्याचार होते है; वे अपनी ही निकाली हुई युक्तियों में फँस जाएँ। ³क्योंकि दुष्ट अपनी अभिलाषा पर घमण्ड करता है, और लोभी यहोवा को त्याग देता है और उसका तिरस्कार करता 4 दुष्ट अपने अहंकार में परमेश्वर को नहीं खोजता; उसका पूरा विचार यही है कि कोई परमेश्वर है ही नहीं। 5 वह अपने मार्ग पर दृढ़ता से बना रहता है; तेरे धार्मिकता के नियम उसकी दृष्टि से बहुत दूर ऊँचाई पर हैं, जितने उसके विरोधी हैं उन पर वह फ़ुँकारता है। 6 7/17 7/17/17 7/17 7/17/17 7/17/17 कि "मैं कभी टलने का नहीं: मैं पीढ़ी से पीढ़ी तक दु:ख से बचा रहँगा।" 7 उसका मुँह श्राप और छल और धमिकयों से भरा है; उत्पात और अनर्थ की बातें उसके मुँह में हैं। (????. 3:14) 8 वह गाँवों में घात में बैठा करता है, और गुप्त स्थानों में निर्दोष को घात करता है, उसकी आँखें लाचार की घात में लगी रहती है। 9 वह सिंह के समान झाड़ी में छिपकर घात में बैठाता है; वह दीन को पकड़ने के लिये घात लगाता है, वह दीन को जाल में फँसाकर पकड़ लेता है। ¹⁰लाचार लोगों को कुचला और पीटा जाता है,

^{* 10:1 @? 202020 202 2020202 20202 20202 202:} जैसे कि यहोवा छिप गया था या दूर हो गया। उसने स्वयं को प्रगट नहीं किया परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि दुःख उठाने के लिए छोड़ दिया। ं 10:6 202 20202 202 2020 2020 2020 2020 सम्भवतः सर्प का है जिसके दाँत की जड़ में विष रहता है।

वह उसके मजबूत जाल में गिर जाते हैं।

11 वह अपने मन में सोचता है, "परमेश्वर भूल गया,

वह अपना मुँह छिपाता है; वह कभी नहीं देखेगा।"

12 उठ, हे यहोवा; हे परमेश्वर, अपना हाथ बढ़ा और न्याय कर; और दीनों को न भूल।

¹³ परमेश्वर को दुष्ट क्यों तुच्छ जानता है,

और अपने मन में कहता है "तू लेखा न लेगा?"

14 तूने देख लिया है, क्योंकि तू उत्पात और उत्पीड़न पर दृष्टि रखता है, ताकि उसका पलटा अपने हाथ में रखे;

लाचार अपने आपको तुझे सौंपता है;

अनाथों का तू ही सहायक रहा है।

15 दुर्जन और दुष्ट की भुजा को तोड़ डाल;

उनकी दुष्टता का लेखा ले, जब तक कि सब उसमें से दूर न हो जाए।

¹⁶ यहोवा अनन्तकाल के लिये महाराज है;

उसके देश में से जाति-जाति लोग नाश हो गए हैं। (222). 11:26,27)

¹⁷ हे यहोवा, तूने नम्र लोगों की अभिलाषा सुनी है; तू उनका मन दृढ़ करेगा, तू कान लगाकर सुनेगा

¹⁸ कि अनाथ और पिसे हुए का न्याय करे,

11

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन ¹मैं यहोवा में शरण लेता हूँ;

[‡] **10:18** 2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 2/2 2/2/2 2/2: मनुष्य धरती की उपज है या मिट्टी से रचा गया है।

तुम क्यों मेरे प्राण से कहते हो 2 क्योंकि देखो, दुष्ट अपना धनुष चढ़ाते हैं, और अपने तीर धनुष की डोरी पर रखते हैं, कि सीधे मनवालों पर अधियारे में तीर चलाएँ। तो धर्मी क्या कर सकता है? 4 यहोवा अपने पवित्र भवन में है: यहोवा का सिंहासन स्वर्ग में है; उसकी आँखें मनुष्य की सन्तान को नित देखती रहती हैं और उसकी पलकें उनको जाँचती हैं। 5 यहोवा धर्मी और दुष्ट दोनों को परखता है, परन्तु जो उपद्रव से प्रीति रखते हैं उनसे वह घृणा करता है। 6 वह दुष्टों पर आग और गन्धक बरसाएगा; और प्रचण्ड लूह उनके कटोरों में बाँट दी जाएँगी। 7 क्योंकि यहोवा धर्मी है, वह धार्मिकता के ही कामों से प्रसन्न रहता है; धर्मी जन उसका दर्शन पाएँगे।

12

प्रधान बजानेवाले के लिये खर्ज की राग में दाऊद का भजन है यहोवा बचा ले, क्योंकि एक भी भक्त नहीं रहा; मनुष्यों में से विश्वासयोग्य लोग लुप्त हो गए हैं।

^{* 11:1} 2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 इसका अभिप्राय है कि वह जहाँ था वहाँ उसकी सुरक्षा नहीं थी। ं 11:3 2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2/2 यहाँ नींव का अर्थ है सत्य एवं धार्मिकता के महान सिद्धान्त जो समाज को थामे रहते हैं जैसे किसी भवन की नींव जो निर्माण को थामती है।

2 प्रत्येक मनुष्य अपने पड़ोसी से झठी बातें कहता है; वे चापलुसी के होठों से दो रंगी बातें करते हैं। 3 यहोवा सब चापलूस होठों को डालेगा। 4वे कहते हैं, "हम अपनी जीभ ही से जीतेंगे, हमारे होंठ हमारे ही वश में हैं; हम पर कौन शासन कर सकेगा?" 5 दीन लोगों के लुट जाने, और दरिद्रों के कराहने के कारण, यहोवा कहता है, "अब मैं उठूँगा, जिस पर वे फ़ुँकारते हैं उसे मैं चैन विश्राम दुँगा।" 6 यहोवा का वचन पवित्र है, उस चाँदी के समान जो भट्टी में मिट्टी पर ताई गई, और ???? ???? ??????? ?? ??? ??! । ⁷तू ही हे यहोवा उनकी रक्षा करेगा, उनको इस काल के लोगों से सर्वदा के लिये बचाए रखेगा। 8 जब मनुष्यों में बुराई का आदर होता है, तब दुष्ट लोग चारों ओर अकड़ते फिरते हैं।

13

^{* 12:3} 2/2 2/2/2 2/2 2/2/2

कब तक मेरा शत्रु मुझ पर प्रबल रहेगा? 3 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरी ओर ध्यान दे और मुझे उत्तर दे, 2222 2222 2222 222 2222 222 224, नहीं तो मुझे मृत्य की नींद आ जाएगी;

4ऐसा न हो कि मेरा शत्रु कहे, "मैं उस पर प्रबल हो गया;" और ऐसा न हो कि जब मैं डगमगाने लगूँ तो मेरे शत्रु मगन हों। 5 परन्तु मैंने तो तेरी करुणा पर भरोसा रखा है; मेरा हृदय तेरे उद्धार से मगन होगा। 6 मैं यहोवा के नाम का भजन गाऊँगा, क्योंकि उसने मेरी भलाई की है।

14

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन $\frac{1}{222222}$ ने अपने मन में कहा है, "कोई परमेश्वर है ही नहीं।" वे बिगड़ गए, उन्होंने घिनौने काम किए हैं, कोई सुकर्मी नहीं। 2 यहोवा ने स्वर्ग में से मनुष्यों पर दृष्टि की है कि देखे कि कोई बुद्धिमान, कोई यहोवा का खोजी है या नहीं। 3 वे सब के सब भटक गए, वे सब भ्रष्ट हो गए; कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं। (2.2. 3:10,11) 4क्या किसी अनर्थकारी को कुछ भी ज्ञान नहीं रहता, जो मेरे लोगों को ऐसे खा जाते हैं जैसे रोटी, और यहोवा का नाम नहीं लेते?

^{ं 13:3 2022 22202 202 222202 202 202 202} विकास मृत्यु के निकट आने पर आँखों की ज्योति कम हो जाती है और उसे ऐसा प्रतीत होता है कि मृत्यु निकट है। वह कहता है कि जब तक परमेश्वर हस्तक्षेप न करे अंधकार गहरा होता जाएगा। 222222: धर्मशास्त्र में दुष्ट को प्रायः मुर्ख कहा गया है जैसे पाप मुर्खता का अनिवार्य तत्त्व है।

⁵ वहाँ उन पर भय छा गया, क्योंकि परमेश्वर धर्मी लोगों के बीच में निरन्तर रहता है। ⁶ तुम तो दीन की युक्ति की हँसी उड़ाते हो परन्तु यहोवा उसका शरणस्थान है। ⁷ भला हो कि इस्राएल का उद्धार <u>शिश्वशिश्वशिश्वशिश्वशि</u> प्रगट होता! जब यहोवा अपनी प्रजा को दासत्व से लौटा ले आएगा, तब याकूब मगन और इस्राएल आनन्दित होगा। (शिश्व. 53:6,

15

जो कोई ऐसी चाल चलता है वह कभी न डगमगाएगा।

16

दाऊद का मिक्ताम

1 हे परमेश्वर मेरी रक्षा कर,
क्योंकि मैं तेरा ही शरणागत हूँ।

2 मैंने यहोवा से कहा, "तू ही मेरा प्रभु है;
तेरे सिवा मेरी भलाई कहीं नहीं।"

3 पृथ्वी पर जो पवित्र लोग हैं,

वेही आदर के योग्य हैं,

और उन्हीं से मैं प्रसन्न हूँ।

4 जो पराए देवता के पीछे भागते हैं उनका दुःख बढ़ जाएगा; मैं उन्हें लहवाले अर्घ नहीं चढ़ाऊँगा

और <u>[2022 2022 2022 20222 22 2022 2022</u>

5 यहोवा तू मेरा चुना हुआ भाग और मेरा कटोरा है;

मेरे भाग को तू स्थिर रखता है।

6मेरे लिये माप की डोरी म्नभावने स्थान में पड़ी,

और मेरा भाग मनभावना है।

7मैं यहोवा को धन्य कहता हूँ,

क्योंकि उसने मुझे सम्मति दी है;

वरन् मेरा मन भी रात में मुझे शिक्षा देता है।

^{* 16:4} 20202 20202 20202 2020202 2020202 2020202 2020202: आराधना के साधन स्वरूप अर्थात् मैं किसी भी प्रकार उन्हें ईश्वर नहीं मानूँगा और न ही उन्हें वह भक्ति चढ़ाऊँगा जो परमेश्वर का है। ं 16:8 2020202 2020202 202020202 202020202 2020202 2020202 20202

17

दाऊद की प्रार्थना

1 हे यहोवा परमेश्वर सच्चाई के वचन सुन, मेरी पुकार की ओर ध्यान दे

मेरी प्रार्थना की ओर जो निष्कपट मुँह से निकलती है कान लगा!

2मेरे मुकद्दमे का निर्णय तेरे सम्मुख हो!

तेरी आँखें न्याय पर लगी रहें!

³ यदि तू मेरे हृदय को जाँचता; यदि तू रात को मेरा परीक्षण करता,

यदि तू मुझे परखता तो कुछ भी खोटापन नहीं पाता;

मेरे मुँह से अपराध की बात नहीं निकलेगी।

अधर्मियों के मार्ग से स्वयं को बचाए रखा।

5 मेरे पाँव तेरे पथों में स्थिर रहे, फिसले नहीं।

6 हे परमेश्वर, मैंने तुझ से प्रार्थना की है, क्योंकि तू मुझे उत्तर देगा। अपना कान मेरी ओर लगाकर मेरी विनती सन ले।

अपना कान मेरी ओर लगाकर मेरी विनती सुन ले। ⁷तू जो अपने दाहिने हाथ के द्वारा अपने शरणागतों को उनके विरोधियों से बचाता है, अपनी अद्भुत करुणा दिखा।

१उन दुष्टों से जो मुझ पर अत्याचार करते हैं,

मेरे प्राण के शत्रुओं से जो मुझे घेरे हुए हैं। 10 उन्होंने अपने हृदयों को कठोर किया है;

उनके मुँह से घमण्ड की बातें निकलती हैं।

11 उन्होंने पग-पग पर मुझ को घेरा है;

वे मुझ को भूमि पुर पटक देने के लिये

घात लगाए हुए हैं।

12 वह उस सिंह के समान है जो अपने शिकार की लालसा करता है,

और जवान सिंह के समान घात लगाने के स्थानों में बैठा रहता है।

¹³ उठ, हे यहोवा!

उसका सामना कर और उसे पटक दे! अपनी तलवार के बल से मेरे प्राण को दुष्ट से बचा ले।

14 अपना हाथ बढ़ाकर हे यहोवा, मुझे मनुष्यों से बचा, अर्थात् सांसारिक मनुष्यों से जिनका भाग इसी जीवन में है,

और <u>?????? ??? ?? ????? ??????</u> ?? ????? ??!

वे बाल-बच्चों से सन्तुष्ट हैं; और शेष सम्पत्ति अपने बच्चों के लिये छोड़ जाते हैं।

15 परन्तु मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करूँगा
जब मैं जागूँगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट होऊँगा। (थ्रि. 4:6,7,
1 श्रीश्री. 3:2)

18

2222 222222222

प्रधान बजानेवाले के लिये। यहोवा के दास दाऊद का गीत, जिसके वचन उसने यहोवा के लिये उस समय गाया जब यहोवा ने उसको उसके सारे शत्रुओं के हाथ से, और शाऊल के हाथ से बचाया था, उसने कहा

1 हे यहोवा, हे मेरे बल, मैं तुझ से प्रेम करता हूँ।

² यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़ और मेरा छुड़ानेवाला है; मेरा परमेश्वर, मेरी चट्टान है, जिसका मैं शरणागत हूँ,

वह मेरी ढाल और मेरी उद्धार का सींग,

और मेरा ऊँचा गृढ़ है। (222222 2:13)

3मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है पुकारूँगा; इस प्रकार मैं अपने शत्रुओं से बचाया जाऊँगा।

और अधर्म की बाढ़ ने मुझ को भयभीत कर दिया; (22. 116:3)

5 अधोलोक की रस्सियाँ मेरे चारों ओर थीं,

और मृत्यु के फंदे मुझ पर आए थे।

6 अपने संकट में मैंने यहोवा परमेश्वर को पुकारा;

मैंने अपने परमेश्वर की दुहाई दी।

और उसने 2222 222222 में से मेरी वाणी सुनी। और मेरी दुहाई उसके पास पहुँचकर उसके कानों में पड़ी। ⁷तब पृथ्वी हिल गई, और काँप उठी और पहाड़ों की नींव कँपित होकर हिल गई क्योंकि वह अति क्रोधित हुआ था। 8 उसके नथनों से धुआँ निकला, और उसके मुँह से आग निकलकर भस्म करने लगी; जिससे कोएले दहक उठे। 9वह स्वर्ग को नीचे झकाकर उतर आया; और उसके पाँवों तले घोर अंधकार था। 10 और वह करूब पर सवार होकर उड़ा, वरन पवन के पंखों पर सवारी करके वेग से उड़ा। 11 उसने अंधियारे को अपने छिपने का स्थान और अपने चारों ओर आकाश की काली घटाओं का मण्डप 12 उसके आगे बिजली से, ओले और अंगारे गिर पड़े। ¹³तब यहोवा आकाश में गरजा, परमप्रधान ने अपनी वाणी सुनाई और ओले और अंगारों को भेजा। 14 उसने अपने तीर चला-चलाकर शत्रुओं को तितर-बितर किया; वरन् बिजलियाँ गिरा गिराकर उनको परास्त किया। ¹⁵ तब जल के नाले देख पड़े, और जगत की नींव प्रगट हुई, यह तो ??????? ????? ????? ???*, और तेरे नथनों की साँस की झोंक से हुआ। ¹⁶ उसने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया, और गहरे जल में से खींच लिया।

^{ं 18:6 @@@@ @@@@@@:} स्वर्ग जहाँ उसका मन्दिर या निवास-स्थान माना जाता है। ः 18:15 @@@@@ @@@@ @@@@ @@@@ खखेः उसके क्रोध या अप्रसन्नता की अभिव्यक्ति से।

17 उसने मेरे बलवन्त शत्रु से, और उनसे जो मुझसे घृणा करते थे, मुझे छुड़ाया; क्योंकि वे अधिक सामर्थी थे। 18 मेरे संकट के दिन वे मेरे विरुद्ध आए परन्तु यहोवा मेरा आश्रय था। 19 और उसने मुझे निकालकर चौड़े स्थान में पहँचाया, उसने मुझ को छुड़ाया, क्योंकि वह मुझसे प्रसन्न था। 20 यहोवा ने मुझसे मेरी धार्मिकता के अनुसार व्यवहार किया; और मेरे हाथों की शुद्धता के अनुसार उसने मुझे बदला दिया। 21 क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता रहा, और दुष्टता के कारण अपने परमेश्वर से दूर न हुआ। 22 क्योंकि उसके सारे निर्णय मेरे सम्मुख बने रहे और मैंने उसकी विधियों को न त्यागा। ²³ और मैं उसके सम्मुख सिद्ध बना रहा, और अधर्म से अपने को बचाए रहा। 24 यहोवा ने मुझे मेरी धार्मिकता के अनुसार बदला दिया, और मेरे हाथों की उस शुद्धता के अनुसार जिसे वह देखता था। 25 विश्वासयोग्य के साथ तू अपने को विश्वासयोग्य दिखाता; और खरे पुरुष के साथ तू अपने को खरा दिखाता है। 26 शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता, और टेढ़े के साथ तू तिरछा बनता है। 27 क्योंकि तू दीन लोगों को तो बचाता है; परन्तु घमण्ड भरी आँखों को नीची करता है। 28 हाँ, तु ही मेरे दीपक को जलाता है; मेरा परमेश्वर यहोवा मेरे अंधियारे को उजियाला कर देता है। ²⁹ क्योंकि तेरी सहायता से मैं सेना पर धावा करता हँ;

और अपने परमेश्वर की सहायता से शहरपनाह को लाँघ जाता हाँ।

30 परमेश्वर का मार्ग सिद्ध है; यहोवा का वचन ताया हुआ है;

वह अपने सब शरणागतों की ढाल है।

31 यहोवा को छोड़ क्या कोई परमेश्वर है?

हमारे परमेश्वर को छोड़ क्या और कोई चट्टान है?

32 यह वही परमेशवर है, जो सामर्थ्य से मेरा कमरबन्ध बाँधता है,

और मेरे मार्ग को सिद्ध करता है।

33 वहीं मेरे पैरों को हिरनी के पैरों के समान बनाता है,

और मुझे ऊँचे स्थानों पर खड़ा करता है।

³⁴वह मेरे हाथों को युद्ध करना सिखाता है,

इसलिए मेरी बाहों से पीतल का धनुष झुक जाता है।

35 तूने मुझ को अपने बचाव की ढाल दी है,

तू अपने दाहिने हाथ से मुझे सम्भाले हुए है,

और तेरी नम्रता ने मुझे महान बनाया है।

और मेरे पैर नहीं फिसले।

³⁷ मैं अपने शत्रुओं का पीछा करके उन्हें पकड़ लूँगा;

और जब तक उनका अन्त न करूँ तब तक न लौटूँगा।

38 मैं उन्हें ऐसा बेधूँगा कि वे उठ न सकेंगे;

वे मेरे पाँवों के नीचे गिर जाएंगे।

39 क्योंकि तूने युद्ध के लिये मेरी कमर में

शक्ति का पटुका बाँधा है;

और मेरे विरोधियों को मेरे सम्मुख नीचा कर दिया।

 $oldsymbol{S}$ 18:36 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 (क मैं बिना रुकावट या बाधा के चल पाऊँ।

40 तूने मेरे शत्रुओं की पीठ मेरी ओर फेर दी; ताकि मैं उनको काट डालूँ जो मुझसे द्वेष रखते हैं। 41 उन्होंने दुहाई तो दी परन्तु उन्हें कोई बचानेवाला न मिला, उन्होंने यहोवा की भी दुहाई दी, परन्तु उसने भी उनको उत्तर न दिया। ⁴² तब मैंने उनको कूट कूटकर पवन से उड़ाई हई धूल के समान कर दिया; मैंने उनको मार्ग के कीचड़ के समान निकाल फेंका। 43 तूने मुझे प्रजा के झगड़ों से भी छुड़ाया; तुने मुझे अन्यजातियों का प्रधान बनाया है; जिन लोगों को मैं जानता भी न था वे मेरी सेवा करते है। 44 मेरा नाम सुनते ही वे मेरी आज्ञा का पालन करेंगे; परदेशी मेरे वश में हो जाएँगे। 45 परदेशी मुर्झा जाएँगे, और अपने किलों में से थरथराते हुए निकलेंगे। 46 यहोवा परमेश्वर जीवित है; मेरी चट्टान धन्य है; और मेरे मुक्तिदाता परमेश्वर की बड़ाई हो। 47 धन्य है मेरा पलटा लेनेवाला परमेश्वर! जिसने देश-देश के लोगों को मेरे वश में कर दिया है; ⁴⁸ और मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ाया है; तू मुझ को मेरे विरोधियों से ऊँचा करता, और उपद्रवी पुरुष से बचाता है। 49 इस कारण मैं जाति-जाति के सामने तेरा धन्यवाद करूँगा, और तेरे नाम का भजन गाऊँगा। 50 वह अपने ठहराए हुए राजा को महान विजय देता है, वह अपने अभिषिक्त दाऊद पर और उसके वंश पर युगानुयुग करुणा करता रहेगा।

19

और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट करता है। 2 दिन से दिन बातें करता है,

और रात को रात ज्ञान सिखाती है।

3न तो कोई बोली है और न कोई भाषा;

जहाँ उनका शब्द सुनाई नहीं देता है।

4 फिर भी उनका स्वर सारी पृथ्वी पर गूँज गया है,

और उनका वचन जगत की छोर तक पहुँच गया है।

उनमें उसने सूर्य के लिये एक मण्डप खड़ा किया है,

⁶ वह आकाश की एक छोर से निकलता है, और वह उसकी दूसरी छोर तक चक्कर मारता है;

और उसकी गर्मी से कोई नहीं बच पाता।

⁷ यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं,

बुद्धिहीन लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं;

8 <u>शिशिशिशि शिश शिशिशिश</u> सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं; यहोवा की आज़ा निर्मल है, वह आँखों में

ज्योति ले आती है;

⁹ यहोवा का भय पवित्र है, वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता है;

यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं। 10 वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं; वे मधु से और छत्ते से टपकनेवाले मधु से भी बढ़कर मधुर हैं। 11 उन्हीं से तेरा दास चिताया जाता है; उनके पालन करने से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है। (2 119:11)

14 हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करनेवाले, मेरे मुँह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहणयोग्य हों।

20

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन ¹ संकट के दिन यहोवा तेरी सुन ले! याकूब के परमेश्वर का नाम तुझे ऊँचे स्थान पर नियुक्त करे! ² वह पवित्रस्थान से तेरी सहायता करे, और सिय्योन से तुझे सम्भाल ले! ³ वह तेरे सब भेंटों को स्मरण करे, और तेरे होमबलि को ग्रहण करे।

(सेला)

 $[\]ddagger$ 19:13 2/2/2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2: अर्थात् वह उस अपराध से मुक्त रहेगा जो उसके गुप्त पापों के शोधन बिना विद्यमान रहता है।

4 वह तेरे मन की इच्छा को पूरी करे, और तेरी सारी युक्ति को सफल करे! 5 तब हम तेरे उद्धार के कारण ऊँचे स्वर से हर्षित होकर गाएँगे, और अपने परमेश्वर के नाम से झण्डे खड़े करेंगे। यहोवा तेरे सारे निवेदन स्वीकार करे। (2021: 60:4) 6 अब मैं जान गया कि 2021:2021: 2021:2021:2021:2021:4 को बचाएगा; वह अपने पवित्र स्वर्ग से,

वह अपन पावत्र स्वग स, अपने दाहिने हाथ के उद्धार के सामर्थ्य से, उसको उत्तर देगा। ⁷ किसी को रथों पर, और किसी को घोड़ों पर भरोसा है, परन्तु हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही का नाम लेंगे। (22). 33:16,17)

21

तू अपने सम्मुख उसको हर्ष और आनन्द से भर देता है। 7 क्योंकि राजा का भरोसा यहोवा के ऊपर है; और परमप्रधान की करुणा से 22 222 2222 2222 2221 2211 ⁸ तेरा हाथ तेरे सब शत्रुओं को ढूँढ़ निकालेगा, तेरा दाहिना हाथ तेरे सब बैरियों का पता लगा लेगा। ⁹त् अपने मुख के सम्मुख उन्हें जलते हुए भट्टे के समान जलाएगा। यहोवा अपने ऋोध में उन्हें निगल जाएगा, और आग उनको भस्म कर डालेगी। ¹⁰ तू उनके फलों को पृथ्वी पर से, और उनके वंश को मनुष्यों में से नष्ट करेगा। ¹¹ क्योंकि उन्होंने तेरी हानि ठानी है, उन्होंने ऐसी युक्ति निकाली है जिसे वे पूरी न कर सकेंगे। ¹² क्योंकि तू अपना धनुष उनके विरुद्ध चढ़ाएगा, और वे पीठ दिखाकर भागेंगे। ¹³ हे यहोवा, अपनी सामर्थ्य में महान हो;

^{* 21:6} 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 कि उसने उसे मनुष्यों के लिए या संसार के लिए आशीष का कारण बनाया था। उसे मनुष्यों के लिए आशीष का स्रोत बनाया है। $\dot{}$ 1:7 2/2 2/2/2/2 2

और हम गा गाकर तेरे पराक्रम का भजन सुनाएँगे।

22

प्रधान बजानेवाले के लिये अभ्येलेरशर राग में दाऊद का भजन है मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर,

तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?

तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने से

क्यों दूर रहता है? मेरा उद्धार कहाँ है?

2 हे मेरे परमेश्वर, मैं दिन को पुकारता हूँ

परन्तु तू उत्तर नहीं देता;

और रात को भी मैं चुप नहीं रहता।

3 परन्तु तू जो इस्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है,

तू तो पवित्र है।

4 हमारे पुरखा तुझी पर भरोसा रखते थे;

वे भरोसा रखते थे,

और तू उन्हें छुड़ाता था।

5 उन्होंने तेरी दुहाई दी और तूने उनको छुड़ाया

वे तुझी पर भरोसा रखते थे

और कभी लज्जित न हुए।

6 परन्तु मैं तो कीड़ा हँ, मनुष्य नहीं;

मनुष्यों में मेरी नामधराई है,

और लोगों में मेरा अपमान होता है।

⁷वह सब जो मुझे देखते हैं मेरा ठट्टा करते हैं,

और होंठ बिचकाते

और यह कहते हुए सिर हिलाते हैं, (???????? 27:39, ???.

15:29)

⁸वे कहते है "वह यहोवा पर भरोसा करता है, यहोवा उसको छुड़ाए, वह उसको उबारे क्योंकि वह उससे प्रसन्न है।" (2. 91:14) जब मैं दूध पीता बच्चा था, तब ही से तुने मुझे भरोसा रखना सिखाया। 10 मैं जन्मते ही तुझी पर छोड़ दिया गया, माता के गर्भ ही से तु मेरा परमेश्वर है। 11 मुझसे दूर न हो क्योंकि संकट निकट है, और कोई सहायक नहीं। ¹² बहुत से सांडों ने मुझे घेर लिया है, बाशान के बलवन्त साँड़ मेरे चारों ओर मुझे घेरे हुए है। 13 वे फाड़ने और गरजनेवाले सिंह के समान मुझ पर अपना मुँह पसारे हुए है। 14 ???? ??? ??? ????? ??? ??? ???; और मेरी सब हड्डियों के जोड़ उखड़ गए: मेरा हृदय मोम हो गया. वह मेरी देह के भीतर पिघल गया। ¹⁵ मेरा बल टूट गया, मैं ठीकरा हो गया; और मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक गई; और तू मुझे मारकर मिट्टी में मिला देता है। (??????. 17:22) ¹⁶ क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेर लिया है; कुकर्मियों की मण्डली मेरे चारों ओर मुझे घेरे हए है; *15:29, ????? 23:33)*

17 मैं अपनी सब हड्डियाँ गिन सकता हूँ;

वे मुझे देखते और निहारते हैं; 18 वे मेरे वस्त्र आपस में बाँटते हैं, 23:34. ????. 19:24,25) ¹⁹ परन्तु हे यहोवा तू दूर न रह! हे मेरे सहायक, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर! 20 मेरे प्राण को तलवार से बचा. मेरे प्राण को कुत्ते के पंजे से बचा ले! 21 मुझे सिंह के मुँह से बचा, जंगली साँड़ के सींगों से तू मुझे बचा। 22 मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का प्रचार करूँगा; सभा के बीच तेरी प्रशंसा करूँगा। (???????. 2:12) 23 हे यहोवा के डरवैयों, उसकी स्तुति करो! हे याकूब के वंश, तुम सब उसकी महिमा करो! हे इस्राएल के वंश, तुम उसका भय मानो! (💯. 135:19,20) 24 क्योंकि उसने दुःखी को तुच्छ नहीं जाना और न उससे घृणा करता है, यहोवा ने उससे अपना मुख नहीं छिपाया; पर जब उसने उसकी दुहाई दी, तब उसकी सुन ली। ²⁵ बड़ी सभा में मेरा स्तुति करना तेरी ही ओर से होता है; मैं अपनी मन्नतों को उसके भय रखनेवालों के सामने पूरा करूँगा। ²⁶ नम्र लोग भोजन करके तृप्त होंगे; जो यहोवा के खोजी हैं, वे उसकी स्तृति करेंगे। तुम्हारे प्राण सर्वदा जीवित रहें! 27 पृथ्वी के सब दूर-दूर देशों के लोग उसको स्मरण करेंगे और उसकी ओर फिरेंगे: और जाति-जाति के सब कुल तेरे सामने दण्डवत् करेंगे। 28 क्योंकि राज्य यहोवा ही का है,

और सब जातियों पर वही प्रभुता करता है। (22. 14:9)

29 पृथ्वी के सब हष्ट-पुष्ट लोग भोजन करके दण्डवत् करेंगे; वे सब जो मिट्टी में मिल जाते हैं और अपना-अपना प्राण नहीं बचा सकते, वे सब उसी के सामने घुटने टेकेंगे। 30 एक वंश उसकी सेवा करेगा; दूसरी पीढ़ी से प्रभु का वर्णन किया जाएगा। 31 वे आएँगे और उसके धार्मिकता के कामों को एक वंश पर जो उत्पन्न होगा यह कहकर प्रगट करेंगे कि उसने ऐसे-ऐसे अद्भुत काम किए।

23

श्रीशृशिशिश श्रीशृश्य श्री में बैठाता है; वह मुझे हरी-हरी चराइयों में बैठाता है; वह मुझे श्रीशृश्योश्रीशृश्रीशृश्रीशृश्रीशृश्योश्रीशृश्यीशृश्य शृश्यीशृश्य शृश्य शृ

तूने मेरे सिर पर तेल मला है,

मेरा कटोरा उमड़ रहा है।

6 निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ-साथ बनी रहेंगी;

और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूँगा।

24

दाऊद का भजन

1 पृथ्वी और जो कुछ उसमें है यहोवा ही का है;

जगत और उसमें निवास करनेवाले भी।

2 क्यों कि <u>2020</u> <u>202000</u> <u>2020</u> <u>2020</u> <u>2020</u> <u>2020</u> <u>2020</u> <u>2020</u> <u>2020</u> <u>2020</u> <u>20</u>

और महानदों के ऊपर स्थिर किया है।

3 यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है?

और उसके पवित्रस्थान में कौन खड़ा हो सकता है?

4 <u>??????? ???? ???????</u> और हृदय शुद्ध है,

जिसने अपने मन को व्यर्थ बात की ओर नहीं लगाया,

और न कपट से शपथ खाई है।

5 वह यहोवा की ओर से आशीष पाएगा,

और अपने उद्धार करनेवाले परमेश्वर की

ओर से धर्मी ठहरेगा।

6 ऐसे ही लोग उसके खोजी है,

वे तेरे दर्शन के खोजी याकूबवंशी हैं।

(सेला)

⁷हे फाटकों, अपने सिर ऊँचे करो!

^{* 24:2} 2/2/2 2/2 2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2

हे सनातन के द्वारों, ऊँचे हो जाओ! क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा। 8 वह प्रतापी राजा कौन है? यहोवा जो सामर्थी और पराक्रमी है, परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है! 9 हे फाटकों, अपने सिर ऊँचे करो हे सनातन के द्वारों तुम भी खुल जाओ! क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा! 10 वह प्रतापी राजा कौन है? सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है।

(सेला)

25

दाऊद का भजन 1 हे यहोवा, मैं अपने मन को तेरी ओर उठाता है। 2 हे मेरे परमेश्वर, मैंने तुझी पर भरोसा रखा है, मुझे लज्जित होने न दे; मेरे शत्रु मुझ पर जयजयकार करने न पाएँ। 3 वरन जितने तेरी बाट जोहते हैं उनमें से कोई लज्जित न होगा; परन्तु जो अकारण विश्वासघाती हैं वे ही लज्जित होंगे। 4 हे यहोवा, अपने मार्ग मुझ को दिखा; अपना पथ मुझे बता दे। 5 मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे, क्योंकि तू मेरा उद्धार करनेवाला परमेश्वर है; मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता रहता हूँ। 6 हे यहोवा, अपनी दया और करुणा के कामों को स्मरण कर; अपनी करुणा ही के अनुसार तू मुझे स्मरण कर।

8 यहोवा भला और सीधा है;

इसलिए वह पापियों को अपना मार्ग दिखलाएगा।

9 वह नम्र लोगों को न्याय की शिक्षा देगा,

हाँ, वह नम्र लोगों को अपना मार्ग दिखलाएगा।

10 जो यहोवा की वाचा और चितौनियों को मानते हैं,

उनके लिये उसके सब मार्ग करुणा और सच्चाई हैं। (?????. 1:17)

11 हे यहोवा, अपने नाम के निमित्त मेरे अधर्म को जो बहुत हैं क्षमा कर।

12 वह कौन है जो यहोवा का भय मानता है?

प्रभु उसको उसी मार्ग पर जिससे वह

प्रसन्न होता है चलाएगा।

13 वह कुशल से टिका रहेगा,

और उसका वंश पृथ्वी पर अधिकारी होगा।

14 यहोवा के भेद को वही जानते हैं जो उससे डरते हैं,

और वह अपनी वाचा उन पर प्रगट करेगा। (222. 1:9, 222. 1:18)

15 मेरी आँखें सदैव यहोवा पर टकटकी लगाए रहती हैं,

¹⁶ हे यहोवा, मेरी ओर फिरकर मुझ पर दया कर;

26

5 मैं कुकर्मियों की संगति से घृणा रखता हँ, और दुष्टों के संग न बैठूँगा। *[?][?][?][?][?*]†; तब हे यहोवा मैं तेरी वेदी की प्रदक्षिणा करूँगा. (???. 73:13) 7ताकि तेरा धन्यवाद ऊँचे शब्द से करूँ, और तेरे सब आश्चर्यकर्मों का वर्णन करूँ। 8 हे यहोवा, मैं तेरे धाम से तेरी महिमा के निवास-स्थान से प्रीति रखता है। 9 मेरे प्राण को पापियों के साथ. और २१२१२ २१२१२ २१ २१२१२१२१२ २१ २१२१२ १ १ ¹⁰ वे तो ओछापन करने में लगे रहते हैं, और उनका दाहिना हाथ घूस से भरा रहता है। 11 परन्तु मैं तो खराई से चलता रहँगा। तू मुझे छुड़ा ले, और मुझ पर दया कर। 12 मेरे पाँव चौरस स्थान में स्थिर है;

27

दाऊद का भजन

1 यहोवा मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है;

2020 2020 2020 2020 2020 2020 यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है,

सभाओं में मैं यहोवा को धन्य कहा करूँगा।

मैं किसका भय खाऊँ?
2 जब कुकर्मियों ने जो मुझे सताते और मुझी से
बैर रखते थे,
मुझे खा डालने के लिये मुझ पर चढ़ाई की,
तब वे ही ठोकर खाकर गिर पड़े।
3 चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले,
तो भी मैं न डरूँगा; चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई ठन जाए,
उस दशा में भी मैं हियाव बाँधे निश्चित रहूँगा।
4 एक वर मैंने यहोवा से माँगा है,
उसी के यत्न में लगा रहूँगा;
कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊँ,
जिससे यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूँ,
और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूँ। (20. 6:8, 20. 23:6,
20. 23:13)

5 क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेगा; अपने तम्बू के गुप्त स्थान में वह मुझे छिपा लेगा, और चट्टान पर चढ़ाएगा। (20. 91:1, 20. 40:2, 20. 138:7)

और मैं गाऊँगा और यहोवा के लिए गीत गाऊँगा। (22. 3:3) है यहोवा, मेरा शब्द सुन, मैं पुकारता हूँ,

तू मुझ पर दया कर और मुझे उत्तर दे। (???. 130:2-4, ???. 13:3)

8तूने कहा है, "मेरे दर्शन के खोजी हो।"

^{ं 27:6} २२२२ २२२२ २२२ २२२ १२२२२ १२२ १२२२२ १२२२ १२२२ १२२२ १२२२ १२२२ १२२२ १२२२ १२२२ १२२२ १२२२ १२२२ १२२२ १२२२ १२२२

इसलिए मेरा मन तुझ से कहता है,
"हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूँगा।"

9 अपना मुख मुझसे न छिपा।
अपने दास को कोध करके न हटा,
तू मेरा सहायक बना है।
हे मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर मुझे त्याग न दे, और मुझे छोड़
न दे!

10 मेरे माता-पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है,
परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा।

11 हे यहोवा, अपना मार्ग मुझे सिखा,
और मेरे द्रोहियों के कारण मुझ को चौरस रास्ते पर ले चल। (20.5:8)

28

<u>शिशिशिश शिशिशिशिशिश</u> दाऊद का भजन ¹हे यहोवा, मैं तुझी को पुकारूँगा; हे मेरी चट्टान, मेरी पुकार अनसुनी न कर,

ऐसा न हो कि तेरे चुप रहने से

[‡] **27:12** @@@@@@ @@@@ @@@ @@@ @@@ वे हिंसा या निर्दयता के व्यवहार पर मन लगाते हैं।

मैं कब्र में पड़े हओं के समान हो जाऊँ 🛭 🗗 🗥 🗥 🗥 🗥 *?????? ????** ı 2 जब मैं तेरी दुहाई दूँ, और तेरे पवित्रस्थान की भीतरी कोठरी की ओर अपने हाथ उठाऊँ, तब मेरी गिड़गिड़ाहट की बात सुन ले। 3 उन दुष्टों और अनर्थकारियों के संग मुझे न घसीट; जो अपने पड़ोसियों से बातें तो मेल की बोलते हैं. परन्तु हृदय में बुराई रखते हैं। 4 उनके कामों के और उनकी करनी की बुराई के अनुसार उनसे बर्ताव कर, उनके हाथों के काम के अनुसार उन्हें बदला दे; 18:6,13, ???????. 22:12) 5 क्योंकि वे यहोवा के कामों को और उसके हाथ के कामों को नहीं समझते, इसलिए वह उन्हें पछाड़ेगा और 21212 2 21212121211 । ⁶ यहोवा धन्य है: क्योंकि उसने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुना है। 7 यहोवा मेरा बल और मेरी ढाल है; उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहायता मिली है; इसलिए मेरा हृदय प्रफुल्लित है; और मैं गीत गाक्र उसका धन्यवाद् करूँगा। 8 यहोवा अपने लोगों की सामर्थ्य है, वह अपने अभिषिक्त के लिये उद्धार का दृढ़ गढ़ है।

⁹हे यहोवा अपनी प्रजा का उद्धार कर, और अपने निज भाग के लोगों को आशीष दे;

^{* 28:1 @2 @2@@@ @2@ @2@ @2@@ @2@@:} मृतकों के सदृश्य तनाव और निराशा से ग्रस्त होकर मर जाऊँ। ं 28:5 @@@ @ @2@@2@@: परमेश्वर उन पर अनुग्रह नहीं करेगा, वह उन्हें समद्धि प्रदान नहीं करेगा।

और उनकी चरवाही कर और सदैव उन्हें सम्भाले रह।

29

¹हे परमेश्वर के पुत्रों, यहोवा का, हाँ, यहोवा ही का गुणानुवाद करो, यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को सराहो। 2 यहोवा के नाम की महिमा करो; पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो। 3 यहोवा की वाणी मेघों के ऊपर सुनाई देती है; प्रतापी परमेश्वर गरजता है, यहोवा घने मेघों के ऊपर रहता है। (????????. 37:4,5) 4 यहोवा की वाणी शक्तिशाली है, यहोवा की वाणी प्रतापमय है। 5 यहोवा की वाणी देवदारों को तोड़ डालती है; यहोवा लबानोन के देवदारों को भी तोड़ डालता है। 6 वह लबानोन को बछड़े के समान और सिर्योन को साँड़ के समान उछालता है। ⁷यहोवा की वाणी आग की लपटों को चीरती है। 8 यहोवा की वाणी वन को हिला देती है, यहोवा कादेश के वन को भी कँपाता है। 9 यहोवा की वाणी से हिरनियों का गर्भपात हो जाता है। और जंगल में पतझड़ होता है; और उसके मन्दिर में सब कोई "महिमा ही महिमा" बोलते रहते है। ¹⁰ जल-प्रलय के समय यहोवा विराजमान था; और यहोवा सर्वदा के लिये राजा होकर विराजमान रहता है। ¹¹ यहोवा अपनी प्रजा को बल देगा;

30

भवन की प्रतिष्ठा के लिये दाऊद का भजन 1 हे यहोवा, मैं तुझे सराहँगा क्योंकि तूने मझे खींचकर निकाला है, और मेरे शत्रुओं को मुझ पर आनन्द करने नहीं दिया। 2 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैंने तेरी दुहाई दी और तूने मुझे चंगा किया है। 3 हे यहोवा, तूने मेरा प्राण अधोलोक में से निकाला है, 4तम जो विश्वासयोग्य हो! यहोवा की स्तुति करो, और जिस पवित्र नाम से उसका स्मरण होता है, उसका धन्यवाद करो। 5 क्योंकि उसका ऋोध, तो क्षण भर का होता है, कदाचित् रात को रोना पड़े, परन्तु सवेरे आनन्द पहुँचेगा। 6 मैंने तो अपने चैन के समय कहा था, कि मैं कभी नहीं टलने का। 7हे यहोवा, अपनी प्रसन्नता से तुने मेरे पहाड़ को दृढ़

और स्थिर किया था; जब तुने अपना मुख फेर लिया तब मैं घबरा गया। 8 हे यहोवा, मैंने तुझी को पुकारा; और प्रभु से गिड़गिड़ाकर यह विनती की, कि 9 जब मैं कब्र में चला जाऊँगा तब मेरी मृत्यु से क्या लाभ होगा? क्या मिट्टी तेरा धन्यवाद कर सकती है? क्या वह तेरी विश्वसनीयता का प्रचार कर सकती है? 10 हे यहोवा, सुन, मुझ पर दया कर; हे यहोवा, तू मेरा सहायक हो। ¹¹तूने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला; 12 ताकि मेरा मन तेरा भजन गाता रहे और कभी चुप न हो। हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं सर्वदा तेरा धन्यवाद करता रहँगा।

31

3 क्योंकि तु मेरे लिये चट्टान और मेरा गढ़ है; इसलिए अपने नाम के निमित्त मेरी अगुआई कर, और मुझे आगे ले चल। ⁴ जो जाल उन्होंने मेरे लिये बिछाया है उससे तू मुझ को छुड़ा ले, क्योंकि तू ही मेरा दृढ़ गढ़ है। 5 मैं अपनी आत्मा को तेरे ही हाथ में सौंप देता हँ; हे यहोवा, हे विश्वासयोग्य परमेश्वर, तूने मुझे मोल लेकर मुक्त किया है। (?????? 23:46, ?????????. 7:59. 1 77. 4:19) 6 जो व्यर्थ मृर्तियों पर मन लगाते हैं, उनसे मैं घृणा करता हँ; परन्तु मेरा भरोसा यहोवा ही पर है। (21.24.4) 7मैं तेरी करुणा से मगन और आनन्दित हुँ, क्योंकि तुने मेरे दु:ख पर दृष्टि की है, मेरे कष्ट के समय तूने मेरी सुधि ली है, 8 और तूने मुझे शत्रु के हाथ में पड़ने नहीं दिया; तूने मेरे पाँवों को चौड़े स्थान में खड़ा किया है। 9 हे यहोवा, मुझ पर दया कर क्योंकि मैं संकट में हुँ; मेरी आँखें वरन् मेरा प्राण और शरीर सब शोक के मारे घुले जाते हैं। 10 मेरा जीवन शोक के मारे और मेरी आयु कराहते-कराहते घट चली है; मेरा बल मेरे अधर्म के कारण जाता रहा, ओर मेरी हड्डियाँ घुल गई। 11 अपने सब विरोधियों के कारण मेरे पड़ोसियों में मेरी नामधराई हुई है, अपने जान-पहचानवालों के लिये डर का कारण हँ;

जो मुझ को सड़क पर देखते है वह मुझसे दूर भाग जाते हैं।

12 मैं मृतक के समान लोगों के मन से बिसर गया;

मैं टूटे बर्तन के समान हो गया हाँ।

13 मैंने बहुतों के मुँह से अपनी निन्दा सुनी,

चारों ओर भय ही भय है!

जब उन्होंने मेरे विरुद्ध आपस में सम्मति की

तब मेरे प्राण लेने की युक्ति की।

14 परन्तु हे यहोवा, मैंने तो तुझी पर भरोसा रखा है,

मैंने कहा, "तू मेरा परमेश्वर है।"

15 मेरे दिन तेरे हाथ में है;

तू मुझे मेरे शत्रुओं

और मेरे सतानेवालों के हाथ से छुड़ा।

16 अपने दास पर अपने मुँह का प्रकाश चमका;

अपनी करुणा से मेरा उद्धार कर।

17 हे यहोवा, मुझे लज्जित न होने दे

क्योंकि मैंने तुझको पुकारा है;

दुष्ट लज्जित हों

और वे पाताल में चुपचाप पड़े रहें।

18 जो अहंकार और अपमान से धर्मी की निन्दा करते हैं,

उनके झूठ बोलनेवाले मुँह बन्द किए जाएँ। (2.2. 94:4, 2.2.

120:2)

19 आहा, तेरी भलाई क्या ही बड़ी है जो तूने अपने डरवैयों के लिये रख छोड़ी है, और अपने शरणागतों के लिये मनुष्यों के सामने प्रगट भी की है।

²⁰ त उन्हें *?????? ?????? ?????? ????? ????** मनुष्यों बुरी गोष्ठीं से गुप्त रखेगा; त् उनको अपने मण्डप में झगड़े-रगड़े से छिपा रखेगा। 21 यहोवा धन्य है. क्योंकि उसने मुझे गढ़वाले नगर में रखकर मुझ पर अद्भुत करुणा की है। 22 मैंने तो घबराकर कहा था कि मैं यहोवा की दृष्टि से दूर हो गया। तो भी जब मैंने तेरी दुहाई दी, तब तूने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुन लिया। 23 हे यहोवा के सब भक्तों, उससे प्रेम रखो! यहोवा विश्वासयोग्य लोगों की तो रक्षा करता है, परन्त ??? ??????? ????? ???†, 2222 22 222 2222 2222 22 1 (22. 97:10) 24 हे यहोवा पर आशा रखनेवालों, हियाव बाँधो और तुम्हारे हृदय दृढ़ रहें! (1 2020 16:13)

32

दाऊद का भजन मश्कील ¹ क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और *शिशिशिश शिशिश शिशिशिश थिय शिशिशि. 4:7)*

² क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले, और जिसकी आत्मा में कपट न हो। (22. 4:8) ³ जब मैं चुप रहा तब दिन भर कराहते-कराहते मेरी हिंडुयाँ पिघल गई। ⁴ क्योंकि रात-दिन मैं तेरे हाथ के नीचे दबा रहा; और मेरी तरावट धूपकाल की सी झुर्राहट बनती गई।

(सेला)

⁵ जब मैंने अपना पाप तुझ पर प्रगट किया और अपना अधर्म न छिपाया, और कहा, "मैं यहोवा के सामने अपने अपराधों को मान लूँगा;" तब तूने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया।

(सेला)

(1 222. 1:9)

(सेला)

8मैं तुझे बुद्धि दूँगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उसमें तेरी अगुआई करूँगा; मैं तुझ पर कृपादृष्टि रखूँगा

और सम्मति दिया करूँगा।

⁹तुम घोड़े और खच्चर के समान न बनो जो समझ नहीं रखते,
उनकी उमंग लगाम और रास से रोकनी पड़ती है,
नहीं तो वे तेरे वश में नहीं आने के।

¹⁰ दुष्ट को तो बहुत पीड़ा होगी;
परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है
वह करुणा से घिरा रहेगा।

¹¹ हे धर्मियों यहोवा के कारण आनन्दित
और मगन हो, और हे सब सीधे मनवालों
आनन्द से जयजयकार करो!

33

^{* 33:4} 2020202022 20202022 2022 20222 2022 2022 2022 2023 परमेश्वर की आज्ञा विधान प्रतिज्ञाएँ। वह जो भी कहता है सही वरन् सत्य है।

वह गहरे सागर को अपने भण्डार में रखता है। 8 सारी पथ्वी के लोग यहोवा से डरें. जगत के सब निवासी उसका भय मानें! ⁹ क्योंकि जब उसने कहा, तब हो गया; जब उसने आज्ञा दी. तब वास्तव में वैसा ही हो गया। ¹⁰ यहोवा जाति-जाति की युक्ति को व्यर्थ कर देता है; वह देश-देश के लोगों की कल्पनाओं को निष्फल करता है। 11 यहोवा की योजना सर्वदा स्थिर रहेगी, उसके मन की कल्पनाएँ पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेंगी। 12 क्या ही धन्य है वह जाति जिसका परमेश्वर यहोवा है, और वह समाज जिसे उसने अपना निज भाग होने के लिये चुन लिया हो! 13 यहोवा स्वर्ग से दृष्टि करता है, वह सब मनुष्यों को निहारता है; 14 अपने निवास के स्थान से वह पृथ्वी के सब रहनेवालों को देखता है, 15 वही जो उन सभी के हृदयों को गढ़ता, और उनके सब कामों का विचार करता है। ¹⁶ कोई ऐसा राजा नहीं, जो सेना की बहतायत के कारण बच सके; वीर अपनी बड़ी शक्ति के कारण छुट नहीं जाता।

34

दाऊद का भजन जब वह अबीमेलेक के सामने बौरहा बना, और अबीमेलेक ने उसे निकाल दिया, और वह चला गया ¹मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूँगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी। ²मैं यहोवा पर घमण्ड करूँगा; नम्र लोग यह सुनकर आनन्दित होंगे। ³मेरे साथ यहोवा की बड़ाई करो, और आओ हम मिलकर उसके नाम की स्तुति करें; ⁴मैं यहोवा के पास गया, तब उसने मेरी सुन ली, और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया।

^{‡ 33:19 @@ @@@@ @@ @@@ @@@@ @@@@@ @@@@:} कमी के समय जब फसल न हो तब वह उनके लिए प्रबन्ध करे।

⁵ जिन्होंने उसकी ओर दृष्टि की, उन्होंने ज्योति पाई; और उनका मुँह कभी काला न होने पाया। ⁶ इस दीन जन ने पुकारा तब यहोवा ने सुन लिया, और उसको उसके सब कष्टों से छुड़ा लिया। ⁷ यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उनको बचाता है। (शाशाशाः). 1:14, शाशाः

⁸ <u>शशश शशश</u> केसा भला है!

क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो उसकी शरण लेता है। (1 212). 2:3)

⁹हे यहोवा के पवित्र लोगों, उसका भय मानो, क्यों कि उसके डरवैयों को किसी बात की घटी नहीं होती! ¹⁰ जवान सिंहों को तो घटी होती और वे भूखे भी रह जाते हैं; परन्तु यहोवा के खोजियों को किसी भली वस्तु की घटी न होगी। ¹¹हे बच्चों, आओ मेरी सुनो, मैं तुम को यहोवा का भय मानना सिखाऊँगा। ¹² वह कौन मनुष्य है जो जीवन की इच्छा रखता, और दीर्घायु चाहता है ताकि भलाई देखे? ¹³ अपनी जीभ को बुराई से रोक रख, और अपने मुँह की चौकसी कर कि उससे छल की बात न निकले। (शाशाशा 1:26) ¹⁴ बुराई को छोड़ और भलाई कर; मेल को ढूँढ़ और उसी का पीछा कर। (शाशाशा 12:14)

^{* 34:8 @@@@ @@@@:} यह बात अन्यों से कही गई है जो भजनकार के अनुभव पर आधारित है। उसे परमेश्वर से सुरक्षा प्राप्त हुई थी, उसके पास परमेश्वर की भलाई का प्रमाण है।

15 यहोवा की आँखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान भी उनकी दुहाई की ओर लगे रहते हैं। (?????. 9:31) 16 यहोवा बुराई करनेवालों के विमुख रहता है, ताकि उनका स्मरण पृथ्वी पर से मिटा डाले। (1 💯. 3:10-12) 17 धर्मी दुहाई देते हैं और यहोवा सुनता है, और उनको सब विपत्तियों से छुड़ाता है। और पिसे हुओं का उद्धार करता है। 19 धर्मी पर बहुत सी विपत्तियाँ पड़ती तो हैं, परन्तु यहोवा उसको उन सबसे मुक्त करता है। (??????. 24:16, 2 ??????. 3:11) 20 वह उसकी हड़ी-हड़ी की रक्षा करता है; और उनमें से एक भी टूटने नहीं पाता। (????. 19:36) ²¹दुष्ट अपनी बुराई के द्वारा मारा जाएगा; और धर्मी के बैरी दोषी ठहरेंगे। 22 यहोवा अपने दासों का प्राण मोल लेकर बचा लेता है; और जितने उसके शरणागत हैं उनमें से कोई भी दोषी न ठहरेगा।

35

दाऊद का भजन 1 हे यहोवा, जो मेरे साथ मुकद्दमा लड़ते हैं, उनके साथ तू भी मुकद्दमा लड़; जो मुझसे युद्ध करते हैं, उनसे तू युद्ध कर। 2 ढाल और भाला लेकर मेरी सहायता करने को

[ं] 34:18 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 अर्थात् वह सुनने और सहायता करने को तत्पर रहता है।

खड़ा हो। 3 बर्छी को खींच और मेरा पीछा करनेवालों के सामने आकर उनको रोक; और मुझसे कह, कि मैं तेरा उद्घार हूँ। 4 जो मेरे प्राण के ग्राहक हैं वे लज्जित और निरादर हों! जो मेरी हानि की कल्पना करते हैं, वे पीछे हटाए जाएँ और उनका मुँह काला हो! 5 वे वायु से उड़ जानेवाली भूसी के समान हों, और यहोवा का दूत उन्हें हाँकता जाए! और यहोवा का दूत उनको खदेड़ता जाए। 7 क्योंकि अकारण उन्होंने मेरे लिये अपना जाल गट्टे में बिछाया; अकारण ही उन्होंने मेरा प्राण लेने के लिये गट्टा खोदा है। 8 अचानक उन पर विपत्ति आ पड़े! और जो जाल उन्होंने बिछाया है उसी में वे आप ही फँसे: और उसी विपत्ति में वे आप ही पड़ें! (200. 11:9,10, 1 **???????. 5:3)** 9 परन्तु मैं यहोवा के कारण अपने मन में मगन होऊँगा, मैं उसके किए हुए उद्धार से हर्षित होऊँगा। 10 मेरी हड़ी-हड़ी कहेंगी, "हे यहोवा, तेरे तुल्य कौन है,

जो दीन को बड़े-बड़े बलवन्तों से बचाता है, और लुटेरों से दीन दिरद्र लोगों की रक्षा करता है?" ¹¹ अधर्मी साक्षी खड़े होते हैं; वे मुझ पर झूठा आरोप लगाते हैं। ¹² वे मुझसे भलाई के बदले बुराई करते हैं, यहाँ तक कि मेरा प्राण ऊब जाता है। ¹³ जब वे रोगी थे तब तो <u>शिशि शिशि शिशिश शिशिश</u>, और उपवास कर करके दुःख उठाता रहा; मुझे मेरी प्रार्थना का उत्तर नहीं मिला। (शिशाशिश, 30:25, शिशिश,

12:15)

14 मैं ऐसी भावना रखता था कि मानो वे मेरे संगी या भाई हैं; जैसा कोई माता के लिये विलाप करता हो, वैसा ही मैंने शोक का पहरावा पहने हुए सिर झुकाकर शोक किया। ¹⁵ परन्तु जब मैं लँगड़ाने लगा तब वे लोग आनन्दित होकर इकट्टे हुए, नीच लोग और जिन्हें मैं जानता भी न था वे मेरे विरुद्ध इकट्टे हुए; वे मुझे लगातार फाड़ते रहे; 16 आदर के बिना वे मुझे ताना मारते हैं; वे मुझ पर दाँत पीसते हैं। (22. 37:12) ¹⁷ हे प्रभु, तू कब तक देखता रहेगा? इस विपत्ति से, जिसमें उन्होंने मुझे डाला है मुझ को छुड़ा! जवान सिंहों से मेरे प्राण को बचा ले! ¹⁸ मैं बड़ी सभा में तेरा धन्यवाद करूँगा; बहुत लोगों के बीच मैं तेरी स्तुति करूँगा। 19 मेरे झुठ बोलनेवाले शत्रु मेरे विरुद्ध

^{ं 35:13 💯 💯 💯 💯 💯 💯 💯} थे थे किष्टों में उन्हें गहरी सहानुभूति दिखाई और अपमान एवं विलाप का प्रतीक धारण किया।

आनन्द न करने पाएँ, जो अकारण मेरे बैरी हैं, वे आपस में आँखों से इशारा न करने पाएँ। (थ्रीथ्री. 15:25, थ्रीथ्री. 69:4)

69:4) ²⁰ क्योंकि वे मेल की बातें नहीं बोलते, परन्तु देश में जो चुपचाप रहते हैं, उनके विरुद्ध छल की कल्पनाएँ करते हैं। 21 और उन्होंने मेरे विरुद्ध मुँह पसार के कहा; "आहा, आहा, हमने अपनी आँखों से देखा है!" 22 हे यहोवा, तूने तो देखा है; चुप न रह! हे प्रभु, मुझसे दूर न रह! 23 उठ, मेरे न्याय के लिये जाग, हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे प्रभु, मेरा मुकद्दमा निपटाने के लिये आ! 24 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, त् अपने धार्मिकता के अनुसार मेरा न्याय चुका; और उन्हें मेरे विरुद्ध आनन्द करने न दे! ²⁵ वे मन में न कहने पाएँ, "आहा! हमारी तो इच्छा पूरी हुई!" वे यह न कहें, "हम उसे निगल गए हैं।" 26 जो मेरी हानि से आनन्दित होते हैं उनके मुँह लज्जा के मारे एक साथ काले हों! वह लज्जा और अनादर से ढँप जाएँ! ²⁷ जो मेरे धर्म से प्रसन्न रहते हैं, वे जयजयकार और आनन्द करें,

और निरन्तर करते रहें, यहोवा की बड़ाई हो,

^{‡ 35:26 @@ @@@@ @@@@@@@@@@@@@@@@@@} जो मुझ पर अपना बड़प्पन दिखाते हैं, कि मुझे गिराकर, नाश करके वे मेरे विनाश के द्वारा ऊपर उठना चाहते हैं।

जो अपने दास के कुशल से प्रसन्न होता है! 28 तब मेरे मुँह से तेरे धर्म की चर्चा होगी, और दिन भर तेरी स्तुति निकलेगी।

36

 1 दुष्ट जन का अपराध उसके हृदय के भीतर कहता है; परमेश्वर का भय उसकी दृष्टि में नहीं है। (2.7. 3:18) 2 वह अपने अधर्म के प्रगट होने और घृणित ठहरने के विषय अपने मन में चिकनी चुपड़ी बातें विचारता है। 3 उसकी बातें अनर्थ और छल की हैं; उसने बुद्धि और भलाई के काम करने से हाथ उठाया है। <u> 4 77 7777 777777 77 77777</u> ?!?!?!?!? ?!? ?!?!?!? ?!?!?!? ?!?!^{*}; वह अपने कुमार्ग पर दृढ़ता से बना रहता है; बुराई से वह हाथ नहीं उठाता। 5 हे यहोवा, तेरी करुणा स्वर्ग में है, तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुँची है। 6 तेरा धर्म ऊँचे पर्वतों के समान है, तेरा न्याय अथाह सागर के समान हैं; हे यहोवा, तू मनुष्य और पशु दोनों की रक्षा करता है। 7 हे परमेश्वर, तेरी करुणा कैसी अनमोल है! मनुष्य तेरे पंखों के तले शरण लेते हैं।

^{* 36:4 @@ @@@@ @@@@@ @@ @@@@-@@@@ @@@@@ @@ @@@@@ @@@} जब वह सोने जाता है और उसे नींद नहीं आती तब वह अनर्थ की योजना बनाता है।

बल से मुझे भगाने पाए। 12 वहाँ अनर्थकारी गिर पड़े हैं;

वे ढकेल दिए गए, और फिर उठ न सकेंगे।

⁸वं तेरे भवन के भोजन की बहुतायत से तृप्त होंगे,
और तू अपनी सुख की नदी
में से उन्हें पिलाएगा।
⁹क्योंकि 2020 202 202 2020 2020 2021;
तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएँगे। (2020 4:10,14, 2020)
¹⁰ अपने जाननेवालों पर करुणा करता रह,
और अपने धर्म के काम सीधे मनवालों में करता रह!
¹¹ अहंकारी मुझ पर लात उठाने न पाए,
और न दुष्ट अपने हाथ के

37

[ं] **36:9** 2/2/2/2 2/2 2/2/2 2/2/2 2/2 2/2/2 2/2/2 सोता या स्रोत जहाँ से सम्पूर्ण जीवन प्रवाहित होता है। सब जीवित प्राणी उससे जीवन पाते हैं।

और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा। 6 और वह तेरा धर्म ज्योति के समान, और तेरा न्याय दोपहर के उजियाले के समान प्रगट करेगा। ⁷यहोवा के सामने चुपचाप रह, और धीरज से उसकी प्रतिक्षा कर; उस मनुष्य के कारण न कुढ़, जिसके काम सफल होते हैं, और वह बुरी युक्तियों को निकालता है! 8 क्रोध से परे रह, और जलजलाहट को छोड़ दे! मत कुढ़, उससे बुराई ही निकलेगी। 9 क्यों कि कुकर्मी लोग काट डाले जाएँगे; और जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वही पृथ्वी के अधिकारी होंगे। ¹⁰ थोड़े दिन के बीतने पर दुष्ट रहेगा ही नहीं; और तू उसके स्थान को भली भाँति देखने पर भी उसको न पाएगा। ¹¹ परन्तु नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे, और बड़ी शान्ति के कारण आनन्द मनाएँगे। (???????? 5:5) 12 दुष्ट धर्मी के विरुद्ध बुरी युक्ति निकालता है, और उस पर दाँत पीसता है; ¹³ परन्तु प्रभु उस पर हँसेगा, क्योंकि वह देखता है कि उसका दिन आनेवाला है। 14 दुष्ट लोग तलवार खींचे और धनुष चढ़ाए हुए हैं,

ताकि दीन दरिद्र को गिरा दें. और सीधी चाल चलनेवालों को वध करें। 15 उनकी तलवारों से उन्हीं के हृदय छिदेंगे, और उनके धनुष तोड़े जाएँगे। 16 धर्मी का थोड़ा सा धन दुष्टों के बहुत से धन से उत्तम है। ¹⁷ क्योंकि दुष्टों की भुजाएँ तो तोड़ी जाएँगी; परन्तु यहोवा धर्मियों को सम्भालता है। 18 यहोवा खरे लोगों की आयु की सुधि रखता है, और उनका भाग सदैव बना रहेगा। 19 विपत्ति के समय, वे लज्जित न होंगे, और अकाल के दिनों में वे तृप्त रहेंगे। ²⁰ दुष्ट लोग नाश हो जाएँगे; और यहोवा के शत्रु खेत की सुथरी घास के समान नाश होंगे, वे धुएँ के समान लुप्त हो जाएँगे। 21 दुष्ट ऋण लेता है, और भरता नहीं परन्तु धर्मी अनुग्रह करके दान देता है; 22 क्योंकि जो उससे आशीष पाते हैं वे तो पृथ्वी के अधिकारी होंगे, परन्तु जो उससे श्रापित होते हैं, वे नाश हो जाएँगे। और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है; 24 चाहे वह गिरे तो भी पड़ा न रह जाएगा,

क्योंकि यहोवा उसका हाथ थामे रहता है। 25 मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हुँ; परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ, और न उसके वंश को टुकड़े माँगते देखा है। 26 वह तो दिन भर अनुग्रह कर करके ऋण देता है, और उसके वंश पर आशीष फलती रहती है। 27 बुराई को छोड़ भलाई कर; और तू सर्वदा बना रहेगा। 28 क्योंकि यहोवा न्याय से प्रीति रखता; और अपने भक्तों को न तजेगा। उनकी तो रक्षा सदा होती है, परन्तु दुष्टों का वंश काट डाला जाएगा। 29 धर्मी लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे, और उसमें सदा बसे रहेंगे। 30 धर्मी अपने मुँह से बुद्धि की बातें करता, और न्याय का वचन कहता है। 31 उसके परमेश्वर की व्यवस्था उसके हृदय में बनी रहती है, उसके पैर नहीं फिसलते। 32 दुष्ट धर्मी की ताक में रहता है। और उसके मार डालने का यत्न करता है। 33 यहोवा उसको उसके हाथ में न छोड़ेगा, और जब उसका विचार किया जाए तब वह उसे दोषी न ठहराएगा। 34 यहोवा की बाट जोहता रह, और उसके मार्ग पर बना रह, और वह तुझे बढ़ाकर पृथ्वी का अधिकारी कर देगा; जब दुष्ट काट डाले जाएँगे, तब तू देखेगा।

35 मैंने दुष्ट को बड़ा पराऋमी और ऐसा फैलता हुए देखा, अपने निज भूमि में फैलता है। 36 परन्तु जब कोई उधर से गया तो देखा कि वह वहाँ है ही नहीं; और मैंने भी उसे ढूँढ़ा, परन्तु कहीं न पाया। (ति. 37:10) 37 खरे मनुष्य पर दृष्टि कर और धर्मी को देख, क्योंकि मेल से रहनेवाले पुरुष का अन्तफल अच्छा है। (????. 32:17) ³⁸ परन्तु अपराधी एक साथ सत्यानाश किए जाएँगे; दुष्टों का अन्तफल सर्वनाश है। 39 धर्मियों की मुक्ति यहोवा की ओर से होती है; संकट के समय वह उनका दृढ़ गढ़ है। 40 यहोवा उनकी सहायता करके उनको बचाता है; वह उनको दुष्टों से छुड़ाकर उनका उद्घार करता है, इसलिए कि उन्होंने उसमें अपनी शरण ली है।

38

यादगार के लिये दाऊद का भजन ¹हे यहोवा क्रोध में आकर मुझे झिड़क न दे, और न जलजलाहट में आकर मेरी ताड़ना कर!

2 क्यों कि तेरे तीर मुझ में लगे हैं, और मैं तेरे हाथ के नीचे दबा हाँ। 3 तेरे क्रोध के कारण मेरे शरीर में कुछ भी आरोग्यता नहीं; और मेरे पाप के कारण मेरी हड्डियों में कुछ भी चैन नहीं। 4 क्योंकि मेरे अधर्म के कामों में मेरा सिर डूब गया, और वे भारी बोझ के समान मेरे सहने से बाहर हो गए हैं। ⁵ मेरी मुर्खता के पाप के कारण *?????? ???? ???? ???* और उनसे दुर्गन्ध आती हैं। 6 मैं बहुत दुःखी हूँ और झुक गया हूँ; दिन भर मैं शोक का पहरावा पहने हए चलता फिरता हैं। ⁷ क्योंकि मेरी कमर में जलन है, और मेरे शरीर में आरोग्यता नहीं। 8 मैं निर्बल और बहुत ही चूर हो गया हुँ; मैं अपने मन की घबराहट से कराहता हुँ। 9 हे प्रभु मेरी सारी अभिलाषा तेरे सम्मुख है, और मेरा कराहना तुझ से छिपा नहीं। ¹⁰ मेरा हृदय धड़कता है, मेरा बल घटता जाता है: और मेरी आँखों की ज्योति भी मुझसे जाती रही। 11 मेरे मित्र और मेरे संगी

^{* 38:5 @@@@ @@@ @@@ @@:} अर्थात् वह पापों के कारण प्रताड़ित किया जा रहा था और उसकी मार के चिन्ह पर सुजन ही नहीं थी वरन् वे घाव बन गए थे।

मेरी विपत्ति में अलग हो गए, और मेरे कुटुम्बी भी दूर जा खड़े हुए। (212. 31:11, 21212) 23:49)

12 मेरे प्राण के ग्राहक मेरे लिये जाल बिछाते हैं, और मेरी हानि का यत्न करनेवाले दुष्टता की बातें बोलते, और दिन भर छल की युक्ति सोचते हैं। 13 परन्तु मैं बहरे के समान सुनता ही नहीं, और मैं गुँगे के समान मुँह नहीं खोलता। 14 वरन् मैं ऐसे मनुष्य के तुल्य हँ जो कुछ नहीं सुनता, और जिसके मुँह से विवाद की कोई बात नहीं निकलती। ¹⁵ परन्तु हे यहोवा, मैंने तुझ ही पर अपनी आशा लगाई है; हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, तृ ही उत्तर देगा। ¹⁶ क्योंकि मैंने कहा. "ऐसा न हो कि वे मुझ पर आनन्द करें; जब मेरा पाँव फिसल जाता है. तब मुझ पर अपनी बड़ाई मारते हैं।" 17 क्योंकि मैं तो अब गिरने ही पर हँ; और <u>2222 222 222222 2222 2222 2222</u> 1 18 इसलिए कि मैं तो अपने अधर्म को प्रगट करूँगा, और अपने पाप के कारण खेदित रहँगा। ¹⁹ परन्तु मेरे शत्रु अनगिनत हैं,

और मेरे बैरी बहुत हो गए हैं।

20 जो भलाई के बदले में बुराई करते हैं,
वह भी मेरे भलाई के पीछे चलने के
कारण मुझसे विरोध करते हैं।

21 हे यहोवा, मुझे छोड़ न दे!
हे मेरे परमेश्वर, मुझसे दूर न हो!

22 हे यहोवा, हे मेरे उद्धारकर्ता,
मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर!

39

^{* 39:3 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2 2/2 2/2/2} येथे: मेरा मन अधिकाधिक विचलित हो गया और मेरी भावनाएँ भी अधिकाधिक प्रबल हो गई। अपनी भावनाओं को दबाने का प्रयास किया तो वे अधिक प्रज्वलित हो गई।

जिससे मैं जान लूँ कि कैसा अनित्य हूँ! ⁵ देख, तूने मेरी आयु बालिश्त भर की रखी है, और मेरा जीवनकाल तेरी दृष्टि में कुछ है ही नहीं। सचमुच सब मनुष्य कैसे ही स्थिर क्यों न हों तो भी व्यर्थ ठहरे हैं।

(सेला)

6 सचमुच मनुष्य छाया सा चलता फिरता है; सचमुच वे व्यर्थ घबराते हैं; वह धन का संचय तो करता है परन्तु नहीं जानता कि उसे कौन लेगा! 7 "अब हे प्रभु, मैं किस बात की बाट जोहूँ? मेरी आशा तो तेरी ओर लगी है। 8 मुझे मेरे सब अपराधों के बन्धन से छुड़ा ले। मूर्ख मेरी निन्दा न करने पाए। ⁹ *21212 2121212 212 21212* और मुँह न खोला; क्योंकि यह काम तू ही ने किया है। 10 तुने जो विपत्ति मुझ पर डाली है उसे मुझसे दूर कर दे, क्योंकि मैं तो तेरे हाथ की मार से भस्म हुआ जाता हुँ। 11 जब तू मनुष्य को अधर्म के कारण डाँट-डपटकर ताड़ना देता है; तब तु उसकी सामर्थ्य को पतंगे के समान नाश करता है; सचमुच सब मनुष्य वृथाभिमान करते हैं। 12 "हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन, और मेरी दुहाई पर कान लगा; मेरा रोना सुनकर शान्त न रह!

^{ं 39:9 2/2/2 2/2/2/2/2 2/2 2/2/2:} उसने शिकायत करने के लिए मुँह नहीं खोला; उसने नहीं कहा कि परमेश्वर ने उस पर निर्दयता दिखाई या अन्याय किया।

13 आह! इससे पहले कि मैं यहाँ से चला जाऊँ और न रह जाऊँ, मुझे बचा ले जिससे मैं प्रदीप्त जीवन प्राप्त करूँ!"

40

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन 1मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा; और उसने मेरी ओर झुककर मेरी दुहाई सुनी। 2 उसने मुझे सत्यानाश के गट्टे और <u>?????</u> ?? ??? ??? ??? ?? ?????? और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है। 3 उसने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है। बहत लोग यह देखेंगे और उसकी महिमा करेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे। (???????. 5:9, ???????. 14:3, **?!?. 52:6)** 4 क्या ही धन्य है वह पुरुष, जो यहोवा पर भरोसा करता है, और अभिमानियों और मिथ्या की ओर मुड़नेवालों की ओर मुँह न फेरता हो। 5 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तूने बहुत से काम किए हैं! जो आश्चर्यकर्मों और विचार तु हमारे लिये करता है

^{* 40:2 🛮 🗗 🗗 🗥} वि. १ वि.

वह बहुत सी हैं; तेरे तुल्य कोई नहीं! मैं तो चाहता हुँ कि खोलकर उनकी चर्चा करूँ, परन्तु उनकी गिनती नहीं हो सकती। 6 मेलबलि और अन्नबलि से त् प्रसन्न नहीं होता तूने मेरे कान खोदकर खोले हैं। होमबलि और पापबलि 2222 2222 2222 1 ⁷तब मैंने कहा, "देख, मैं आया हँ; क्योंकि पुस्तक में मेरे विषय ऐसा ही लिखा हुआ है। 8 हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ; और तेरी व्यवस्था मेरे अन्तः करण में बसी है।" (???????. 10:5-7) 9 मैंने बड़ी सभा में धार्मिकता के शुभ समाचार का प्रचार किया देख, मैंने अपना मुँह बन्द नहीं किया हे यहोवा. तू इसे जानता है। 10 मैंने तेरी धार्मिकता मन ही में नहीं रखा; मैंने तेरी सच्चाई और तेरे किए हुए उद्धार की चर्चा की है; मैंने तेरी करुणा और सत्यता बड़ी सभा से गुप्त नहीं रखी। 11 हे यहोवा, तू भी अपनी बड़ी दया मुझ पर से न हटा ले,

तेरी करुणा और सत्यता से निरन्तर

मेरे अधर्म के कामों ने मुझे आ पकड़ा

¹² क्योंकि मैं अनगिनत बुराइयों से घिरा हआ हँ;

मेरी रक्षा होती रहे!

[ं] **40:6** 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2: उसने उनकी इच्छा नहीं की वह आज्ञाकारिता के आगे इनसे प्रसन्न नहीं होगा।

और मैं दृष्टि नहीं उठा सकता; वे गिनती में मेरे सिर के बालों से भी अधिक हैं: इसलिए मेरा हृदय टूट गया। ¹³ हे यहोवा, कृपा करके मुझे छुड़ा ले! हे यहोवा, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर! 14 जो मेरे प्राण की खोज में हैं, वे सब लज्जित हों; और उनके मुँह काले हों और वे पीछे हटाए और निरादर किए जाएँ जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं। ¹⁵ जो मुझसे, "आहा, आहा," कहते हैं, वे अपनी लज्जा के मारे विस्मित हों। 16 परन्तु जितने तुझे ढूँढ़ते हैं, वह सब तेरे कारण हर्षित और आनन्दित हों; जो तेरा किया हुआ उद्धार चाहते हैं, वे निरन्तर कहते रहें, "यहोवा की बड़ाई हो!" ¹⁷मैं तो दीन और दरिद्र हँ, तो भी प्रभु मेरी चिन्ता करता है। तु मेरा सहायक और छुड़ानेवाला है; हे मेरे परमेश्वर विलम्ब न कर।

41

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन
1 क्या ही धन्य है वह, जो कंगाल की सुधि रखता है!
विपत्ति के दिन यहोवा उसको बचाएगा।
2 यहोवा उसकी रक्षा करके उसको जीवित रखेगा,
और वह पृथ्वी पर धन्य होगा।
तू उसको शत्रुओं की इच्छा पर न छोड़।

lxxii

तब यहोवा उसे सम्भालेगा: तू रोग में उसके पूरे बिछौने को उलटकर ठीक करेगा। 4 मैंने कहा, "हे यहोवा, मुझ पर दया कर; मुझ को चंगा कर, क्योंकि मैंने तो तेरे विरुद्ध पाप किया है!" 5 मेरे शत्रु यह कहकर मेरी बुराई करते हैं "वह कब मरेगा, और उसका नाम कब मिटेगा?" 6 और जब वह मुझसे मिलने को आता है, तब वह व्यर्थ बातें बकता है. जबिक उसका मन अपने अन्दर अधर्म की बातें संचय करता है; और बाहर जाकर उनकी चर्चा करता है। 7 मेरे सब बैरी मिलकर मेरे विरुद्ध कानाफूसी करते हैं; वे मेरे विरुद्ध होकर मेरी हानि की कल्पना करते हैं। 8वे कहते हैं कि इसे तो कोई बुरा रोग लग गया है; 9 मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था, जो मेरी रोटी खाता था, उसने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है। (2 🏽 🗗 . 15:12, 🔻 . 13:18, ????????. 1:16) ¹⁰ परन्तु हे यहोवा, तू मुझ पर दया करके मुझ को उठा ले कि मैं उनको बदला दूँ। 11 मेरा शत्रु जो मुझ पर जयवन्त नहीं हो पाता, इससे मैंने जान लिया है कि तु मुझसे प्रसन्न है। 12 और मुझे तो तू खराई से सम्भालता,

और सर्वदा के लिये अपने सम्मुख स्थिर करता है। 13 इस्राएल का परमेश्वर यहोवा आदि से अनन्तकाल तक धन्य है आमीन, फिर आमीन। (2022 1:68, 2022 106:48) दूसरा भाग

42

?!?. 42-72

20202020202 202020 2020202
प्रधान बजानेवाले के लिये कोरहवंशियों का मश्कील 1 जैसे हिरनी नदी के जल के लिये हाँफती है, वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये हाँफता हाँ। 2 जीविते परमेश्वर, हाँ परमेश्वर, का मैं प्यासा हँ, मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुँह दिखाऊँगा? (🏗 63:1. **??????. 22:4)** 3 मेरे आँसू दिन और रात मेरा आहार हए हैं; और लोग दिन भर मुझसे कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहाँ है? 4मैं कैसे भीड़ के संग जाया करता था, मैं जयजयकार और धन्यवाद के साथ उत्सव करनेवाली भीड़ के बीच में 12/2/2/2/2/2/2/ 2/2 12/2/2* को धीरे धीरे जाया करता था; यह स्मरण करके मेरा प्राण शोकित हो जाता है। 5 हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? और तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर आशा लगाए रह;

क्योंकि मैं उसके दर्शन से उद्धार पाकर फिर उसका धन्यवाद करूँगा। (20202020 26:38, 2020. 14:34, 2020. 12:27)

6 हे मेरे परमेश्वर; मेरा प्राण मेरे भीतर गिरा जाता है, इसलिए मैं यरदन के पास के देश से और हेर्मीन के पहाड़ों और मिसगार की पहाड़ी के ऊपर से तुझे स्मरण करता हाँ। ⁷तेरी जलधाराओं का शब्द सुनकर 💯, 22 22 2222222 22 तेरी सारी तरंगों और लहरों में मैं डूब गया हाँ। 8तो भी दिन को यहोवा अपनी शक्ति और करुणा प्रगट करेगा: और रात को भी मैं उसका गीत गाऊँगा, और अपने जीवनदाता परमेश्वर से प्रार्थना करूँगा। 9 मैं परमेश्वर से जो मेरी चट्टान है कहँगा, "तु मुझे क्यों भूल गया? मैं शत्रु के अत्याचार के मारे क्यों शोक का पहरावा पहने हुए चलता फिरता हुँ?" 10 मेरे सतानेवाले जो मेरी निन्दा करते हैं. मानो उससे मेरी हड्डियाँ चूर-चूर होती हैं, मानो कटार से छिदी जाती हैं, क्योंकि वे दिन भर मुझसे कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहाँ है? 11 हे मेरे प्राण तु क्यों गिरा जाता है?

क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है,

त् अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है?

परमेश्वर पर भरोसा रख:

[ं] **42:7** 20, 20 20 20 2020 2020 2021 अर्थात् पानी की लहर, सम्भवतः एक तीव्र वेग से बहनेवाले सोते की लहरें जो एक तट पर टकरा कर दूसरे तट तक जाती हैं।

मैं फिर उसका धन्यवाद करूँगा। (२०१०). 43:5, २०१०. 14:34,

43

¹ हे परमेश्वर, *?????? ?!????? ?!????** और विधर्मी जाति से मेरा मुकद्दमा लड़; मुझ को छली और कुटिल पुरुष से बचा। 2 क्यों कि तु मेरा सामर्थी परमेश्वर है, त्ने क्यों मुझे त्याग दिया है? मैं शत्र के अत्याचार के मारे शोक का पहरावा पहने हए क्यों फिरता रहँ? 3 अपने प्रकाश और अपनी सच्चाई को भेज: वे मेरी अगुआई करें, वे ही मुझ को तेरे 2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/ पर और तेरे निवास-स्थान में पहुँचाए! 4तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊँगा, उस परमेश्वर के पास जो मेरे अति आनन्द का कुण्ड है; और हे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, मैं वीणा बजा-बजाकर तेरा धन्यवाद करूँगा। 5 हे मेरे प्राण तू क्यों गिरा जाता है? त् अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर आशा रख, क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है; मैं फिर उसका धन्यवाद करूँगा।

^{* 43:1 2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2/:} दण्ड देने की बात नहीं है, मेरा मुकद्दमा लड़। † 43:3 2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2: सिय्योन पर्वत, जहाँ परमेश्वर की आराधना की जाती थी।

प्रधान बजानेवाले के लिये कोरहवंशियों का मश्कील 1 हे परमेश्वर, हमने अपने कानों से सुना, हमारे बापदादों ने हम से वर्णन किया है, कि तुने उनके दिनों में और प्राचीनकाल में क्या-क्या काम किए हैं। 2तने अपने हाथ से जातियों को निकाल दिया, और इनको बसाया; तुने देश-देश के लोगों को दुःख दिया, और इनको चारों ओर फैला दिया; ³क्योंकि वे न तो अपनी तलवार के बल से इस देश के अधिकारी हए, और न अपने बाहुबल से; परन्तु तेरे दाहिने हाथ और तेरी भुजा और तेरे प्रसन्न मुख के कारण जयवन्त हुए; क्योंकि तू उनको चाहता था। 4हे परमेश्वर, तू ही हमारा महाराजा है, तू याकूब के उद्धार की आज्ञा देता है। 5 तेरे सहारे से हम अपने द्रोहियों को ढकेलकर गिरा देंगे; तेरे नाम के प्रताप से हम अपने विरोधियों को रौंदेंगे। ⁶ क्योंकि मैं अपने धनुष पर भरोसा न रखूँगा, और न अपनी तलवार के बल से बचूँगा। ⁷परन्तु तू ही ने हमको द्रोहियों से बचाया है, और हमारे बैरियों को निराश और लज्जित किया है। 8हम परमेश्वर की बड़ाई दिन भर करते रहते हैं,

और सदैव तेरे नाम का धन्यवाद करते रहेंगे।

(सेला)

9तो भी तूने अब हमको त्याग दिया और हमारा अनादर किया है, और हमारे दलों के साथ आगे नहीं जाता। 10 तू हमको शत्रु के सामने से हटा देता है, और हमारे बैरी मनमाने लूट मार करते हैं। 11 तूने हमें कसाई की भेड़ों के समान कर दिया है, और हमको अन्यजातियों में तितर-बितर किया है। 12 तू अपनी प्रजा को सेंत-मेंत बेच डालता है, परन्तु उनके मोल से तू धनी नहीं होता। 13 तू हमारे पड़ोसियों से हमारी नामधराई कराता है, और हमारे चारों ओर के रहनेवाले हम से हँसी ठट्टा करते हैं। 14 तुने हमको अन्यजातियों के बीच में अपमान ठहराया है, और देश-देश के लोग हमारे कारण सिर हिलाते हैं। 15 PHOR OF THE PROPERTY OF THE और कलंक लगाने और निन्दा करनेवाले के बोल से, ¹⁶ शत्रु और बदला लेनेवालों के कारण, बुरा-भला कहनेवालों

^{* 44:15 @@@ @@ @@@@@@@@@@@ @@@@ @@@} मेरे अपमान का बोध एवं प्रमाण सदैव मेरे साथ रहता है।

और निन्दा करनेवालों के कारण। 17 यह सब कुछ हम पर बीता तो भी हम तुझे नहीं भूले, न तेरी वाचा के विषय विश्वासघात किया है। 18 हमारे मन न बहके, न हमारे पैर तरी राह से मुड़ें; 19 तो भी तुने हमें गीदड़ों के स्थान में पीस डाला, और हमको घोर अंधकार में छिपा दिया है। 20 यदि हम अपने परमेश्वर का नाम भूल जाते, या किसी पराए देवता की ओर अपने हाथ फैलाते, 21 तो क्या परमेश्वर इसका विचार न करता? क्योंकि वह तो मन की गुप्त बातों को जानता है। 22 परन्तु हम दिन भर तेरे निमित्त मार डाले जाते हैं. और उन भेड़ों के समान समझे जाते हैं जो वध होने पर हैं। (????. 8:36) 23 हे प्रभु, जाग! तु क्यों सोता है? उठ! हमको सदा के लिये त्याग न दे! और हमारा दु:ख और सताया जाना भूल जाता है? ²⁵ हमारा प्राण मिड्डी से लग गया; हमारा शरीर भूमि से सट गया है। ²⁶ हमारी सहायता के लिये उठ खड़ा हो। और अपनी करुणा के निमित्त हमको छुड़ा ले।

^{ं 44:24 202 2020202 202020 202020 202020 20202 2020:} तू हम से विमुख क्यों हो जाता है और सहायता से इन्कार क्यों करता है कि हम ऐसे दयनीय कष्टों में अकेले रह जाएँ।

22222 222

प्रधान बजानेवाले के लिये शोशन्नीम में कोरहवंशियों का मश्कील। प्रेम प्रीति का गीत 1 मेरा हृदय एक सुन्दर विषय की उमंग से उमड़ रहा है, जो बात मैंने राजा के विषय रची है उसको सुनाता हुँ; मेरी जीभ निपुण लेखक की लेखनी बनी है। 2तू मनुष्य की सन्तानों में परम सुन्दर है; तेरे होठों में अनुग्रह भरा हुआ है; इसलिए परमेश्वर ने तुझे सदा के लिये आशीष दी है। (?????? 4:22, ???????. 1:3,4) 4 सत्यता, नम्रता और धार्मिकता के निमित्त अपने ऐश्वर्य और प्रताप पर सफलता से सवार हो; तेरा दाहिना हाथ तुझे भयानक काम सिखाए! 5 तेरे तीर तो तेज हैं, तेरे सामने देश-देश के लोग गिरेंगे; राजा के शत्रुओं के हृदय उनसे छिदेंगे। 6 हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन सदा सर्वदा बना रहेगा: तेरा राजदण्ड न्याय का है। ⁷त्ने धार्मिकता से प्रीति और दुष्टता से बैर रखा है। इस कारण परमेश्वर ने हाँ, तेरे परमेश्वर ने तुझको तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेल से अभिषेक किया है। (???????. 1:8,9)

^{* 45:3 @@ @@@@ @@@@@ @@ @@ @@@@@ @@@@@:} अर्थात् युद्ध और विजय के लिए तैयार हो जा - यहाँ मसीह को एक विजेता राजा कहा गया है।

8 तेरे सारे वस्त्र गन्धरस, अगर, और तेज से सुगन्धित हैं, तू हाथी दाँत के मन्दिरों में तारवाले बाजों के कारण आनन्दित हुआ है। 9 तेरी प्रतिष्ठित स्त्रियों में राजकुमारियाँ भी हैं; तेरी दाहिनी ओर पटरानी, ओपीर के कुन्दन से विभिषत खड़ी है। 10 हे राजकुमारी सुन, और कान लगाकर ध्यान दे; अपने लोगों और अपने पिता के घर को भूल जा; 11 और राजा तेरे रूप की चाह करेगा। क्योंकि वह तो तेरा प्रभु है, तू उसे दण्डवत् कर। ¹² सोर की राजकुमारी भी भेंट करने के लिये उपस्थित होगी, प्रजा के धनवान लोग तुझे प्रसन्न करने का यत्न करंगे। 13 राजकुमारी महल में अति शोभायमान है, उसके वस्त्र में सुनहले बूटे कढ़े हुए हैं; 14 वह बूटेदार वस्त्र पहने हुए राजा के पास पहँचाई जाएगी। जो कुमारियाँ उसकी सहेलियाँ हैं, वे उसके पीछे-पीछे चलती हुई तेरे पास पहँचाई जाएँगी। और वे राजा के महल में प्रवेश करेंगी। ¹⁶ तेरे पितरों के स्थान पर तेरे सन्तान होंगे; जिनको तू सारी पृथ्वी पर हाकिम ठहराएगा। 17 मैं ऐसा करूँगा, कि तेरे नाम की चर्चा पीढ़ी

से पीढ़ी तक होती रहेगी; इस कारण देश-देश के लोग सदा सर्वदा तेरा धन्यवाद करते रहेंगे।

46

प्रधान बजानेवाले के लिये कोरहवंशियों का, अलामोत की राग पर एक गीत

1 परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है,

² इस कारण हमको कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए,

और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएँ;

³ चाहे समुद्र गर्जें और फेन उठाए,

और पहाड़ उसकी बाढ़ से काँप उठे।

(सेला)

(?????? 21:25, ??????? 7:25)

4 एक नदी है जिसकी नहरों से परमेश्वर के नगर में अर्थात् परमप्रधान के पिवत्र निवास भवन में आनन्द होता है। 5 परमेश्वर उस नगर के बीच में है, वह कभी टलने का नहीं:

पौ फटते ही परमेश्वर उसकी सहायता करता है। 6 जाति-जाति के लोग झल्ला उठे, राज्य-राज्य

के लोग डगमगाने लगे;

वह बोल उठा, और पृथ्वी पिघल गई। (????????. 11:18, ???. 2:1)

^{* 46:1 @@@@ @@@ @@@ @@ @@@@@@@@@@@@@@} यहाँ सहायक अर्थात्, सहयोग एवं सहकारिता।संकट: अर्थात् तनाव और दु:ख देनेवाली सब परिस्थितियाँ।

7 सेनाओं का यहोवा हमारे संग है; याकूब का परमेश्वर हमारा ऊँचा गढ़ है।

(सेला)

⁸ आओ, यहोवा के महाकर्म देखो, कि उसने पृथ्वी पर कैसा-कैसा उजाड़ किया है।

9 वह पृथ्वी की छोर तक लड़ाइयों को मिटाता है; वह धनुष को तोड़ता, और भाले को दो टुकड़े कर डालता है, और रथों को आग में झोंक देता है!

10 "चुप हो जाओ, और *21212 212 212 21212 212 2121212121212 21212*†।

मैं जातियों में महान हूँ,

मैं पृथ्वी भर में महान हूँ!"

11 सेनाओं का यहोवा हमारे संग है; याकूब का परमेश्वर हमारा ऊँचा गढ़ है।

(सेला)

47

प्रधान बजानेवाले के लिये कोरहवंशियों का भजन 1हे देश-देश के सब लोगों, तालियाँ बजाओ! ऊँचे शब्द से परमेश्वर के लिये जयजयकार करो! 2 क्योंकि यहोवा परमप्रधान और भययोग्य है, वह सारी पृथ्वी के ऊपर महाराजा है। 3 वह देश-देश के लोगों को हमारे सम्मुख नीचा करता, और जाति-जाति को हमारे पाँवों के नीचे कर देता है।

^{ं 46:10 @@@ @@ @@ @@@ @@@@@@@@@ @@@@} देखो मैंने क्या-क्या किया जो मेरे परमेश्वर होने का प्रमाण है।

 4 <u>2</u>12 <u>2121212</u> <u>2121212</u> <u>2121212</u> <u>21212</u> <u>21</u>

(सेला)

⁵ परमेश्वर जयजयकार सहित, यहोवा नरसिंगे के शब्द के साथ ऊपर गया है। (2020) 24:51, 2020: 6:62, 2020) 1:9, 202: 68:1,2)

48

(सेला)

2 सिय्योन पर्वत ऊँचाई में सुन्दर और सारी

पृथ्वी के हर्ष का कारण है, ??????. 3:19) 3 उसके महलों में परमेश्वर ऊँचा गढ़ माना गया है। 4 क्योंकि देखो, राजा लोग इकट्टे हए, वे एक संग आगे बढ़ गए। 5 उन्होंने आप ही देखा और देखते ही विस्मित हए, वे घबराकर भाग गए। 6 वहाँ कँपकँपी ने उनको आ पकड़ा, और जच्चा की सी पीड़ाएँ उन्हें होने लगीं। 8 सेनाओं के यहोवा के नगर में, अपने परमेश्वर के नगर में, जैसा हमने सुना था, वैसा देखा भी है; परमेश्वर उसको सदा दृढ़ और स्थिर रखेगा। 9 हे परमेश्वर हमने तेरे मन्दिर के भीतर तेरी करुणा पर ध्यान किया है। 10 हे परमेश्वर तेरे नाम के योग्य तेरी स्तुति पृथ्वी की छोर तक होती है। तेरा दाहिना हाथ धार्मिकता से भरा है;

11 तेरे न्याय के कामों के कारण सिय्योन पर्वत आनन्द करे,

और यहदा के नगर की पुत्रियाँ मगन हों!

49

[ं] 48:12 20202022 202 202022 202 20202: सब मनुष्यों के लिए यह एक पुकार है कि वे सिय्योन नगर की परिक्रमा करें, उसका सर्वेक्षण करें और देखें कि वह कैसा सुन्दर एवं दृढ़ नगर है।

सदा स्थिर रहेगा, और उनके निवास पीढ़ी से पीढ़ी तक बने रहेंगे; इसलिए वे अपनी-अपनी भूमि का नाम अपने-अपने नाम पर

रखते हैं।

12 परन्तु मनुष्य प्रतिष्ठा पाकर भी स्थिर नहीं रहता, वह पशुओं के समान होता है, जो मर मिटते हैं। 13 उनकी यह चाल उनकी मूर्खता है, तो भी उनके बाद लोग उनकी बातों से प्रसन्न होते हैं।

11 वे मन ही मन यह सोचते हैं, कि उनका घर

(सेला)

14 वे अधोलोक की मानो भेड़ों का झुण्ड ठहराए गए हैं; मृत्यु उनका गड़रिया ठहरेगा; और 2020 2021 सीधे लोग उन पर प्रभुता करेंगे;

और उनका सुन्दर रूप अधोलोक का कौर हो जाएगा और उनका कोई आधार न रहेगा। ¹⁵ परन्तु परमेश्वर मेरे प्राण को अधोलोक के वश से छुड़ा लेगा, वह मुझे ग्रहण करके अपनाएगा। ¹⁶ जब कोई धनी हो जाए और उसके घर का वैभव बढ़ जाए, तब तू भय न खाना। 17 क्योंकि वह मरकर कुछ भी साथ न ले जाएगा; न उसका वैभव उसके साथ कब्र में जाएगा। 18 चाहे वह जीते जी अपने आपको धन्य कहता रहे। जब तू अपनी भलाई करता है, तब वे लोग तेरी प्रशंसा करते हैं 19 तो भी वह अपने पुरखाओं के समाज में मिलाया जाएगा, जो कभी उजियाला न देखेंगे। 20 मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित भी हों परन्तु यदि वे समझ नहीं रखते तो वे पशुओं के समान हैं, जो मर मिटते हैं।

50

आसाप का भजन

1 सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा ने कहा है,
और उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक पृथ्वी
के लोगों को बुलाया है।

2 सिय्योन से, जो परम सुन्दर है,
परमेश्वर ने अपना तेज दिखाया है।

3 हमारा परमेश्वर आएगा और चुपचाप न रहेगा,
आग उसके आगे-आगे भस्म करती जाएगी;

(सेला)

(???. 97:6, ??????. 12:23)

(शि. 97:0, शि. शि. शि. शि. शि. शि. शे. विषय साक्षी देता हूँ।
गरमेश्वर तेरा परमेश्वर मैं ही हूँ।
श्रमेश्वर तेरा परमेश्वर मैं ही हूँ।
श्रमेश्वर तेरा परमेश्वर मैं ही हूँ।
श्रमें तुझ पर तेरे बिलयों के विषय दोष नहीं लगाता,
तेरे होमबिल तो नित्य मेरे लिये चढ़ते हैं।
श्रमें न तो तेरे घर से बैल
न तेरे पशुशाला से बकरे लूँगा।
10 क्योंकि वन के सारे जीव-जन्तु
और हजारों पहाड़ों के जानवर मेरे ही हैं।
11 पहाड़ों के सब पिक्षयों को मैं जानता हूँ,
और मैदान पर चलने-फिरनेवाले जानवर मेरे ही हैं।
12 "यदि मैं भूखा होता तो तुझ से न कहता;

क्योंकि जगत और <u>212 21212 21212 212 212 21212 2121</u> । (2121212121212121 1122121 1122121 1122121 1122121 1122121 1122121 1122121 1122121 1122121 1122121 1122121 112212

¹³ क्या मैं बैल का माँस स्राऊँ, या बकरों का लहू पीऊँ?

14 परमेश्वर को धन्यवाद ही का बलिदान चढ़ा,

^{* 50:4} 2/2 2/

और परमप्रधान के लिये अपनी मन्नतें पूरी कर; (2020202020. 13:15, 202020.

15 और संकट के दिन मुझे पुकार;

मैं तुझे छुड़ाऊँगा, और तू मेरी महिमा करने पाएगा।"

¹⁶ परन्तु दुष्ट से परमेश्वर कहता है:

"तुझे मेरी विधियों का वर्णन करने से क्या काम?

तू मेरी वाचा की चर्चा क्यों करता है?

17 तू तो शिक्षा से बैर करता,

और मेरे वचनों को तुच्छ जानता है।

18 जब तूने चोर को देखा, तब उसकी संगति से प्रसन्न हुआ;

और परस्त्रीगामियों के साथ भागी हुआ।

¹⁹ "तूने अपना मुँह बुराई करने के लिये खोला,

और तेरी जीभ छल की बातें गढ़ती है।

²⁰ तू बैठा हुआ अपने भाई के विरुद्ध बोलता;

और अपने सगे भाई की चुगली खाता है।

21 यह काम तूने किया, और मैं चुप रहा;

इसलिए तूने समझ लिया कि परमेश्वर बिल्कुल मेरे समान है। परन्तु मैं तुझे समझाऊँगा, और तेरी आँखों के

सामने सब कुछ अलग-अलग दिखाऊँगा।"

कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हें फाड़ डालूँ,

और कोई छुड़ानेवाला न हो।

23 धन्यवाद के बलिदान का चढ़ानेवाला मेरी महिमा करता है; और जो अपना चरित्र उत्तम रखता है

^{‡ 50:22 @@ @@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@} करते हो, सच तो यह है कि तुम उसे भूल चुके हो, तुम परमेश्वर के प्रमाणिक स्वभाव को भूल चुके हो।

51

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन जब नातान नबी उसके पास इसलिए आया कि वह बतशेबा के पास गया था है परमेश्वर, अपनी करुणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर; अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे। (1202)

18:13, 222. 43:25)

²मुझे भली भाँति धोकर मेरा अधर्म दूर कर, और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर!

³मैं तो अपने अपराधों को जानता हुँ,

और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है।

4मैंने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया,

और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है,

ताकि तू बोलने में धर्मी

और न्याय करने में निष्कलंक ठहरे। (??????? 15:18,21, ?????. 3:4)

5 देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ,

और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा। (?????. 3:6, ?????. 5:12, ????. 2:3)

6देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है;

और मेरे मन ही में ज्ञान सिखाएगा।

⁷ 2222 22 2222 2222 2222 222 22 विज्ञ हो जाऊँगा;

मुझे धो, और मैं हिम से भी अधिक श्वेत बनूँगा।

8 मुझे हर्ष और आनन्द की बातें सुना,

जिससे जो हिंडुयाँ तूने तोड़ डाली हैं, वे

^{* 51:7 @@@@ @@ @@@@@ @@@@@ @@:} जूफा एक पौधा था जिसका उपयोग इस्राएल में पवित्र शोधन एवं छिड़काव में किया जाता था।

मगन हो जाएँ। 9 अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले, और मेरे सारे अधर्म के कामों को मिटा डाल। 10 हे परमेश्वर, ????? ????? ?????? ????????? ???, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर। ¹¹ मुझे अपने सामने से निकाल न दे, और अपने पवित्र आत्मा को मुझसे अलग न कर। 12 अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे, और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल। 13 जब मैं अपराधी को तेरा मार्ग सिखाऊँगा, और पापी तेरी ओर फिरेंगे। 14 हे परमेश्वर, हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर, मुझे हत्या के अपराध से छुड़ा ले, तब मैं तेरी धार्मिकता का जयजयकार करने पाऊँगा। ¹⁵ हे प्रभु, मेरा मुँह खोल दे तब मैं तेरा गुणानुवाद कर सकूँगा। ¹⁶ क्योंकि त् बलि से प्रसन्न नहीं होता, नहीं तो मैं देता: होमबलि से भी तू प्रसन्न नहीं होता। 17 [2][2][2] [2][4 परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हए मन को तुच्छ नहीं जानता। 18 प्रसन्न होकर सिय्योन की भलाई कर, यरूशलेम की शहरपनाह को तू बना, 19 तब तू धार्मिकता के बलिदानों से अर्थात् सर्वांग

^{ं 51:10 @@@@ @@@@@@ @@@@@@@@@@@@@@@@} खह शब्द वास्तव में सृजन कार्य को दर्शाने के लिए प्रयोग किया गया है, अर्थात् किसी को जो नहीं है अस्तित्व में लाना। ः 51:17 @@@@ @@: अपराध बोध के बोझ के नीचे दबकर टूटा हुआ अन्त:करण।कहने का अर्थ है कि आत्मा पर इतना अधिक बोझ हो गया कि वह कुचल गई और दब गई।

पशुओं के होमबलि से प्रसन्न होगा; तब लोग तेरी वेदी पर पवित्र बलिदान चढ़ाएँगे।

52

22222 22 2222 22 22222 22 222222

प्रधान बजानेवाले के लिये मश्कील पर दाऊद का भजन जब दोएग एदोमी ने शाऊल को बताया कि दाऊद अहीमेलेक के घर गया था

1 हे वीर, तू बुराई करने पर क्यों घमण्ड करता है?

परमेश्वर की करुणा तो अनन्त है।

का काम करती है।

3तू भलाई से बढ़कर बुराई में,

और धार्मिकता की बात से बढ़कर झूठ से प्रीति रखता है।

(सेला)

4हे छली जीभ, तू सब विनाश करनेवाली बातों से प्रसन्न रहती है। 5 निश्चय परमेश्वर तुझे सदा के लिये नाश कर देगा; वह तुझे पकड़कर तेरे डेरे से निकाल देगा; और जीवितों के लोक से तुझे उखाड़ डालेगा।

(सेला)

6 तब धर्मी लोग इस घटना को देखकर डर जाएँगे, और यह कहकर उस पर हँसेंगे, 7 "देखो, यह वही पुरुष है जिसने परमेश्वर को अपनी शरण नहीं माना, परन्तु अपने धन की बहुतायत पर भरोसा रखता था,

53

प्रधान बजानेवाले के लिये महलत की राग पर दाऊद का मश्कील ¹ मूर्ख ने अपने मन में कहा, "कोई परमेश्वर है ही नहीं।" वे बिगड़ गए, उन्होंने कुटिलता के घिनौने काम किए हैं; कोई सुकर्मी नहीं। ² परमेश्वर ने स्वर्ग पर से मनुष्यों के ऊपर दृष्टि की ताकि देखे कि कोई बुद्धि से चलनेवाला या परमेश्वर को खोजनेवाला है कि नहीं। ³ वे सब के सब हट गए; सब एक साथ बिगड़ गए; कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं। (शि. 14:1-3, शि. 3:10-12)

4 क्या उन सब अनर्थकारियों को कुछ भी ज्ञान नहीं, जो मेरे लोगों को रोटी के समान खाते है पर परमेश्वर का नाम नहीं लेते है? 5 वहाँ उन पर भय छा गया जहाँ भय का कोई कारण न था।

क्योंकि यहोवा ने उनकी हिड्डियों को, जो तेरे विरुद्ध छावनी डाले पड़े थे, तितर-बितर कर दिया;

तूने <u>शिश्व शिश्वशिश्व शिश्वशिश्वशिश्व शिश्वशिश</u> शिश्वशिश्वशिष्ट के परमेश्वर ने उनको त्याग दिया है। ⁶ भला होता कि इस्राएल का पूरा उद्धार सिय्योन से निकलता! जब परमेश्वर अपनी प्रजा को बन्ध्रुवाई से लौटा ले आएगा। तब याकूब मगन और इस्राएल आनन्दित होगा।

54

प्रधान बजानेवाले के लिये, दाऊद का तारकले बाजों के साथ मश्कील जब जीपियों ने आकर शाऊल से कहा, "क्या दाऊद हमारे बीच में छिपा नहीं रहता?"

और अपने पराक्रम से मेरा न्याय कर।
² हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन ले;
मेरे मुँह के वचनों की ओर कान लगा।
³ क्योंकि परदेशी मेरे विरुद्ध उठे हैं,
और कुकर्मी मेरे प्राण के गाहक हुए हैं;
उन्होंने परमेश्वर को अपने सम्मुख नहीं जाना।

(सेला)

⁴देखो, परमेश्वर मेरा सहायक है; प्रभु मेरे प्राण को सम्भालनेवाला है। ⁵ वह मेरे द्रोहियों की बुराई को उन्हीं पर लौटा देगा; हे परमेश्वर, अपनी सच्चाई के कारण उनका विनाश कर।

55

प्रधान बजानेवाले के लिये, तारवाले बाजों के साथ दाऊद का मश्कील ¹ हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा; और मेरी गिड़गिड़ाहट से मुँह न मोड़! 2 मेरी ओर ध्यान देकर, मुझे उत्तर दे; विपत्तियों के कारण मैं व्याकुल होता हैं। 3 क्योंकि शत्रु कोलाहल और दुष्ट उपद्रव कर रहें हैं; वे मुझ पर दोषारोपण करते हैं, और ऋोध में आकर सताते हैं। और मृत्यु का भय मुझ में समा गया है। 5 भय और कंपन ने मुझे पकड़ लिया है, और भय ने मुझे जकड़ लिया है। 6 तब मैंने कहा, "भला होता कि मेरे कबूतर के से पंख होते तो मैं उड़ जाता और विश्राम पाता! ⁷देखो, फिर तो मैं उड़ते-उड़ते दूर निकल जाता और जंगल में बसेरा लेता.

(सेला)

8में प्रचण्ड बयार और आँधी के झोंके से बचकर किसी शरणस्थान में भाग जाता।" ⁹ हे प्रभु, उनका सत्यानाश कर, और उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल दे; क्योंकि मैंने नगर में उपद्रव और झगड़ा देखा है। 10 रात-दिन वे उसकी शहरपनाह पर चढ़कर चारों ओर घूमते हैं; और उसके भीतर दुष्टता और उत्पात होता है। ¹¹ उसके भीतर दुष्टता ने बसेरा डाला है; और अत्याचार और छुल उसके चौक से दूर नहीं होते। 12 जो मेरी नामधराई करता है वह शत्रु नहीं था, नहीं तो मैं उसको सह लेता; जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारता है वह मेरा बैरी नहीं है, नहीं तो मैं उससे छिप जाता। 13 परन्तु वह तो तू ही था जो मेरी बराबरी का मनुष्य मेरा परम मित्र और मेरी जान-पहचान का था। 14 हम दोनों आपस में कैसी मीठी-मीठी बातें करते थे; हम भीड़ के साथ परमेश्वर के भवन को जाते थे। 15 उनको मृत्यु अचानक आ दबाए; वे जीवित ही अधोलोक में उतर जाएँ; ¹⁶ परन्तु मैं तो परमेश्वर को पुका रूँगा; और यहोवा मुझे बचा लेगा। ¹⁷ साँझ को, भोर को, दोपहर को, तीनों पहर मैं दुहाई दूँगा और कराहता रहुँगा और वह मेरा शब्द सुन लेगा।

 18 जो लड़ाई मेरे विरुद्ध मची थी उससे उसने मुझे कुशल के साथ बचा लिया है।

उन्होंने तो बहतों को संग लेकर मेरा सामना किया था।

 19 परमेश्वर जो आदि से विराजमान है यह सुनकर उनको उत्तर देगा।

(सेला)

ये वे है जिनमें कोई परिवर्तन नहीं, और उनमें परमेश्वर का भय है ही नहीं।

20 उसने अपने मेल रखनेवालों पर भी हाथ उठाया है, उसने अपनी वाचा को तोड़ दिया है।

21 उसके मुँह की बातें तो मक्खन सी चिकनी थी

परन्तु उसके मन में लड़ाई की बातें थीं;

उसके वचन तेल से अधिक नरम तो थे परन्तु नंगी तलवारें थीं।

22 अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा;

वह धर्मी को कभी टलने न देगा। (1 22. 5:7, 22. 37:24)

23 परन्तु हे परमेश्वर, तू उन लोगों को विनाश के गड्ढे में गिरा देगा;

हत्यारे और छली मनुष्य अपनी आधी आयु तक भी जीवित न

परन्तु मैं तुझ पर भरोसा रखे रहँगा।

56

मिक्ताम जब पलिश्तियों ने उसको गत नगर में पकड़ा था

 1 हे परमेश्वर, मुझ पर दया कर, क्योंकि मनुष्य मुझे निगलना चाहते हैं;

वे दिन भर लड़कर मुझे सताते हैं।

2 मेरे द्रोही दिन भर मुझे निगलना चाहते हैं,

क्योंकि जो लोग अभिमान करके मुझसे लड़ते हैं वे बहुत हैं। ³ जिस समय मुझे डर लगेगा,

मैं तुझ पर भरोसा रखुँगा।

4 परमेश्वर की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूँगा, परमेश्वर पर मैंने भरोसा रखा है, मैं नहीं डरूँगा। कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता है?

⁵ वे दिन भर मेरे वचनों को, उलटा अर्थ लगा लगाकर मरोड़ते रहते हैं;

6 वे सब मिलकर इकट्ठे होते हैं और छिपकर बैठते हैं; वे मेरे कदमों को देखते भालते हैं मानो वे मेरे प्राणों की घात में ताक लगाए बैठे हों।

7 क्या वे बुराई करके भी बच जाएँगे?

हे परमेश्वर, अपने क्रोध से देश-देश के लोगों को गिरा दे!

हतू मेरे मारे-मारे फिरने का हिसाब रखता है;

तू मेरे आँसुओं को अपनी कुप्पी में रख ले!

⁹तब जिस समय मैं पुकारूँगा, उसी समय मेरे शत्रु उलटे फिरेंगे। यह मैं जानता हूँ, कि परमेश्वर मेरी ओर है।

10 परमेश्वर की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूँगा, यहोवा की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूँगा।

11 मैंने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, मैं न डरूँगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?

12 है परमेश्वर, तेरी मन्नतों का भार मुझ पर बना है;

^{*} 56:5 20202 20202 20202020202 20202 202 202020 202 202020 202 202020 202 20202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 20202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 20202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 20202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 20202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 20202000 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202

मैं तुझको धन्यवाद-बलि चढ़ाऊँगा। 13 क्योंकि तूने मुझ को मृत्यु से बचाया है; तुने मेरे पैरों को भी फिसलने से बचाया है,

57

प्रधान बजानेवाले के लिये अल-तशहेत राग में दाऊद का मिक्ताम; जब वह शाऊल से भागकर गुफा में छिप गया था 1 हे परमेश्वर, मुझ पर दया कर, मुझ पर दया कर, क्योंकि मैं तेरा शरणागत हुँ; और जब तक ये विपत्तियाँ निकल न जाएँ, तब तक मैं तेरे पंखों के तले शरण लिए रहँगा। 2 मैं परमप्रधान परमेश्वर को पुका रूँगा, परमेश्वर को जो मेरे लिये सब कुछ सिद्ध करता है। ³ परमेश्वर स्वर्ग से भेजकर मुझे बचा लेगा, जब मेरा निगलनेवाला निन्दा कर रहा हो।

(सेला)

परमेश्वर अपनी करुणा और सच्चाई प्रगट करेगा। 4 <u>2222</u> <u>22222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>22222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> मुझे जलते हुओं के बीच में लेटना पड़ता है, अर्थात् ऐसे मनुष्यों के बीच में जिनके दाँत बर्छी और तीर हैं, और जिनकी जीभ तेज तलवार है। 5 हे परमेश्वर तू स्वर्ग के ऊपर अति महान और तेजोमय है, तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर फैल जाए!

[‡] **56:13** 2222 222 22222222 22 22222₂.... 2222: उसकी उपस्थिति में उसकी मित्रता और उसकी कृपा का सुख भोंगू। **57:4** 22:22 2:22:22 2:22:22 22 202 202 202 अर्थात् ऐसे मनुष्यों के मध्य हुँ जो शेरों के सामान है- खूंखार, बर्बर मनुष्य।

6 उन्होंने मेरे पैरों के लिये जाल बिछाया है; मेरा प्राण ढला जाता है। उन्होंने मेरे आगे गट्ढा खोदा, परन्तु आप ही उसमें गिर पड़े।

(सेला)

58

प्रधान बजानेवाले के लिये अल-तशहेत राग में दाऊद का मिक्ताम ¹हे मनुष्यों, क्या तुम सचमुच धार्मिकता की बात बोलते हो? और हे मनुष्य वंशियों क्या तुम सिधाई से न्याय करते हो? ² नहीं, तुम मन ही मन में कुटिल काम करते हो; तुम देश भर में उपद्रव करते जाते हो। ³ दुष्ट लोग जन्मते ही पराए हो जाते हैं, वे पेट से निकलते ही झूठ बोलते हुए भटक जाते हैं। ⁴ उनमें सर्प का सा विष है;

59

प्रधान बजानेवाले के लिये अल-तशहेत राग में दाऊद का मिक्ताम; जब शाऊल के भेजे हुए लोगों ने घर का पहरा दिया कि उसको मार डाले ¹हे मेरे परमेश्वर, मुझ को शत्रुओं से बचा, मुझे ऊँचे स्थान पर रखकर मेरे विरोधियों से बचा, ² मुझ को बुराई करनेवालों के हाथ से बचा,

^{* 58:4} 202 20

(सेला)

हे प्रभु, हे हमारी ढाल! अपनी शक्ति से उन्हें तितर-बितर कर, उन्हें दबा दे।

^{* 59:3 20202 2022 2022 2022 2020 2020 2020} विश्वः नियमों के उल्लंघन के कारण या इस दोष के कारण कि मैं परमेश्वर के विरुद्ध पापी हूँ, नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। † 59:10 2020202020 202020 20202020 20202020 20202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 20202020 20202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 20202020 202020 202020 202020 202020 202020 202020 20202020 202020 202020 202020 202020 202020 20202020 20202020 2020202020 202020202

12 वह अपने मुँह के पाप, और होठों के वचन, और श्राप देने, और झूठ बोलने के कारण, अभिमान में फँसे हुए पकड़े जाएँ। 13 जलजलाहट में आकर उनका अन्त कर, उनका अन्त कर दे ताकि वे नष्ट हो जाएँ तब लोग जानेंगे कि परमेश्वर याकूब पर, वरन् पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करता है।

(सेला)

60

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का मिक्ताम शूशनेदूत राग में। शिक्षादायक। जब वह अरम्नहरैम और अरमसोबा से लड़ता था। और योआब ने लौटकर नमक की तराई में एदोमियों में से बारह हजार पुरुष मार लिये

1 हे परमेश्वर, तूने हमको त्याग दिया,

और हमको तोड़ डाला है; तू क्रोधित हुआ; फिर हमको ज्यों का त्यों कर दे। 2 तूने भूमि को कँपाया और फाड़ डाला है; उसके दरारों को भर दे, क्योंकि वह डगमगा रही है। 3तने अपनी प्रजा को कठिन समय दिखाया: *|?||?*|* ı

4त्ने अपने डरवैयों को झण्डा दिया है, कि वह सच्चाई के कारण फहराया जाए।

(सेला)

5 तू अपने दाहिने हाथ से बचा, और हमारी सुन ले कि तेरे प्रिय छुड़ाए जाएँ। 6 परमेश्वर पवित्रता के साथ बोला है, 'मैं प्रफुल्लित होऊँगा; मैं शेकेम को बाँट लुँगा, और सुक्कोत की तराई को नपवाऊँगा। 7 गिलाद मेरा है; मनश्शे भी मेरा है; और एप्रैम मेरे सिर का टोप, यहदा मेरा राजदण्ड है। 8मोआब मेरे धोने का पात्र है; मैं एदोम पर अपना जुता फेंकूँगा; हे पलिश्तीन, मेरे ही कारण जयजयकार कर।" 9 मुझे गढ़वाले नगर में कौन पहँचाएगा? एदोम तक मेरी अगुआई किसने की है? 10 हे परमेश्वर, क्या तूने हमको त्याग नहीं दिया? हे परमेश्वर, तू हमारी सेना के साथ नहीं जाता। 11 शत्रु के विरुद्ध हमारी सहायता कर,

अर्थ है कि उनकी दशा ऐसी है जैसे कि परमेश्वर ने उन्हें नशीले पदार्थ का कटोरा पिला दिया है, जिसके कारण वे स्थिर खड़े नहीं हो पा रहे है।

61

प्रधान बजानेवाले के लिये तारवाले बाजे के साथ दाऊद का भजन है परमेश्वर, मेरा चिल्लाना सुन,

मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दे।

2मूर्छा खाते समय मैं पृथ्वी की छोर से भी तुझे पुकारूँगा,

³ क्योंकि तू मेरा शरणस्थान है, और शत्रु से बचने के लिये ऊँचा गढ़ है। ⁴मैं तेरे तम्बू में युगानुयुग बना रहूँगा। मैं तेरे पंखों की ओट में शरण लिए रहँगा।

(सेला)

5 क्योंकि हे परमेश्वर, तूने मेरी मन्नतें सुनीं, जो तेरे नाम के डरवैये हैं, उनका सा भाग तूने मुझे दिया है। 6 तू राजा की आयु को बहुत बढ़ाएगा; उसके वर्ष पीढ़ी-पीढ़ी के बराबर होंगे। 7 वह परमेश्वर के सम्मुख सदा बना रहेगा; तू अपनी करुणा और सच्चाई को उसकी रक्षा के लिये ठहरा रख। 8 इस प्रकार मैं सर्वदा तेरे नाम का भजन गा गाकर अपनी मन्नतें हर दिन पूरी किया करूँगा।

श्रीशाशिशिशिश शिष्ट शिष्टि श्रीशाशिश शिष्टि श्रीशान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन। यदूतून की राग पर मस्यमुच मैं चुपचाप होकर परमेश्वर की ओर मन लगाए हूँ मेरा उद्धार उसी से होता है। 2 सचमुच वही, मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है, वह मेरा गढ़ है मैं अधिक न डिगूँगा। 3 तुम कब तक एक पुरुष पर धावा करते रहोगे, कि सब मिलकर उसका घात करो? वह तो झुकी हुई दीवार या गिरते हुए बाड़े के समान है। 4 सचमुच वे उसको, उसके ऊँचे पद से गिराने की सम्मति करते हैं; वे झूठ से प्रसन्न रहते हैं। मुँह से तो वे आशीर्वाद देते पर मन में कोसते हैं।

(सेला)

(सेला)

⁹ सचमुच नीच लोग तो अस्थाई, और बड़े लोग मिथ्या ही हैं;

 12 और हे प्रभु, करुणा भी तेरी है।

क्योंकि तू एक-एक जन को उसके काम के अनुसार फल देता है। (?!??!?!?. 9:9, ?!?!?!?!?! 16:27, ?!?!?!. 2:6, ?!?!?!?!?. 22:12)

63

^{ं 62:11 2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2 2/2} वहने का अर्थ है कि मनुष्य के लिए आवश्यक सामर्थ्य अर्थात् उसकी रक्षा एवं उद्धार की योग्यता, केवल परमेश्वर में हैं।

* 63:1 2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 अर्थात् जैसे सूखी भूमि में कोई प्यासा हो वैसे मेरी आत्मा परमेश्वर के लिए तरसती है।

और तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊँगा। 5 मेरा जीव मानो चर्बी और चिकने भोजन से तृप्त होगा, और मैं जयजयकार करके तेरी स्तुति करूँगा। 6 जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूँगा, तब रात के एक-एक पहर में तुझ पर ध्यान करूँगा; 7 क्योंकि तू मेरा सहायक बना है, इसलिए 222 2222 2222 22 222 222 2222 [2][2][2][2][2][4] 8मेरा मन तेरे पीछे-पीछे लगा चलता है; और मुझे तो तु अपने दाहिने हाथ से थाम रखता है। 9 परन्तु जो मेरे प्राण के खोजी हैं, वे पृथ्वी के नीचे स्थानों में जा पड़ेंगे; ¹⁰ वे तलवार से मारे जाएँगे, और गीदड़ों का आहार हो जाएँगे। ¹¹ परन्तु राजा परमेश्वर के कारण आनन्दित होगा; जो कोई परमेश्वर की शपथ खाए, वह बड़ाई करने पाएगा; परन्तु झुठ बोलनेवालों का मुँह बन्द किया जाएगा।

64

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन ¹हे परमेश्वर, जब मैं तेरी दुहाई दूँ, तब मेरी सुन; शत्रु के उपजाए हुए भय के समय मेरे प्राण की रक्षा कर। ² कुकर्मियों की गोष्ठी से, और अनर्थकारियों के हुल्लड़ से मेरी आड़ हो। ³ उन्होंने अपनी जीभ को तलवार के समान तेज किया है, और अपने कड़वे वचनों के तीरों को चढ़ाया है;

^{ं 63:7 202 20202 20202 20202 2020 2020 2020202 2020202} विशेष के नीचे या उनकी सुरक्षा में सुरक्षित रहँगा।

4ताकि छिपकर खरे मनुष्य को मारें; वे निडर होकर उसको अचानक मारते भी हैं। 5 वे बुरे काम करने को हियाव बाँधते हैं; वे फंदे लगाने के विषय बातचीत करते हैं; और कहते हैं, "हमको कौन देखेगा?" 6वे कटिलता की युक्ति निकालते हैं; और कहते हैं, "हमने पक्की युक्ति खोजकर निकाली है।" क्योंकि मनुष्य के मन और हृदय के विचार गहरे है। वे अचानक घायल हो जाएँगे। 8वे अपने ही वचनों के कारण ठोकर खाकर गिर पड़ेंगे; जितने उन पर दृष्टि करेंगे वे सब अपने-अपने सिर हिलाएँगे ⁹ ??? ????? ???? ??? ???????; और परमेश्वर के कामों का बखान करेंगे, और उसके कार्यक्रम को भली भाँति समझेंगे। 10 धर्मी तो यहोवा के कारण आनन्दित होकर उसका शरणागत होगा, और सब सीधे मनवाले बड़ाई करेंगे।

65

² हे प्रार्थना के सुननेवाले! सब प्राणी तेरे ही पास आएँगे। *(श्रीयाश्रीश्रीश्री*. **10:34,35,** श्रीश्रीश्री. **66:23)**

3 अधर्म के काम मुझ पर प्रबल हुए हैं;

हमारे अपराधों को तू क्षमा करेगा।

4 क्या ही धन्य है वह, जिसको तू चुनकर अपने समीप आने देता है,

कि वह तेरे आँगनों में वास करे!

हम तेरे भवन के, अर्थात् तेरे पवित्र मन्दिर के उत्तम-उत्तम पदार्थीं से तृप्त होंगे।

5 हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर,

हे पृथ्वी के सब दूर-दूर देशों के और दूर के समुद्र पर के रहनेवालों के आधार,

तू धार्मिकता से किए हुए अद्भुत कार्यों द्वारा हमें उत्तर देगा;

⁶तू जो पराऋम का फेंटा कसे हुए,

अपनी सामर्थ्य के पर्वतों को स्थिर करता है;

(??????? 8:26, ????. 17:12,13)

⁸ इसलिए दूर-दूर देशों के रहनेवाले तेरे चिन्ह देखकर डर गए हैं; तू उदयाचल और अस्ताचल दोनों से जयजयकार कराता है।

 9 तू भूमि की सुधि लेकर उसको सींचता है,

तू उसको बहुत फलदायक करता है;

परमेश्वर की नदी जल से भरी रहती है;

तू पृथ्वी को तैयार करके मनुष्यों के लिये अन्न को तैयार करता है। ¹⁰ तू रेघारियों को भली भाँति सींचता है,

और उनके बीच की मिट्टी को बैठाता है, तू भूमि को मेंह से नरम करता है, और उसकी उपज पर आशीष देता है। ¹¹ तेरी भलाइयों से, तू वर्ष को मुकुट पहनता है; तेरे मार्गों में उत्तम-उत्तम पदार्थ पाए जाते हैं। ¹² वे जंगल की चराइयों में हरियाली फूट पड़ती हैं; और पहाड़ियाँ हर्ष का फेंटा बाँधे हुए है। ¹³ चराइयाँ भेड़-बकरियों से भरी हुई हैं; और तराइयाँ अन्न से ढंपी हुई हैं, वे जयजयकार करती और गाती भी हैं।

66

(सेला)

5 आओ परमेश्वर के कामों को देखो; वह अपने कार्यों के कारण मनुष्यों को भययोग्य देख पड़ता है। 6 उसने समुद्र को सूखी भूमि कर डाला;

वे महानद में से पाँव-पाँव पार उतरे। वहाँ हम उसके कारण आनन्दित हुए, ⁷ जो अपने पराऋम से सर्वदा प्रभुता करता है, और अपनी आँखों से जाति-जाति को ताकता है। विद्रोही अपने सिर न उठाए।

(सेला)

्रीःशि. 48:10) ¹¹तूने हमको जाल में फँसाया;

और हमारी कमर पर भारी बोझ बाँधा था;

12 तूने घुड़चूढ़ों को हमारे सिरों के ऊपर से चलाया,

हम आग् और ज्ल से होकर गए;

परन्तु तूने हमको उबार के सुख से भर दिया है।

13 मैं होमबलि लेकर तेरे भवन में आऊँगा

¹⁴ जो मैंने मुँह खोलकर मानीं,

और संकट के समय कही थीं।

¹⁵ मैं तुझे मोटे पशुओं की होमबलि,

मेढ़ों की चर्बी की धूप समेत चढ़ाऊँगा;

मैं बकरों समेत बैल चढ़ाऊँगा।

(सेला)

[ं] 66:10 20202 20202 202020 202 202020 20202 202: अर्थात् उचित परिक्षणों के अधीन करके उसकी वास्तविकता को निश्चित करना और उसकी अशुद्धियों को दूर करना। \div 66:13 2020 202 2020202020 2020 202020 202020 20202020202: मैंने जो प्रतिज्ञाएँ सत्यनिष्टा में की है, उनको अवश्य पूरी करूँगा।

16 हे परमेश्वर के सब डरवैयों, आकर सुनो, मैं बताऊँगा कि उसने मेरे लिये क्या-क्या किया है। 17 मैंने उसको पुकारा, और उसी का गुणानुवाद मुझसे हुआ। 18 यदि मैं मन में अनर्थ की बात सोचता, तो प्रभु मेरी न सुनता। (शिशः 9:31, शिशः 15:29) 19 परन्तु परमेश्वर ने तो सुना है; उसने मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दिया है। 20 धन्य है परमेश्वर, जिसने न तो मेरी प्रार्थना अनसुनी की, और न मुझसे अपनी करुणा दूर कर दी है!

67

222222222222

प्रधान बजानेवाले के लिये तारवाले बाजों के साथ भजन, गीत ¹परमेश्वर हम पर अनुग्रह करे और हमको आशीष दे; वह हम पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए,

(सेला)

² जिससे तेरी गति पृथ्वी पर, और तेरा किया हुआ उद्धार सारी जातियों में जाना जाए। (2020) 2:30,31, 2020). 2:11)

3हे परमेश्वर, देश-देश के लोग तेरा धन्यवाद करें; देश-देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें। ⁴राज्य-राज्य के लोग आनन्द करें, और जयजयकार करें, क्योंकि तू देश-देश के लोगों का न्याय धर्म से करेगा, और *202222 22 22222-2222* 22 22222 22 22222 22222^{*}।

(सेला)

⁵ हे परमेश्वर, देश-देश के लोग तेरा धन्यवाद करें; देश-देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें। ⁶ भूमि ने अपनी उपज दी है, परमेश्वर जो हमारा परमेश्वर है, उसने हमें आशीष दी है। ⁷ परमेश्वर हमको आशीष देगा; और पृथ्वी के दूर-दूर देशों के सब लोग उसका भय मानेंगे।

68

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन, गीत

1 परमेश्वर उठे, उसके शत्रु तितर-बितर हों;
और उसके बैरी उसके सामने से भाग जाएँ!

2 जैसे धुआँ उड़ जाता है, वैसे ही तू उनको उड़ा दे;
जैसे मोम आग की आँच से पिघल जाता है,
वैसे ही दुष्ट लोग परमेश्वर की उपस्थित से नाश हों।

3 परन्तु धर्मी आनन्दित हों; वे परमेश्वर के सामने प्रफुल्लित हों;
वे आनन्द में मगन हों!

4 परमेश्वर का गीत गाओ, उसके नाम का भजन गाओ;
जो निर्जल देशों में सवार होकर चलता है,
उसके लिये सड़क बनाओ;
उसका नाम यहोवा है, इसलिए तुम उसके सामने प्रफुल्लित हो!

5 परमेश्वर अपने पवित्र धाम में,
अनाथों का पिता और 2020 हो 2020 हो 2020 हो 2021 हो है।

6 परमेश्वर अनाथों का घर बसाता है; और बन्दियों को छुड़ाकर सम्पन्न करता है; परन्तु विद्रोहियों को सूखी भूमि पर रहना पड़ता है। ⁷हे परमेश्वर, जब तू अपनी प्रजा के आगे-आगे चलता था, जब तू निर्जल भूमि में सेना समेत चला,

(सेला)

8तब पृथ्वी काँप उठी,

और आकाश भी परमेश्वर के सामने टपकने लगा,

उधर सीनै पर्वत परमेश्वर, हाँ इस्राएल के परमेश्वर के सामने काँप उठा। (२१२१२१०). 12:26, १११११११. 5:4,5)

9 हे परमेश्वर, तूने बहुतायत की वर्षा की;

तेरा निज भाग तो बहुत सूखा था, परन्तु तूने उसको हरा भरा किया है;

¹⁰ तेरा झुण्ड उसमें बसने लगा;

हे परमेश्वर तूने अपनी भलाई से दीन जन के लिये तैयारी की है। 11 प्रभु आज्ञा देता है,

तब शुभ समाचार सुनानेवालियों की बड़ी सेना हो जाती है।

12 अपनी-अपनी सेना समेत राजा भागे चले जाते हैं,

और गृहस्थिन लूट को बाँट लेती है।

¹³क्या तुम भेड़शालाओं के बीच लेट जाओगे?

और ऐसी कबूतरी के समान होंगे जिसके पंख चाँदी से

और जिसके पर पीले सोने से मढ़े हुए हों?

14 जब सर्वशक्तिमान ने उसमें राजाओं को तितर-बितर किया, तब मानो सल्मोन पर्वत पर हिम पड़ा।

तब माना सल्मान पवत पर हिम पड़ा। 15 बाशान का पहाड़ परमेश्वर का पहाड़ है;

बाशान का पहाड़ बहुत शिखरवाला पहाड़ है।

¹⁶ परन्तु हे शिखरवाले पहाड़ों, तुम क्यों उस पर्वत को घूरते हो, जिसे परमेश्वर ने अपने वास के लिये चाहा है, और जहाँ यहोवा सदा वास किए रहेगा?

17 परमेश्वर के रथ बीस हजार, वरन् हजारों हजार हैं;
प्रभु उनके बीच में है,
जैसे वह सीनै पवित्रस्थान में है।

18 तू ऊँचे पर चढ़ा, तू लोगों को बँधुवाई में ले गया;
तूने मनुष्यों से, वरन् हठीले मनुष्यों से भी भेंटें लीं,
जिससे यहोवा परमेश्वर उनमें वास करे। (११११). 4:8)

19 धन्य है प्रभु, जो प्रतिदिन हमारा बोझ उठाता है;
वही हमारा उद्धारकर्ता परमेश्वर है।

(सेला)

25 गानेवाले आगे-आगे और तारवाले बाजों के बजानेवाले पीछे-पीछे गए,

चारों ओर् कुमारियाँ डफ बजाती थीं।

²⁶ सभाओं में परमेश्वर का,

हे इस्राएल के सोते से निकले हुए लोगों,

^{ं 68:20 @@@@@ @@@@@ @@@@@ @@ @@ @@ @@ @@:} अर्थात् एकमात्र वही है जो मृत्यु से बचा सकता है।

प्रभु का धन्यवाद करो।

27 पहला बिन्यामीन जो सबसे छोटा गोत्र है,
फिर यहूदा के हाकिम और उनकी सभा
और जबूलून और नप्ताली के हाकिम हैं।

28 तेरे परमेश्वर ने तेरी सामर्थ्य को बनाया है,

हे परमेश्वर, अपनी सामर्थ्य को हम पर प्रगट कर, जैसा तूने पहले प्रगट किया है।

29 तेरे मन्दिर के कारण जो यरूशलेम में हैं,

राजा तेरे लिये भेंट ले आएँगे।

30 नरकटों में रहनेवाले जंगली पशुओं को, सांडों के झुण्ड को और देश-देश के बछड़ों को झिड़क दे। वे चाँदी के टुकड़े लिये हुए प्रणाम करेंगे;

जो लोगे युद्ध से प्रसन्न रहते हैं, उनको उसने तितर-बितर किया है।

31 मिस्र से अधिकारी आएँगे;

कूशी अपने हाथों को परमेश्वर की ओर फुर्ती से फैलाएँगे।

32 हे पृथ्वी पर के राज्य-राज्य के लोगों परमेश्वर का गीत गाओ; प्रभु का भजन गाओ,

(सेला)

33 जो सबसे ऊँचे सनातन स्वर्ग में सवार होकर चलता है; देखो वह अपनी वाणी सुनाता है, वह गम्भीर वाणी शक्तिशाली है।

और उसकी सामर्थ्य आकाशमण्डल में है।

35 हे परमेश्वर, तू अपने पवित्रस्थानों में भययोग्य है,

इस्राएल का परमेश्वर ही अपनी प्रजा को सामर्थ्य और शक्ति का देनेवाला है। परमेश्वर धन्य है।

69

2222 222 22222 22 2222 2222

प्रधान बजानेवाले के लिये शोशन्तीम राग में दाऊद का गीत है परमेश्वर, मेरा उद्घार कर, मैं जल में डूबा जाता हूँ।

²मैं बड़े दलदल में धँसा जाता हूँ, और मेरे पैर कहीं नहीं रुकते; मैं गहरे जल में आ गया, और धारा में डूबा जाता हूँ।

3मैं पुकारते-पुकारते थक गया, मेरा गला सूख गया है; अपने परमेश्वर की बाट जोहते-जोहते, मेरी आँखें धुँधली पड़ गई हैं।

4जो अकारण मेरे बैरी हैं, वे गिनती में मेरे सिर के बालों से अधिक हैं:

मेरे विनाश करनेवाले जो व्यर्थ मेरे शत्रु हैं, वे सामर्थी हैं, इसलिए जो मैंने लूटा नहीं वह भी मुझ को देना पड़ा। (?????. 15:25, ???. 35:19)

5 हे परमेश्वर, तूं तो मेरी मूर्खता को जानता है, और मेरे दोष तुझ से छिपे नहीं हैं।

⁶ हे प्रभु, हे सेनाओं के यहोवा, जो तेरी बाट जोहते हैं, वे मेरे कारण लज्जित न हो:

हे इस्राएल के परमेश्वर, जो तुझे ढूँढ़ते हैं, वह मेरे कारण अपमानित न हो।

⁷ 2020 20 2020 2020 2020 2020 2020 2021 2021, और मेरा मुँह लज्जा से ढँपा है।

8मैं अपने भाइयों के सामने अजनबी हुआ,

^{* 69:7} 20202 202 202020 202022 202020202 2020 2020 2020 तरे सत्य की रक्षा करने में क्योंकि मेरी निन्दा हुई है क्योंकि मैंने स्वयं को परमेश्वर का मित्र माना है।

और अपने सगे भाइयों की दृष्टि में परदेशी ठहरा हूँ।

⁹ क्योंकि मैं तेरे भवन के निमित्त जलते-जलते भस्म हुआ,
और जो निन्दा वे तेरी करते हैं, वही निन्दा मुझ को सहनी पड़ी
है। (१११११८, 2:17, ११११९८, 15:3, १११९१९९८, 11:26)

10 जब मैं रोकर और उपवास करके दुःख उठाता था, तब उससे भी मेरी नामधराई ही हुई।

¹¹ जब मैं टाट का वस्त्र पहने था,

तब मेरा दृष्टान्त उनमें चलता था।

12 फाटक के पास बैठनेवाले मेरे विषय बातचीत करते हैं, और मदिरा पीनेवाले मुझ पर लगता हुआ गीत गाते हैं।

13 परन्तु हे यहोवा, मेरी प्रार्थना तो तेरी प्रसन्नता के समय में हो रही है;

हे परमेश्वर अपनी करुणा की बहुतायात से,

और बचाने की अपनी सच्ची प्रतिज्ञा के अनुसार मेरी सुन ले।

14 मुझ को दलदल में से उबार, कि मैं धँस न जाऊँ;

मैं अपने बैरियों से, और गहरे जल में से बच जाऊँ।

¹⁵ मैं धारा में डूब न जाऊँ,

और न मैं गहरे जल में डूब मरूँ,

और न पाताल का मुँह मेरे ऊपर बन्द हो।

16 हे यहोवा, मेरी सुन ले, क्योंकि तेरी करुणा उत्तम है; अपनी दया की बहुतायत के अनुसार मेरी ओर ध्यान दे।

¹⁷ अपने दास से अपना मुँह न मोड़;

क्योंकि मैं संकट में हूँ, फुर्ती से मेरी सुन ले।

¹⁸ मेरे निकट आकर मुझे छुड़ा ले,

मेरे शत्रुओं से मुझ को छुटकारा दे।

19 मेरी नामधराई और लज्जा और अनादर को तू जानता है: मेरे सब द्रोही तेरे सामने हैं। 20 मेरा हृदय नामधराई के कारण फट गया, और मैं बहुत उदास हूँ।

मैंने किसी तरस खानेवाले की आशा तो की, परन्तु किसी को न पाया,

और शान्ति देनेवाले ढूँढ़ता तो रहा, परन्तु कोई न मिला।

19:28,29)

22 उनका भोजन उनके लिये फंदा हो जाए;

और उनके सुख के समय जाल बन जाए।

23 उनकी आँखों पर अंधेरा छा जाए, ताकि वे देख न सके;

और तू उनकी कमर को निरन्तर कँपाता रह। (🛮 🗗 11:9,10)

24 उनके ऊपर अपना रोष भड़का,

और तेरे क्रोध की आँच उनको लगे। (????????. 16:1)

25 उनकी छावनी उजड़ जाए,

उनके डेरों में कोई न रहे। (????????. 1:20)

26 क्योंकि जिसको तूने मारा, वे उसके पीछे पड़े हैं,

और जिनको तूने घायल किया, वे उनकी पीड़ा की चर्चा करते हैं। (११११११). 53:4)

27 उनके अधर्म पर अधर्म बढा:

और वे तेरे धर्म को प्राप्त न करें।

28 उनका नाम जीवन की पुस्तक में से काटा जाए,

और धर्मियों के संग लिखा न जाए। (2222 10:20, 22222

3:5, ??????. 20:12,15, ??????. 21:27)

²⁹ परन्तु मैं तो दु:खी और पीड़ित हूँ,

[ं] 69:21 202022 202 202022 202022 202 2020222 202022 202022 202022 202022 202022 202022 202022 202022 202022 202022 202022 202022 202022 202022 202022 202022 202022 2020222 202022 202

इसलिए हे परमेश्वर, तू मेरा उद्धार करके मुझे ऊँचे स्थान पर 30 मैं गीत गांकर तेरे नाम की स्तुति करूँगा, और धन्यवाद करता हुआ तेरी बड़ाई करूँगा। 31 यह यहोवा को बैल से अधिक, वरन् सींग और खुरवाले बैल से भी अधिक भाएगा। 32 नम्र लोग इसे देखकर आनन्दित होंगे, हे परमेश्वर के खोजियों, 222222222 22 222 222 222 2 33 क्योंकि यहोवा दरिद्रों की ओर कान लगाता है, और अपने लोगों को जो बन्दी हैं तुच्छ नहीं जानता। 34 स्वर्ग और पृथ्वी उसकी स्तुति करें, और समुद्र अपने सब जीवजन्तुओं समेत उसकी स्तुति करे। 35 क्योंकि परमेश्वर सिय्योन का उद्धार करेगा, और यहदा के नगरों को फिर बसाएगा; और लोग फिर वहाँ बसकर उसके अधिकारी हो जाएँगे। 36 उसके दासों का वंश उसको अपने भाग में पाएगा, और उसके नाम के प्रेमी उसमें वास करेंगे।

70

प्रधान बजानेवाले के लिये: स्मरण कराने के लिये दाऊद का भजन ¹हे परमेश्वर, मुझे छुड़ाने के लिये, हे यहोवा, मेरी सहायता करने

के लिये फुर्ती कर!

2 जो मेरे प्राण के खोजी हैं,

202 202120212 202 2021202120212 202127*! जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं,

 $[\]div$ 69:32 <u>2020202020</u> 202 <u>2020</u> 202 <u>2020</u>: नवजीवन पाएगा, प्रोत्साहन पाएगा, बलवन्त होगा। ** 70:2 <u>202 20202020</u> 202 <u>2020202020</u> 202 <u>20202020</u> 202 <u>20202</u>: यह निश्चितता का अभिप्राय है कि वे लिज्जित किए जाएँगे, वे धूल में मिला दिए जाएँगे, अर्थात् वे सफल नहीं होंगे या उनके उद्देश्य विफल किए जाएँगे।

वे पीछे हटाए और निरादर किए जाएँ।

3 जो कहते हैं, "आहा, आहा!"

वे अपनी लज्जा के मारे उलटे फेरे जाएँ।

4 जितने तुझे ढूँढ़ते हैं, वे सब तेरे कारण हर्षित और आनन्दित हों! और जो तेरा उद्धार चाहते हैं, वे निरन्तर कहते रहें, "परमेश्वर की बड़ाई हो!"

5 मैं तो दीन और दिरद्र हूँ; हे परमेश्वर मेरे लिये फुर्ती कर! तू मेरा सहायक और छुड़ानेवाला है; हे यहोवा विलम्ब न कर!

71

¹हे यहोवा, मैं तेरा शरणागत हूँ;

मुझे लज्जित न होने दे।

2तू तो धर्मी है, मुझे छुड़ा और मेरा उद्धार कर;

मेरी ओर कान लगा, और मेरा उद्धार कर।

³मेरे लिये सनातन काल की चट्टान का धाम बन, जिसमें मैं नित्य जा सकूँ;

तूने मेरे उद्धार की आज्ञा तो दी है,

क्योंकि तु मेरी चट्टान और मेरा गढ़ ठहरा है।

4 हे मेरे परमेश्वर, दुष्ट के

और कुटिल और क्रूर मनुष्य के हाथ से मेरी रक्षा कर।

5 क्योंकि हे प्रभु यहोवा, मैं तेरी ही बाट जोहता आया हूँ;

बचपन से मेरा आधार तू है।

6मैं गर्भ से निकलते ही, तेरे द्वारा सम्भाला गया;

इसलिए मैं नित्य तेरी स्तुति करता रहुँगा। ⁷मैं बहुतों के लिये चमत्कार बना हुँ; परन्तु तू मेरा दृढ़ शरणस्थान है। 8 मेरे मुँह से तेरे गुणानुवाद, और दिन भर तेरी शोभा का वर्णन बहुत हुआ करे। 9 बुढ़ापे के समय मेरा त्याग न कर; जब मेरा बल घटे तब मुझ को छोड़ न दे। 10 क्योंकि मेरे शत्रु मेरे विषय बातें करते हैं, और जो मेरे प्राण की ताक में हैं, वे आपस में यह सम्मति करते हैं कि 11 परमेश्वर ने उसको छोड़ दिया है; उसका पीछा करके उसे पकड़ लो, क्योंकि उसका कोई छड़ानेवाला नहीं। 12 हे परमेश्वर, मुझसे दूर न रह; हे मेरे परमेश्वर, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर! 13 जो मेरे प्राण के विरोधी हैं, वे लज्जित हो और उनका अन्त हो जाए; जो मेरी हानि के अभिलाषी हैं, वे नामधराई और अनादर में गड़ जाएँ। ¹⁴मैं तो निरन्तर आशा लगाए रहँगा, और तेरी स्तुति अधिकाधिक करता जाऊँगा। ¹⁵ मैं अपने मुँह से तेरी धार्मिकता का, और तेरे किए हुए उद्धार का वर्णन दिन भर करता रहुँगा, क्योंकि उनका पुरा ब्योरा मेरी समझ से परे है।

^{* 71:6 @@@@ @@@ @@ @@ @@ @@ @@ @@@@@@@} यहाँ कहने का अर्थ है कि परमेश्वर ने उसे उसके आरम्भिक वर्षों से ही उसे सम्भाला है, उसने उसकी रक्षा करने में अपना सामर्थ्य प्रगट किया है।

16 मैं प्रभु यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन करता हुआ आऊँगा,

मैं केवल तेरी ही धार्मिकता की चर्चा किया करूँगा।

17 हे परमेश्वर, तू तो मुझ को बचपन ही से सिखाता आया है,

और अब तक मैं तेरे आश्चर्यकर्मों का प्रचार करता आया हुँ।

18 इसलिए हे परमेश्वर जब मैं बूढ़ा हो जाऊँ

और मेरे बाल पक जाएँ, तब भी तू मुझे न छोड़,

जब तक मैं आनेवाली पीढ़ी के लोगों को

तेरा बाहुबल और सब उत्पन्न होनेवालों को तेरा पराऋम सुनाऊँ।

19 हे परमेश्वर, तेरी धार्मिकता अति महान है। तू जिसने महाकार्य किए हैं,

हे परमेश्वर तेरे तुल्य कौन है?

20 तूने तो हमको बहुत से कठिन कष्ट दिखाए हैं

परन्तु अब तू फिर से हमको जिलाएगा;

और <u>222222 22 2222 2222 2222 2222</u> 1 21 <u>22 2222 22222 222222</u> 22 22222222;

और फिरकर मुझे शान्ति देगा।

²² हे मेरे परमेश्वर,

मैं भी तेरी सच्चाई का धन्यवाद सारंगी बजाकर गाऊँगा; हे इस्राएल के पवित्र मैं वीणा बजाकर तेरा भजन गाऊँगा।

23 जब मैं तेरा भजन गाऊँगा, तब अपने मुँह से

और अपने प्राण से भी जो तूने बचा लिया है, जयजयकार करूँगा।

24 और मैं तेरे धार्मिकता की चर्चा दिन भर करता रहूँगा;

क्योंकि जो मेरी हानि के अभिलाषी थे, वे लज्जित और अपमानित हए।

72

सुलैमान का गीत

1 हे परमेश्वर, राजा को अपना नियम बता,

राजपुत्र को अपनी धार्मिकता सिखला!

2 वह तेरी प्रजा का न्याय धार्मिकता से,

और तेरे दीन लोगों का न्याय ठीक-ठीक चुकाएगा। (22/22/22) 25:31-34, (2/21/21/22). 17:31, (2/21/22). 14:10, 2

?!?!?!?. 5:10)

³ पहाड़ों और पहाड़ियों से प्रजा के लिये, धार्मिकता के द्वारा शान्ति मिला करेगी

4 वह प्रजा के दीन लोगों का न्याय करेगा, और दिरद्र लोगों को बचाएगा;

और <u>22222222 22222222</u> 22 222 22222^{*}। **(222.**

⁵ जब तक सूर्य और चन्द्रमा बने रहेंगे तब तक लोग पीढ़ी-पीढ़ी तेरा भय मानते रहेंगे। ⁶ वह घास की खूँटी पर बरसने वाले मेंह, और भूमि सींचने वाली झड़ियों के समान होगा। ⁷ उसके दिनों में धर्मी फूले फलेंगे, और जब तक चन्द्रमा बना रहेगा, तब तक शान्ति बहुत रहेगी।

8 वह समुद्र से समुद्र तक

और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा।

⁹ उसके सामने जंगल के रहनेवाले घुटने टेकेंगे,

और उसके शत्रु मिट्टी चाटेंगे।

10 तर्शीश और द्वीप-द्वीप के राजा भेंट ले आएँगे, शेबा और सबा दोनों के राजा उपहार पहुँचाएगे।

^{* 72:4 @@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@@} जो मनुष्यों पर अत्याचार करते हैं उन्हें वह दबा देगा या नष्ट कर देगा।

12 क्यों कि वह दुहाई देनेवाले दरिद्र का,

और दु:खी और असहाय मनुष्य का उद्घार करेगा।

¹³वह कंगाल और दरिद्र पर तरस खाएगा,

और दरिद्रों के प्राणों को बचाएगा।

14 वह उनके प्राणों को अत्याचार और उपद्रव से छुड़ा लेगा;

15 वह तो जीवित रहेगा और शेबा के सोने में से उसको दिया जाएगा।

लोग उसके लिये नित्य प्रार्थना करेंगे;

और दिन भर उसको धन्य कहते रहेंगे।

¹⁶ देश में पहाड़ों की चोटियों पर बहुत सा अन्न होगा;

जिसकी बालें लबानोन के देवदारों के समान झूमेंगी;

और नगर के लोग घास के समान लहलहाएँगे।

¹⁷ उसका नाम सदा सर्वदा बना रहेगा;

जब तक सूर्य बना रहेगा, तब तक उसका नाम नित्य नया होता रहेगा,

और लोग अपने को उसके कारण धन्य गिनेंगे, सारी जातियाँ उसको धन्य कहेंगी।

18 धन्य है यहोवा परमेश्वर, जो इस्राएल का परमेश्वर है;

आश्चर्यकर्म केवल वही करता है। (???. 136:4)

¹⁹ उसका महिमायुक्त नाम सर्वदा धन्य रहेगा;

और सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण होगी।

आमीन फिर आमीन।

20 यिशै के पुत्र दाऊद की प्रार्थना समाप्त हुई।

तीसरा भाग

73

???. 73-89

आसाप का भजन

1 सचमुच इस्राएल के लिये अर्थात् शुद्ध मनवालों के लिये परमेश्वर भला है।

2 मेरे डगू तो उखड़ना चाहते थे,

मेरे डग फिसलने ही पर थे।

3 क्योंकि जब मैं दुष्टों का कुशल देखता था,

तब उन घमण्डियों के विषय डाह करता था।

4 क्योंकि उनकी मृत्यु में वेदनाएँ नहीं होतीं,

परन्तु उनका बल अटूट रहता है।

5 उनको दूसरे मनुष्यों के समान कष्ट नहीं होता; और अन्य मनुष्यों के समान उन पर विपत्ति नहीं पड़ती।

⁶ इस कारण अहंकार उनके गले का हार बना है;

उनका ओढ़ना उपद्रव है।

7 उनकी आँखें चर्बी से झलकती हैं,

उनके मन की भावनाएँ उमड़ती हैं।

⁸ वे ठट्ठा मारते हैं, और दुष्टता से हिंसा की बात बोलते हैं;

वे डींग मारते हैं।

और वे पृथ्वी में बोलते फिरते हैं।

10 इसलिए उसकी प्रजा इधर लौट आएगी, और उनको भरे हुए प्याले का जल मिलेगा।

^{* 73:9} 2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 के ऐसे बातें करते हैं कि मानो वे स्वर्ग में विराजमान हैं, जैसे कि मानो वे अधिकार सम्पन्न हैं।

¹¹ फिर वे कहते हैं, "परमेश्वर कैसे जानता है? क्या परमप्रधान को कुछ ज्ञान है?" 12 देखो, ये तो दुष्ट लोग हैं; तो भी सदा आराम से रहकर, धन-सम्पत्ति बटोरते रहते हैं। 13 निश्चय, मैंने अपने हृदय को व्यर्थ शुद्ध किया और अपने हाथों को निर्दोषता में धोया है; ¹⁴ क्योंकि मैं दिन भर मार खाता आया ह और प्रति भोर को मेरी ताड़ना होती आई है। 15 यदि मैंने कहा होता, "मैं ऐसा कहँगा", तो देख मैं तेरे सन्तानों की पीढ़ी के साथ छल करता। ¹⁶ जब मैं सोचने लगा कि इसे मैं कैसे समझँ, तो यह मेरी दृष्टि में अति कठिन समस्या थी, 17 जब तक कि मैंने परमेश्वर के पवित्रस्थान में जाकर उन लोगों के परिणाम को न सोचा। 18 निश्चय तु उन्हें फिसलनेवाले स्थानों में रखता है; और गिराकर सत्यानाश कर देता है। 19 वे क्षण भर में कैसे उजड़ गए हैं! वे मिट गए, वे घबराते-घबराते नाश हो गए हैं। 20 जैसे जागनेवाला स्वप्न को तुच्छ जानता है, वैसे ही हे प्रभु जब तू उठेगा, तब उनको छाया सा समझकर तुच्छ जानेगा। 21 मेरा मन तो कड़वा हो गया था, मेरा अन्तः करण छिद गया था, 22 मैं अबोध और नासमझ था, में तेरे सम्मुख 22222 222 22 222 221 221 1

23 तो भी मैं निरन्तर तेरे संग ही था; तुने मेरे दाहिने हाथ को पकड़ रखा।

^{ं 73:22 @@@@@ @@@ @@@@@@ @@:} अर्थात् वह मूर्ख और निर्वृद्धि था और उसमें स्थिति की समझ ही नहीं थी। शत्रुओं के हाथों में पड़ने नहीं देगा।

24 तू सम्मित देता हुआ, मेरी अगुआई करेगा,
और तब मेरी महिमा करके मुझ को अपने पास रखेगा।
25 स्वर्ग में मेरा और कौन है?
तेरे संग रहते हुए मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता।
26 मेरे हृदय और मन दोनों तो हार गए हैं,
परन्तु परमेश्वर सर्वदा के लिये मेरा भाग
और मेरे हृदय की चट्टान बना है।
27 जो तुझ से दूर रहते हैं वे तो नाश होंगे;
जो कोई तेरे विरुद्ध व्यभिचार करता है, उसको तू विनाश करता
है।
28 परन्तु परमेश्वर के समीप रहना, यही मेरे लिये भला है;

जिससे मैं तेरे सब कामों को वर्णन करूँ।

74

मैंने प्रभु यहोवा को अपना शरणस्थान माना है,

2 अपनी मण्डली को *2022 2022 2022 2022 2022 2022 2022* 2022 2022

और अपने निज भाग का गोत्र होने के लिये छुड़ा लिया था, और इस सिय्योन पर्वत को भी, जिस पर तूने वास किया था, स्मरण कर! (???????. 32:9, ????????. 10:16, ??????????. 20:28)

³ अपने डग अनन्त खण्डहरों की ओर बढ़ा;

अर्थात् उन सब बुराइयों की ओर जो शत्रु ने पवित्रस्थान में की हैं।

⁴तेरे द्रोही तेरे पवित्रस्थान के बीच गर्जते रहे हैं; उन्होंने अपनी ही ध्वजाओं को चिन्ह ठहराया है।

5 वे उन मनुष्यों के समान थे

जो घने वन के पेड़ों पर कुल्हाड़े चलाते हैं;

6 और अब वे उस भवन की नक्काशी को,

कुल्हाड़ियों और हथौड़ों से बिल्कुल तोड़े डालते हैं। ⁷ उन्होंने तेरे पवित्रस्थान को आग में झोंक दिया है,

और तेरे नाम के निवास को गिराकर अशुद्ध कर डाला है।

8 उन्होंने मन में कहा है, "हम इनको एकदम दबा दें।"

उन्होंने इस देश में परमेश्वर के सब सभास्थानों को फूँक दिया है।

⁹ हमको अब परमेश्वर के कोई अद्भुत चिन्ह दिखाई नहीं देते; अब कोई नबी नहीं रहा,

न हमारे बीच कोई जानता है कि कब तक यह दशा रहेगी।

10 हे परमेश्वर द्रोही कब तक नामधराई करता रहेगा? क्या शत्रु, तेरे नाम की निन्दा सदा करता रहेगा?

 11 त् अपना दाहिना हाथ क्यों रोके रहता है?

उसे अपने पंजर से निकालकर उनका अन्त कर दे।

12 परमेश्वर तो प्राचीनकाल से मेरा राजा है,

वह पृथ्वी पर उद्धार के काम करता आया है।

13 तूने तो अपनी शक्ति से समुद्र को दो भागकर दिया;

14 तूने तो लिव्यातान के सिरों को टुकड़े-टुकड़े करके जंगली जन्तुओं को खिला दिए।

^{ं 74:13 2020 20 20202020 20202020 20202020 202020 202020 202020 202020:} यह परमेश्वर की परमशक्ति के संदर्भ में है जब इस्राएल समुद्र से पार हो रहा था तब उसने उसका प्रदर्शन किया था। उनके मार्ग में बाधक गहरे समुद्र के सब विशाल जलचरों को उसने नष्ट कर दिया था।

¹⁵ तुने तो सोता खोलकर जल की धारा बहाई, तूने तो बारहमासी नदियों को सूखा डाला। 16 दिन तेरा है रात भी तेरी है; सूर्य और चन्द्रमा को तुने स्थिर किया है। 17 तुने तो पृथ्वी की सब सीमाओं को ठहराया; धूपकाल और सर्दी दोनों तूने ठहराए हैं। 18 हे यहोवा, स्मरण कर कि शत्रु ने नामधराई की है, और मूर्ख लोगों ने तेरे नाम की निन्दा की है। अपने दीन जनों को सदा के लिये न भूल 20 अपनी वाचा की सुधि ले; क्योंकि देश के अंधेरे स्थान अत्याचार के घरों से भरपूर हैं।

21 पिसे हुए जन को अपमानित होकर लौटना न पड़े; दीन और दरिद्र लोग तेरे नाम की स्तुति करने पाएँ। (21%)

103:6)

22 हे परमेश्वर, उठ, अपना मुकद्दमा आप ही लड़; तेरी जो नामधराई मूर्ख द्वारा दिन भर होती रहती है, उसे स्मरण कर।

23 अपने द्रोहियों का बड़ा बोल न भूल, तेरे विरोधियों का कोलाहल तो निरन्तर उठता रहता है।

75

[2000] [2

प्रधान बजानेवाले के लिये: अलतशहेत राग में आसाप का भजन। गीत।

परमेश्वर के प्रेमी जनों की प्रार्थना है कि वह उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ में नहीं देगा।

1 हे परमेश्वर हम तेरा धन्यवाद करते, हम तेरा नाम धन्यवाद करते हैं;

क्योंकि <u>शिशशिश शिशशिश शिशशिश</u> शिश्य शिश्य शिश्य अवर्यकर्मी का वर्णन हो रहा है।

² जब ठीक समय ओएगा

तब मैं आप ही ठीक-ठीक न्याय करूँगा।

³ जब पृथ्वी अपने सब रहनेवालों समेत डोल रही है, तब मैं ही उसके खम्भों को स्थिर करता हूँ।

(सेला)

4मैंने घमण्डियों से कहा, "घमण्ड मत करो," और दुष्टों से, "सींग ऊँचा मत करो;

5 अपना सींग बहत ऊँचा मत करो,

न सिर उठाकर ढिठाई की बात बोलो।"

6 क्योंकि बढ़ती न तो पूरब से न पश्चिम से,

और न जंगल की ओर से आती है;

7 परन्तु प्रमेश्वर ही न्यायी है,

वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है।

⁸यहोवा के हाथ में एक कटोरा है, जिसमें का दाखमधु झागवाला है;

🏿 🖺 🖺 🖺 🖺 🌣 🌣 🏥 🏖 🏗 🌣 🏚 🌣 🌣 🌣 🌣 🌣 🏚 🏚 १ वह उसमें से उण्डेलता है,

⁹ परन्तु मैं तो सदा प्रचार करता रहूँगा, मैं याकुब के परमेश्वर का भजन गाऊँगा।

10 दुष्टों के सब सींगों को मैं काट डालूँगा, परन्तु धर्मी के सींग ऊँचे किए जाएँगे।

76

प्रधान बजानेवाले के लिये: तारवाले बाजों के साथ, आसाप का भजन, गीत

1 परमेश्वर यहदा में जाना गया है,

उसका नाम इस्राएल में महान हुआ है।

2 और उसका मण्डूप शालेम् में,

और उसका धाम सिय्योन में है।

3वहाँ उसने तीरों को,

ढाल, तलवार को और युद्ध के अन्य हथियारों को तोड़ डाला। (सेला)

 4 हे परमेश्वर, तू तो ज्योतिर्मय है:

क्ह परमश्वर, तू ता ज्यातिमय ह: तू अहेर से भरे हुए पहाड़ों से अधिक उत्तम और महान है।

⁵ दृढ़ मनवाले लुट गए, और भारी नींद में पड़े हैं;

और श्रवीरों में से किसी का हाथ न चला।

6हे याकूब के परमेश्वर, तेरी घुड़की से,

रथों समेत घोड़े भारी नींद में पड़े हैं।

7 केवल तू ही भययोग्य है;

और जब तू क्रोध करने लगे, तब तेरे सामने कौन खड़ा रह सकेगा?

8तूने स्वर्ग से निर्णय सुनाया है;

पृथ्वी उस समय सुनकर डर गई, और चुप रही,

^{* 76:9 2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2:} अर्थात् जब वह अपनी प्रजा के शत्रुओं को उखाड़ फेंकने और नष्ट करने आया जैसा इस भजन के पूर्वोक्त अंश में व्यक्त है।

(सेला)

 10 निश्चय मनुष्य की जलजलाहट तेरी स्तुति का कारण हो जाएगी,

और जो जलजलाहट रह जाए, उसको तू रोकेगा।

11 अपने परमेश्वर यहोवा की मन्नत मानो, और पुरी भी करो;

22 22 22 22 22 22 22 22 22 24, उसके आस-पास के सब उसके लिये भेंट ले आएँ।

12 वह तो प्रधानों का अभिमान मिटा देगा; वह पृथ्वी के राजाओं को भययोग्य जान पड़ता है।

77

1मैं परमेश्वर की दुहाई चिल्ला चिल्लाकर दुँगा, मैं परमेश्वर की दुहाई दुँगा, और वह मेरी ओर कान लगाएगा। 2 संकट के दिन मैं प्रभु की खोज में लगा रहा; रात को मेरा हाथ फैला रहा, और ढीला न हुआ,

³ मैं परमेश्वर का स्मरण कर करके कराहता हँ; मैं चिन्ता करते-करते मुर्छित हो चला हँ।

(सेला)

4त् मुझे झपकी लगने नहीं देता; मैं ऐसा घबराया हूँ कि मेरे मुँह से बात नहीं निकलती। 5 मैंने प्राचीनकाल के दिनों को, और युग-युग के वर्षों को सोचा है।

[†] 76:11 22 22 22 22 22 22 22 22 यह भय उत्पन्न करने के लिए नहीं है कि भेंटे चढ़ाई जाएँ परन्तु वे इसलिए चढ़ाई जाएँ कि उसने प्रगट कर दिया कि वही भय और श्रद्धा के योग्य है। * 77:2 200 200 200 200 20 20 20 20 20 20 मुझे शान्ति देनेवाली जितनी बातें मेरे मन में उभरी उन सब को मैंने त्याग दिया।

6मैं रात के समय अपने गीत को स्मरण करता; और मन में ध्यान करता हूँ,

और मन में भली भाँति विचार करता हुँ:

7 "क्या प्रभु युग-युग के लिये मुझे छोड़ देगा; और फिर कभी प्रसन्न न होगा?

अर निरंपना प्रसन्न गर्हानाः ⁸क्या उसकी करुणा सदा के लिये जाती रही?

क्या उसका वचन पीढ़ी-पीढ़ी के लिये निष्फल हो गया है?

⁹ क्या परमेश्वर अनुग्रह करना भूल गया?

क्या उसने क्रोध करके अपनी सब दया को रोक रखा है?"

(सेला)

10 मैंने कहा, "यह तो मेरा दुःख है, कि परमप्रधान का दाहिना हाथ बदल गया है।"

11 मैं यहोवा के बड़े कामों की चर्चा करूँगा;

निश्चय मैं तेरे प्राचीनकालवाले अद्भुत कामों को स्मरण करूँगा।

¹² मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करूँगा,

और तेरे बड़े कामों को सोचुँगा।

13 हे परमेश्वर तेरी गति पवित्रता की है।

कौन सा देवता परमेश्वर के तुल्य बड़ा है?

14 अद्भुत काम करनेवाला परमेश्वर तू ही है, तूने देश-देश के लोगों पर अपनी शक्ति प्रगट की है।

¹⁵ तूने अपने भुजबल से अपनी प्रजा,

याकूब और यूसुफ के वंश को छुड़ा लिया है।

(सेला)

[†] 77:16 222222 22 2222 2222 लाल सागर और यरदन नदी।

आकाश से शब्द हुआ; फिर तेरे तीर इधर-उधर चले। 18 बवंडर में तेरे गरजने का शब्द सुन पड़ा था; जगत बिजली से प्रकाशित हुआ; पृथ्वी काँपी और हिल गई। ¹⁹ तेरा मार्ग समुद्र में है, और तेरा रास्ता गहरे जल में हुआ; और तेरे पाँवों के चिन्ह मालूम नहीं होते। 20 तूने मूसा और हारून के द्वारा, अपनी प्रजा की अगुआई भेड़ों की सी की।

78

आसाप का मश्कील

¹हे मेरे लोगों, मेरी शिक्षा सुनो;

मेरे वचनों की ओर कान लगाओ!

[?][?] [?][?][?] [?][?][?][?][?][?][*;

³ जिन बातों को हमने सुना, और जान लिया,

और हमारे बापदादों ने हम से वर्णन किया है।

4 उन्हें हम उनकी सन्तान से गुप्त न रखेंगे,

परन्तु होनहार पीढ़ी के लोगों से,

यहोवा का गुणानुवाद और उसकी सामर्थ्य

और आश्चर्यकर्मों का वर्णन करेंगे। (??????. 4:9, ????. 4:6,7, **????. 6:4)**

5 उसने तो याकुब में एक चितौनी ठहराई,

^{* 78:2} १९२२ १९२० १९२०२ १९२०२००० १०००० १०००० १०००० १०००० व्याप्त । यहाँ नीतिवचन: का अर्थ है उपमा देकर या तुलना करके कहना।

और इस्राएल में एक व्यवस्था चलाई, जिसके विष्य उसने हमारे पितरों को आज्ञा दी,

कि तुम इन्हें अपने-अपने बाल-बच्चों को बताना;

6 कि आनेवाली पीढ़ी के लोग, अर्थात् जो बच्चे उत्पन्न होनेवाले हैं, वे इन्हें जानें;

और अपने-अपने बाल-बच्चों से इनका बखान करने में उद्यत हों,

⁷ जिससे वे परमेश्वर का भरोसा रखें, परमेश्वर के बड़े कामों को भूल न जाएँ,

परन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें;

8 और अपने पितरों के समान न हों,

क्योंकि उस पीढ़ी के लोग तो हठीले और झगड़ालू थे,

और उन्होंने अपना मन स्थिर न किया था,

और न उनकी आत्मा परमेश्वर की ओर सच्ची रही। (2 🕅 📆 🖰 .

⁹ एप्रैमियों ने तो शस्त्रधारी और धनुर्धारी होने पर भी, युद्ध के समय पीठ दिखा दी।

10 उन्होंने परमेश्वर की वाचा पूरी नहीं की,

और उसकी व्यवस्था पर चलने से इन्कार किया।

11 उन्होंने उसके बड़े कामों को और जो आश्चर्यकर्म उसने उनके सामने किए थे,

उनको भुला दिया।

12 उसने तो उनके बापदादों के सम्मुख मिस्र देश के सोअन के मैदान में अद्भुत कर्म किए थे।

 13 उसने समुद्र को दो भाग करके उन्हें पार कर दिया,

और जल को ढेर के समान खड़ा कर दिया।

14 उसने दिन को बादल के खम्भे से

और रात भर अग्नि के प्रकाश के द्वारा उनकी अगुआई की।

¹⁵ वह जंगल में चट्टानें फाड़कर,

¹⁶ उसने चट्टान से भी धाराएँ निकालीं

और नदियों का सा जल बहाया।

17 तो भी वे फिर उसके विरुद्ध अधिक पाप करते गए,

और निर्जल देश में परमप्रधान के विरुद्ध उठते रहे।

¹⁹ वे परमेश्वर के विरुद्ध बोले,

और कहने लगे, "क्या परमेश्वर जंगल में मेज लगा सकता है?

²⁰ उसने चट्टान पर मारकर जल बहा तो दिया,

और धाराएँ उमड़ चली,

परन्तु क्या वह रोटी भी दे सकता है?

क्या वह अपनी प्रजा के लिये माँस भी तैयार कर सकता?"

21 यहोवा सुनकर ऋोध से भर गया,

तब याकूब के विरुद्ध उसकी आग भड़क उठी,

और इस्राएल के विरुद्ध क्रोध भड़का;

22 इसलिए कि उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास नहीं रखा था,

न उसकी उद्धार करने की शक्ति पर भरोसा किया।

23 तो भी उसने आकाश को आज्ञा दी,

और स्वर्ग के द्वारों को खोला;

24 और उनके लिये खाने को मन्ना बरसाया,

और उन्हें स्वर्ग का अन्न दिया। (22/21/21/22). 16:4, 22/21/22. 6:31)

²⁵ मनुष्यों को स्वर्गदूतों की रोटी मिली;

उसने उनको मनम्।ना भोजून दिया।

²⁶ उसने आकाश में पुरवाई को चलाया,

और अपनी शक्ति से दक्षिणी बहाई;

^{ं 78:18 22 22 22 22 2222222222 22 2222222 22} बुराई की जड़ मन में रहती है। उन्होंने अपनी लालसा की वस्तु माँगी और उनके मन में कुड़कुड़ाना और शिकायत करना था।

²⁷ और उनके लिये माँस धूलि के समान बहुत बरसाया, और समुद्र के रेत के समान अनगिनत पक्षी भेजे; 28 और उनकी छावनी के बीच में, उनके निवासों के चारों ओर गिराए। ²⁹ और वे खाकर अति तृप्त हुए, और उसने उनकी कामना पूरी की। 30 उनकी कामना बनी ही रही, उनका भोजन उनके मुँह ही में था, 31 कि परमेश्वर का ऋोध उन पर भड़का. और उसने उनके हष्टपुष्टों को घात किया, और इस्राएल के जवानों को गिरा दिया। (1 🛮 🗗 🗗 10:5) 32 इतने पर भी वे और अधिक पाप करते गए; और परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों पर विश्वास न किया। 33 तब उसने उनके दिनों को व्यर्थ श्रम में, और उनके वर्षों को घबराहट में कटवाया। 34 22 22 22222 222 222 222 222 222 24, तब वे उसको पूछते थे: और फिरकर परमेश्वर को यत्न से खोजते थे। ³⁵ उनको स्मरण होता था कि परमेश्वर हमारी चट्टान है,

और परमप्रधान परमेश्वर हमारा छुड़ानेवाला है।

36 तो भी उन्होंने उसकी चापलूसी की;

वे उससे झठ बोले।

37 क्योंकि उनका हृदय उसकी ओर दृढ़ न था; न वे उसकी वाचा के विषय सच्चे थे। (?????????. 8:21)

38 परन्तु वह जो दयालु है, वह अधर्म को ढाँपता, और नाश नहीं करता;

वह बार बार अपने क्रोध को ठंडा करता है,

^{÷ 78:34 2/2 2/2 2/2/2/2/2/2 2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2:} जब उसने क्रोधित होकर महामारी, साँपों और शत्रुओं के द्वारा उनका विनाश किया।

और अपनी जलजलाहट को पूरी रीति से भड़कने नहीं देता। 39 उसको स्मरण हुआ कि ये नाशवान हैं, ये वायु के समान हैं जो चली जाती और लौट नहीं आती। 40 उन्होंने कितनी ही बार जंगल में उससे बलवा किया, और निर्जल देश में उसको उदास किया! 41 वे बार बार परमेश्वर की परीक्षा करते थे, और इस्राएल के पवित्र को खेदित करते थे। 42 उन्होंने न तो उसका भुजबल स्मरण किया, न वह दिन जब उसने उनको द्रोही के वश से छुड़ाया था; 43 कि उसने कैसे अपने चिन्ह मिस्र में, और अपने चमत्कार सोअन के मैदान में किए थे। 44 उसने तो मिस्रियों की निदयों को लहू बना डाला, और वे अपनी निदयों का जल पी न सके। (????????. 16:4) 45 उसने उनके बीच में डांस भेजे जिन्होंने उन्हें काट खाया, और मेंद्रक भी भेजे, जिन्होंने उनका बिगाड़ किया। 46 उसने उनकी भूमि की उपज कीड़ों को, और उनकी खेतीबारी टिड्डियों को खिला दी थी। 47 उसने उनकी दाखलताओं को ओलों से, और उनके गुलर के पेड़ों को ओले बरसाकर नाश किया। 48 उसने उनके पशुओं को ओलों से, और उनके ढोरों को बिजलियों से मिटा दिया। ⁴⁹ उसने उनके ऊपर अपना प्रचण्ड क्रोध और रोष भड़काया, और उन्हें संकट में डाला, और दुःखदाई दूतों का दल भेजा। 50 उसने अपने क्रोध का मार्ग खोला. और उनके प्राणों को मृत्यु से न बचाया, परन्तु उनको मरी के वश में कर दिया। 51 उसने मिस्र के सब पहिलौठों को मारा,

जो हाम के डेरों में पौरूष के पहले फल थे;

52 परन्तु अपनी प्रजा को भेड़-बकरियों के समान प्रस्थान कराया, और जंगल में उनकी अगुआई पशुओं के झुण्ड की सी की। 53 वह के उसके चलाने से बेस्टके चले और उनको कुछ भग न

53 तब वे उसके चलाने से बेखटके चले और उनको कुछ भय न हुआ,

परन्तु उनके शत्रु समुद्र में डूब गए।

54 और उसने उनको अपने पवित्र देश की सीमा तक,

इसी पहाड़ी देश में पहुँचाया, जो उसने अपने दाहिने हाथ से

प्राप्त किया था। ⁵⁵ उसने उनके सामने से अन्यजातियों को भगा दिया;

और उनकी भूमि को डोरी से माप-मापकर बाँट दिया;

और इस्राएल के गोत्रों को उनके डेरों में बसाया।

56 तो भी उन्होंने परमप्रधान परमेश्वर की परीक्षा की और उससे बलवा किया,

और उसकी चितौनियों को न माना,

57 और मुड़कर अपने पुरखाओं के समान विश्वासघात किया;

उन्होंने निकम्मे धनुष के समान धोखा दिया।

58 क्योंकि उन्होंने ऊँचे स्थान बनाकर उसको रिस दिलाई,

और खुदी हुई मूर्तियों के द्वारा उसमें से जलन उपजाई।

⁵⁹ परमेश्वर सुनकर रोष से भर गया,

और उसने इस्राएल को बिल्कुल तज दिया।

60 उसने शीलो के निवास,

अर्थात् उस तम्बू को जो उसने मनुष्यों के बीच खड़ा किया था, त्याग दिया,

61 और अपनी सामर्थ्य को बँधुवाई में जाने दिया,

और अपनी शोभा को द्रोही के वश में कर दिया।

⁶² उसने अपूनी प्रजा को तलवार से म्रवा दिया,

और अपने निज भाग के विरुद्ध रोष से भर गया।

63 उनके जवान आग से भस्म हुए,

और उनकी कुमारियों के विवाह के गीत न गाएँ गए।

 64 उनके याजक तलवार से मारे गए, और उनकी विधवाएँ रोने न पाई।

65 27 2722 2722 222 222\$,

और ऐसे वीर के समान उठा जो दाखमधु पीकर ललकारता हो।

66 उसने अपने द्रोहियों को मारकर पीछे हटा दिया;

और उनकी सदा की नामधराई कराई।

67 फिर उसने यूसुफ के तम्बू को तज दिया;

और एप्रैम के गोत्र को न चुना;

68 परन्तु यहदा ही के गोत्र को,

और अपने प्रिय सिय्योन पर्वत को चुन लिया।

69 उसने अपने पवित्रस्थान को बहुत ऊँचा बना दिया,

और पृथ्वी के समान स्थिर बनाया, जिसकी नींव उसने सदा के लिये डाली है।

70 फिर उसने अपने दास दाऊद को चुनकर भेड़शालाओं में से ले लिया;

71 वह उसको बच्चेवाली भेड़ों के पीछे-पीछे फिरने से ले आया कि वह उसकी प्रजा याकूब की अर्थात् उसके निज भाग इस्राएल की चरवाही करे।

72 तब उसने खरे मन से उनकी चरवाही की, और अपने हाथ की कुशलता से उनकी अगुआई की।

79

222222 22 22222 22 22222222

आसाप् का भजन

1 हे परमेश्वर, अन्यजातियाँ तेरे निज भाग में घुस आई; उन्होंने तेरे पवित्र मन्दिर को अशुद्ध किया;

^{\$}S\$ 78:65 (2) (2000) (2000) (2000) (2000) (2000) (2000) ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो परमेश्वर सो रहा है या घटनाओं के प्रति अनिभिज्ञ है। वह अकस्मात ही भड़क उठा कि उसकी प्रजा के शतुओं से बदला ले।

और यरूशलेम को खण्डहर कर दिया है। (?????? 21:24, ???????. 11:2)

² उन्होंने तेरे दासों की शवों को आकाश के पिक्षयों का आहार कर दिया,

और तेरे भक्तों का माँस पृथ्वी के वन-पशुओं को खिला दिया है।

³ उन्होंने उनका लहू यरूशलेम के चारों ओर जल के समान बहाया,

और उनको मिट्टी देनेवाला कोई न था। (????????. 16:6)

4पड़ोसियों के बीच हमारी नामधराई हुई;

चारों ओर के रहनेवाले हम पर हँसते, और ठट्टा करते हैं।

5 🛮 🗗 🗗 🖎 🖎 🖎 🖎 १ व्या तू सदा के लिए ऋोधित रहेगा?

तुझ में आग की सी जलन कब तक भड़कती रहेगी?

6 जो जातियाँ तुझको नहीं जानती,

और जिन राज्यों के लोग तुझ से प्रार्थना नहीं करते,

उन्हीं पर अपनी सब जलजलाहट भड़का! (1 <u>शिशिशिश</u>. 4:5, 2

⁷ क्योंकि उन्होंने याकुब को निगल लिया,

और उसके वासस्थान को उजाड़ दिया है।

⁸ हमारी हानि के लिये हमारे पुरखाओं के अधर्म के कामों को स्मरण न कर;

तेरी दया हम पर शीघ्र हो, क्योंकि हम बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं।

⁹हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, अपने नाम की महिमा के निमित्त हमारी सहायता कर;

और अपने नाम के निमित्त हमको छुड़ाकर हमारे पापों को ढाँप दे।

10 अन्यजातियाँ क्यों कहने पाएँ कि उनका परमेश्वर कहाँ रहा?

^{* 79:5 💯} ७७७००, ७७ ७७: इस भाषा को परमेश्वर के लोग घोर परीक्षाओं के समय काम में लेते थे ऐसी परीक्षाएँ जिनका अन्त होता प्रतीत नहीं होता था।

तेरे दासों के खून का पलटा अन्यजातियों पर हमारी आँखों के सामने लिया जाए। (2020/2020: 6:10, 2020/2020: 19:2)

13 तब हम जो तेरी प्रजा और तेरी चराई की भेड़ें हैं, तेरा धन्यवाद सदा करते रहेंगे;

और पीढ़ी से पीढ़ी तक तेरा गुणानुवाद करते रहेंगे।

80

2222222 222 22 222 2222

प्रधान बजानेवाले के लिये: शोशन्नीमेदूत राग में आसाप का भजन

1हे इस्राएल के चरवाहे,

तू जो यूसुफ की अगुआई भेड़ों की सी करता है, कान लगा! तू जो करूबों पर विराजमान है, अपना तेज दिखा!

² एप्रैम, बिन्यामीन, और मनश्शे के सामने अपना पराक्रम दिखाकर,

हमारा उद्धार करने को आ!

³ हे परमेश्वर, हमको ज्यों के त्यों कर दे;

और अपने मुख का प्रकाश चमका, तब हमारा उद्धार हो जाएगा! 4 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा,

5 तुने आँसुओं को उनका आहार बना दिया, और मटके भर भरकर उन्हें आँसू पिलाए हैं। 6तू हमें हमारे पड़ोसियों के झगड़ने का कारण बना देता है; और हमारे शत्रु मनमाना ठट्टा करते हैं। 7 हे सेनाओं के परमेश्वर, हमको ज्यों के त्यों कर दे; और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका, तब हमारा उद्घार हो जाएगा। 8त मिस्र से एक दाखलता ले आया; और अन्यजातियों को निकालकर उसे लगा दिया। ⁹तूने उसके लिये स्थान तैयार किया है; और उसने जड़ पकड़ी और फैलकर देश को भर दिया। ¹⁰ उसकी छाया पहाड़ों पर फैल गई, और उसकी डालियाँ महा देवदारों के समान हुई; ¹¹ उसकी शाखाएँ समुद्र तक बढ़ गई, और उसके अंकुर फरात तक फैल गए। 12 फिर तूने उसके बाड़ों को क्यों गिरा दिया, कि सब बटोही उसके फलों को तोड़ते है? ¹³ जंगली सूअर उसको नाश किए डालता है, और मैदान के सब पशु उसे चर जाते हैं। ¹⁴ हे सेनाओं के परमेश्वर, *🏻 🛣 🏖*†! स्वर्ग से ध्यान देकर देख, और इस दाखलता की सुधि ले, 15 ये पौधा तुने अपने दाहिने हाथ से लगाया, और जो लता की शाखा तुने अपने लिये दृढ़ की है। ¹⁶ वह जल गई, वह कट गई है; तेरी घुड़की से तेरे शत्रु नाश हो जाए। 17 तेरे दाहिने हाथ के सम्भाले हुए पुरुष पर तेरा हाथ रखा रहे,

^{ं 80:14 2020 2:} संदर्भ से प्रगट होता है कि परमेश्वर उस देश से दूर हो गया है या उसे त्याग दिया है, उसने अपने लोगों को बिना रक्षक छोड़ दिया और खूंखार विदेशी शत्रुओं द्वारा संहार के लिए रख दिया है।

उस आदमी पर, जिसे तूने अपने लिये दृढ़ किया है। ¹⁸ तब हम लोग तुझ से न मुड़ेंगे: तू हमको जिला, और हम तुझ से प्रार्थना कर सकेंगे। तू हमको जिला, और हम तुझ से प्रार्थना कर सकेंगे। ¹⁹ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, हमको ज्यों का त्यों कर दे! और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका, तब हमारा उद्धार हो जाएगा!

81

प्रधान बजानेवाले के लिये: गित्तीथ राग में आसाप का भजन 1 परमेश्वर जो हमारा बल है, उसका गीत आनन्द से गाओ; याकुब के परमेश्वर का जयजयकार करो! (22. 67:4) 2गीत गाओ, डफ और मधुर बजनेवाली वीणा और सारंगी को ले आओ। 3 नये चाँद के दिन, और पूर्णमासी को हमारे पर्व के दिन नरसिंगा फूँको। 4 क्योंकि यह इस्राएल के लिये विधि, और याकूब के परमेश्वर का ठहराया हुआ नियम है। 5 इसको उसने युसुफ में चितौनी की रीति पर उस समय चलाया, जब वह मिस्र देश के विरुद्ध चला। वहाँ मैंने एक अनजानी भाषा सुनी 6 "मैंने उनके कंधों पर से बोझ को उतार दिया: उनका टोकरी ढोना छुट गया। ⁷तूने संकट में पड़कर पुकारा, तब मैंने तुझे छुड़ाया; बादल गरजने के गुप्त स्थान में से मैंने तेरी सुनी, और 22222 2222 2222 222 तेरी परीक्षा की। (सेला)

^{*} **81:7** *@@@@@ @@@@ @@@@*: यह सोता पर्वत होरेब पर था: (निर्ग. 17:5-7) चट्टान से पानी निकालना इस बात का प्रमाण था कि वह परमेश्वर है।

11 "परन्तु मेरी प्रजा ने मेरी न सुनी;

इस्राएल ने मुझ को न चाहा।

12 इसलिए मैंने उसको उसके मन के हठ पर छोड़ दिया, कि वह अपनी ही युक्तियों के अनुसार चले। (2)???????.

14:16)

13 यदि मेरी प्रजा मेरी सुने, यदि इस्राएल मेरे मार्गों पर चले, 14 तो मैं क्षण भर में उनके शत्रुओं को दबाऊँ, और अपना हाथ उनके द्रोहियों के विरुद्ध चलाऊँ। 15 यहोवा के बैरी उसके आगे भय में दण्डवत् करें! उन्हें हमेशा के लिए अपमानित किया जाएगा। 16 मैं उनको उत्तम से उत्तम गेहूँ खिलाता, और मैं चट्टान के मधु से उनको तुप्त करता।"

82

22222 2222 222 2222 2222 आसाप का भजन परमेश्वर दिव्य सभा में खड़ा है: वह ईश्वरों के बीच में न्याय करता है।

^{ं 81:10 @@@@ @@@@ @@@@ @@@ @@@@@@} अर्थात्, में तेरी सब आवश्यकताओं को बहुतायत से पूरी करूँगा

2 "तुम लोग कब तक टेढ़ा न्याय करते

(सेला)

³ कंगाल और अनाथों का न्याय चुकाओ, दीन-दरिद्र का विचार धर्म से करो। 4 कंगाल और निर्धन को बचा लो; दुष्टों के हाथ से उन्हें छुड़ाओ।" पृथ्वी की पूरी नींव हिल जाती है। 6 मैंने कहा था "तुम ईश्वर हो, और सब के सब परमप्रधान के पुत्र हो; (????. 10:34) 7तो भी तुम मनुष्यों के समान मरोगे, और किसी प्रधान के समान गिर जाओगे।" 8 हे परमेश्वर उठ, पृथ्वी का न्याय कर; क्योंकि तु ही सब जातियों को अपने भाग में लेगा!

83

आसाप का भजन 1 हे परमेश्वर मौन न रह; हे परमेश्वर चुप न रह, और न शान्त रह! 2 क्योंकि देख तेरे शत्रु धूम मचा रहे हैं; और तेरे बैरियों ने सिर उठाया है। ³वे चतुराई से तेरी प्रजा की हानि की सम्मति करते, और तेरे रक्षित लोगों के विरुद्ध युक्तियाँ निकालते हैं।

^{82:2 20022222 22 2022 2022 20222} अर्थात् दुष्टों का साथ देना और उन्हीं का पक्ष पोषण करना। अर्थात् दुष्टों का साथ देना और उन्हीं का पक्ष पोषण करना। † 82:5 ११२११२१२ ११२१२ ११२१२ ११२१२ ११२१२ ११२१२ ११२१२ ११२१२ ११२१२ ११२१२ ११२१२ ११२१२ ११२१२ ११२१२ ११२१२ ११२१ के अज्ञान में और वस्तु तथा स्थिति के तथ्यों से अज्ञान।

⁴ उन्होंने कहा, "आओ, हम उनका ऐसा नाश करें कि राज्य भी मिट जाए;

और इस्राएल का नाम आगे को स्मरण न रहे।"

⁵ <u>22222222 22 22 2222 22222 22222 22222</u>* ह,

और तेरे ही विरुद्ध वाचा बाँधी है।

6 ये तो एदोम के तम्बुवाले

और इश्माएली, मोआबी और हग्री,

7गबाली, अम्मोनी, अमालेकी,

और सोर समेत पलिश्ती हैं।

8इनके संग अश्शूरी भी मिल गए हैं;

उनसे भी लूतवंशियों को सहारा मिला है।

(सेला)

और कीशोन नाले में 20202 22 20202 22 20202 था,

¹⁰ वे एनदोर में नाश हुए,

और भूमि के लिये खाद बन गए।

11 इनके रईसों को ओरेब और जेब सरीखे,

और इनके सब प्रधानों को जेबह और सल्मुन्ना के समान कर दे,

12 जिन्होंने कहा था,

"हम परमेश्वर की चराइयों के अधिकारी आप ही हो जाएँ।"

13 हे मेरे परमेश्वर इनको बवंडर की धूलि,

या पवन से उड़ाए हुए भूसे के समान कर दे।

14 उस आग के समान जो वन को भस्म करती है,

और उस लौ के समान जो पहाड़ों को जला देती है,

15 तू इन्हें अपनी आँधी से भगा दे,

और अपने बवंडर से घबरा दे! 16 इनके मुँह को अति लिज्जित कर, कि हे यहोवा ये तेरे नाम को ढूँढ़ें। 17 ये सदा के लिये लिज्जित और घबराए रहें, इनके मुँह काले हों, और इनका नाश हो जाए, 18 जिससे ये जानें कि केवल तू जिसका नाम यहोवा है, सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है।

84

प्रधान बजानेवाले के लिये गित्तीथ में कोरहवंशियों का भजन 1हे सेनाओं के यहोवा, तेरे निवास क्या ही प्रिय हैं!

²मेरा प्राण यहोवा के आँगनों की अभिलाषा करते-करते मूर्छित हो चला;

3 हे सेनाओं के यहोवा, हे मेरे राजा, और मेरे परमेश्वर, तेरी वेदियों में गौरैया ने अपना बसेरा

और शूपाबेनी ने घोंसला बना लिया है जिसमें वह अपने बच्चे

4 क्या ही धन्य हैं वे, जो तेरे भवन में रहते हैं; वे तेरी स्तुति निरन्तर करते रहेंगे।

(सेला)

5 क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जो तुझ से शक्ति पाता है, और वे जिनको सिय्योन की सड़क की सुधि रहती है। 6 वे रोने की तराई† में जाते हुए उसको सोतों का स्थान बनाते हैं; फिर बरसात की अगली वृष्टि उसमें आशीष ही आशीष उपजाती है।

उनमें से हर एक जन सिय्योन में परमेश्वर को अपना मुँह दिखाएगा।

8 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन, हे याकूब के परमेश्वर, कान लगा!

(सेला)

9 हे परमेश्वर, हे हमारी ढाल, दृष्टि कर; और अपने अभिषिक्त का मुख देख!

10 क्योंकि तेरे आँगनों में एक दिन और कहीं के हजार दिन से उत्तम है।

दुष्टों के डेरों में वास करने से

अपने परमेश्वर के भवन की डेवढ़ी पर खड़ा रहना ही मुझे अधिक भावता है।

11 क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है;

यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा देगा;

और जो लोग खरी चाल चलते हैं;

12 हे सेनाओं के यहोवा,

क्या ही धन्य वह मनुष्य है, जो तुझ पर भरोसा रखता है!

85

2222222 22 222222 22 222 22222222222

प्रधान बजानेवाले के लिये: कोरहवंशियों का भजन

1 हे यहोवा, तू अपने देश पर प्रसन्न हुआ, याकूब को बँधुवाई से
लौटा ले आया है।

²तूने अपनी प्रजा के अधर्म को क्षमा किया है; और उसके सब पापों को ढाँप दिया है।

(सेला)

3तूने अपने रोष को शान्त किया है; और अपने भड़के हए कोप को दूर किया है। 4हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, हमको पुनः स्थापित कर, और ????? ?????? ?? ?? ?? ??? ??? ?? 5 क्या तू हम पर सदा कोपित रहेगा? क्या तू पीढ़ी से पीढ़ी तक कोप करता रहेगा? 6 क्या तू हमको फिर न जिलाएगा, कि तेरी प्रजा तुझ में आनन्द करे? 7 हे यहोवा अपनी करुणा हमें दिखा, और तू हमारा उद्धार कर। 8मैं कान लगाए रहँगा कि परमेश्वर यहोवा क्या कहता है, वह तो अपनी प्रजा से जो उसके भक्त है, शान्ति की बातें कहेगा; परन्तु वे फिरके मूर्खता न करने लगें। 22, तब हमारे देश में महिमा का निवास होगा। ¹⁰ करुणा और सच्चाई आपस में मिल गई हैं;

ाप हमार पदा में माहमा प्रामापित होगा 10 करुणा और सच्चाई आपस में मिल गई हैं। धर्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया हैं। 11 पृथ्वी में से सच्चाई उगती और स्वर्ग से धर्म झुकता है। 12 हाँ, यहोवा उत्तम वस्तुएँ देगा, और हमारी भूमि अपनी उपज देगी।

13 धर्म उसके आगे-आगे चलेगा, और उसके पाँवों के चिन्हों को हमारे लिये मार्ग बनाएगा।

86

दाऊद की प्रार्थना 1 हे यहोवा, कान लगाकर मेरी सुन ले, क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हाँ। 2 मेरे प्राण की रक्षा कर, क्योंकि मैं भक्त हुँ; तू मेरा परमेश्वर है, इसलिए अपने दास का, जिसका भरोसा तुझ पर है, उद्धार कर। ³ हे प्रभु, मुझ पर अनुग्रह कर, क्योंकि मैं तुझी को लगातार पुकारता रहता हैं। 4 अपने दास के मन को आनन्दित कर. क्योंकि हे प्रभु, मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूँ। 5 क्योंकि हे प्रभु, तू भला और क्षमा करनेवाला है, और जितने तुझे पुकारते हैं उन सभी के लिये तू अति करुणामय है। 6 हे यहोवा मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा, और मेरे गिड़गिड़ाने को ध्यान से सुन। 7 संकट के दिन मैं तुझको पुका रूँगा, क्योंकि तू मेरी सून लेगा। 8 हे प्रभु, देवताओं में से कोई भी तेरे तुल्य नहीं, और न किसी के काम तेरे कामों के बराबर हैं। 9 हे प्रभु, जितनी जातियों को तुने बनाया है, सब आकर तेरे सामने दण्डवत करेंगी,

और शशाश शशा शश शशाश शशाश शशाश । **(शशाश श. 15:4)** 10 क्योंकि तू महान और आश्चर्यकर्म करनेवाला है, केवल तु ही परमेश्वर है। 11 हे यहोवा, अपना मार्ग मुझे सिखा, तब मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलुँगा, मुझ को एक चित्त कर कि मैं तेरे नाम का भय मानूँ। 12 हे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर, मैं अपने सम्पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद करूँगा. और तेरे नाम की महिमा सदा करता रहँगा। 13 क्योंकि तेरी करुणा मेरे ऊपर बड़ी है; और तूने मुझ को अधोलोक की तह में जाने से बचा लिया है। 14 हे परमेश्वर, अभिमानी लोग मेरे विरुद्ध उठ गए हैं, और उपद्रवियों का झुण्ड मेरे प्राण के खोजी हए हैं, और वे तेरा कुछ विचार नहीं रखते। ¹⁵ परन्तु प्रभु दयालु और अनुग्रहकारी परमेश्वर है, तू विलम्ब से कोप करनेवाला और अति करुणामय है। 16 मेरी ओर फिरकर मुझ पर अनुग्रह कर; और अपनी दासी के पुत्र का उद्धार कर। ¹⁷ मुझे भलाई का कोई चिन्ह दिखा,

जिसे देखकर मेरे बैरी निराश हों, क्योंकि हे यहोवा, तूने आप मेरी सहायता की और मुझे शान्ति दी है।

87

कोरहवंशियों का भजन

- 1 उसकी नींव पवित्र पर्वतों में है;
- 2 और यहोवा सिय्योन के फाटकों से याकूब के सारे निवासों से बढ़कर प्रीति रखता है।
- 3 हे परमेश्वर के नगर,

तेरे विषय महिमा की बातें कही गई हैं।

(सेला)

4 मैं अपने जान-पहचानवालों से रहब और बाबेल की भी चर्चा करूँगा;

पलिश्त, सोर और कुश को देखो:

- 5 और सिय्योन के विषय में यह कहा जाएगा,
- "इनमें से प्रत्येक का जन्म उसमें हुआ था।"
- और परमप्रधान आप ही उसको स्थिर रखे।
- 6 यहोवा जब देश-देश के लोगों के नाम लिखकर गिन लेगा, तब यह कहेगा,

"यह वहाँ उत्पन्न हुआ था।"

(सेला)

⁷ गवैये और नृतक दोनों कहेंगे, "हमारे सब सोते तुझी में पाए जाते हैं।"

^{* 87:4 💯 💯 💯 💯 💯 💯 💯 💯 💯 💯 💯} थे और उनमें से किसी भी स्थान में जन्म लेना सम्मान की बात मानी जाएगी।

88

कोरहवंशियों का भजन प्रधान बजानेवाले के लिये: महलतलग्नोत राग में एज्जावंशी हेमान का मश्कील ोहे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर यहोवा, मैं दिन को और रात को तेरे आगे चिल्लाता आया हैं। 2 मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुँचे, मेरे चिल्लाने की ओर कान लगा! ³ क्योंकि मेरा प्राण क्लेश से भरा हुआ है, और मेरा प्राण अधोलोक के निकट पहुँचा है। 4मैं कब्र में पड़नेवालों में गिना गया हूँ; मैं बलहीन पुरुष के समान हो गया हूँ। 5 मैं मुदों के बीच छोड़ा गया हँ, और जो घात होकर कब्र में पड़े हैं. जिनको तू फिर स्मरण नहीं करता और वे तेरी सहायता रहित हैं, उनके समान मैं हो गया हाँ। 6 तूने मुझे गड्ढे के तल ही में, अंधेरे और गहरे स्थान में रखा है। और तुने अपने सब तरंगों से मुझे दुःख दिया है।

(सेला)

⁸ तूने मेरे पहचानवालों को मुझसे दूर किया है; और मुझ को उनकी दृष्टि में घिनौना किया है।

में बन्दी हूँ और निकल नहीं सकता; (21/12/12/12). 19:13, 21/13. 31:11, 21/12/12/12 23:49)

⁹दु:ख भोगते-भोगते मेरी आँखें धुँधला गई।

हे यहोवा, मैं लगातार तुझे पुकारता और अपने हाथ तेरी ओर फैलाता आया हाँ।

10 क्या तू मुर्दों के लिये अद्भुत काम करेगा? क्या मरे लोग उठकर तेरा धन्यवाद करेंगे?

(सेला)

11 क्या कब्र में तेरी करुणा का,

और विनाश की दशा में तेरी सच्चाई का वर्णन किया जाएगा?

12 क्या तेरे अद्भुत काम अंधकार में,

या तेरा धर्म विश्वासघात की दशा में जाना जाएगा?

13 परन्तु हे यहोवा, मैंने तेरी दुहाई दी है;

और भोर को मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुँचेगी।

14 हे यहोवा, तू मुझ को क्यों छोड़ता है?

त् अपना मुख मुझसे क्यों छिपाता रहता है?

15 मैं बचपन ही से दुःखी वरन् अधमुआ हँ,

20.00 20.00 विश्व विष्य विश्व विष्य वि

¹⁶तेरा क्रोध मुझ पर पड़ा है;

उस भय से मैं मिट गया हाँ।

17 वह दिन भर जल के समान मुझे घेरे रहता है;

वह मेरे चारों ओर दिखाई देता है।

18 तूने मित्र और भाई-बन्धु दोनों को मुझसे दूर किया है; और मेरे जान-पहचानवालों को अंधकार में डाल दिया है।

^{ं 88:15 @@@ @@ @@ @@@@@:} मैं उन बातों को सहन कर रहा हूँ जिनसे भयभीत हो जाता हूँ या जो मेरे मन में भय उत्पन्न करती हैं; अर्थात् मृत्यु का भय।

89

1मैं यहांवा की सारी करुणा के विषय सदा गाता रहूँगा;

मैं तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बताता रह़ँगा।

²क्योंकि मैंने कहा, "तेरी करुणा सदा बनी रहेगी, तू स्वर्ग में अपनी सच्चाई को स्थिर रखेगा।"

 3 तूने कहा, "मैंने अपने चुने हुए से वाचा बाँधी है,

मैंने अपने दास दाऊद से शपथ खाई है,

और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी-पीढ़ी तक बनाए रखूँगा।"

(सेला)

(????. 7:42, 2 ????. 7:11-16)

5 हे यहोवा, स्वर्ग में तेरे अद्भुत काम की,

और पवित्रों की सभा में तेरी सच्चाई की प्रशंसा होगी।

⁶ क्योंकि आकाशमण्डल में यहोवा के तुल्य कौन ठहरेगा?

बलवन्तों के पुत्रों में से कौन है जिसके साथ यहोवा की उपमा दी जाएगी?

7 परमेश्वर पवित्र लोगों की गोष्ठी में अत्यन्त प्रतिष्ठा के योग्य, और अपने चारों ओर सब रहनेवालों से अधिक भययोग्य है। (2 ?)???. 1:10, ??. 76:7,11)

⁸ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा,

हे यहोवा, तेरे तुल्य कौन सामर्थी है?

तेरी सच्चाई तो तेरे चारों ओर है!

9 समुद्र के गर्व को तू ही तोड़ता है;

जब उसके तरंग उठते हैं, तब तू उनको शान्त कर देता है।

^{* 89:4} 2022 20202 2022 202 2020 20202 2020202 2020202: अर्थात् सिंहासन पर उसके उत्तराधिकारी सदैव बैठेंगे।प्रतिज्ञा यह है कि उसके सिंहासन पर बैठने से एक भी नहीं चूकेगा।

10 तूने रहब को घात किए हुए के समान कुचल डाला, और अपने शत्रुओं को अपने बाहुबल से तितर-बितर किया है। (?!??!?!? 1:51, ?!?!?!. 51:9)

11 आकाश तेरा है, पृथ्वी भी तेरी है;

जगत और जो कुछ उसमें है, उसे तू ही ने स्थिर किया है। (1 ??????. 10:26, ???. 24:1,2)

12 उत्तर और दक्षिण को तू ही ने सिरजा;

ताबोर और हेर्मोन तेरे नाम का जयजयकार करते हैं।

¹³ तेरी भुजा बलवन्त है;

तेरा हाथ शक्तिमान और तेरा दाहिना हाथ प्रबल है।

14 तेरे सिंहासन का मूल, धर्म और न्याय है;

करुणा और सच्चाई तेरे आगे-आगे चलती है।

15 क्या ही धन्य है वह समाज जो आनन्द के ललकार को पहचानता है;

हे यहोवा, वे लोग तेरे मुख के प्रकाश में चलते हैं,

16 वे तेरे नाम के हेतु दिन भर मगन रहते हैं,

और तेरे धर्म के कारण महान हो जाते हैं।

¹⁷ क्योंकि तू उनके बल की शोभा है,

और अपनी प्रसन्नता से हमारे सींग को ऊँचा करेगा।

18 क्योंकि हमारी ढाल यहोवा की ओर से है,

हमारा राजा इस्राएल के पवित्र की ओर से है।

19 एक समय तूने अपने भक्त को दर्शन देकर बातें की;

और कहा, "मैंने सहायता करने का भार एक वीर पर रखा है,

और प्रजा में से एक को चुनकर बढ़ाया है।

²⁰ मैंने अपने दास दाऊद को लेकर,

21 मेरा हाथ उसके साथ बना रहेगा, और मेरी भुजा उसे दृढ़ रखेगी।

22 शत्रु उसको तंग करने न पाएगा, और न कुटिल जन उसको दुःख देने पाएगा। 23 मैं उसके शत्रुओं को उसके सामने से नाश करूँगा, और उसके बैरियों पर विपत्ति डालुँगा। 24 परन्तु मेरी सच्चाई और करुणा उस पर बनी रहेंगी, और मेरे नाम के द्वारा उसका सींग ऊँचा हो जाएगा। 25 मैं समुद्र को उसके हाथ के नीचे और महानदों को उसके दाहिने हाथ के नीचे कर दुँगा। ²⁶ वह मुझे पुकारकर कहेगा, 'तू मेरा पिता है, मेरा परमेश्वर और मेरे उद्धार की चट्टान है। (1 22. 1:17, ??????. **21:7)** ²⁷ फिर मैं उसको अपना पहलौठा, और पृथ्वी के राजाओं पर प्रधान ठहराऊँगा। (????????. 1:5, ???????. 17:18) और मेरी वाचा उसके लिये अटल रहेगी। ²⁹ मैं उसके वंश को सदा बनाए रखुँगा, और उसकी राजगद्दी स्वर्ग के समान सर्वदा बनी रहेगी। 30 यदि उसके वंश के लोग मेरी व्यवस्था को छोड़ें और मेरे नियमों के अनुसार न चलें,

32 तो मैं उनके अपराध का दण्ड सोंटें से, और उनके अधर्म का दण्ड कोड़ों से दूँगा। 33 परन्तु मैं अपनी करुणा उस पर से न हटाऊँगा, और न सच्चाई त्याग कर झुठा ठहरूँगा।

31 यदि वे मेरी विधियों का उल्लंघन करें,

और मेरी आज्ञाओं को न मानें,

34 मैं अपनी वाचा न तोडूँगा,

और जो मेरे मुँह से निकल चुका है, उसे न बदलूँगा।

35 एक बार मैं अपनी पवित्रता की शपथ खा चुका हूँ;

<u> 200 2002 20 200 2002 2 2002 2 2002</u>

36 उसका वंश सर्वदा रहेगा,

³⁷वह चन्द्रमा के समान,

और आकाशमण्डल के विश्वासयोग्य साक्षी के समान सदा बना रहेगा।"

(सेला)

38 तो भी तूने अपने अभिषिक्त को छोड़ा और उसे तज दिया,

और उस पर अति क्रोध किया है।

39 तूने अपने दास के साथ की वाचा को त्याग दिया,

और उसके मुकुट को भूमि पर गिराकर अशुद्ध किया है।

⁴⁰ तूने उसके सब बाड़ों को तोड़ डाला है,

और उसके गढ़ों को उजाड़ दिया है।

41 सब बटोही उसको लूट लेते हैं,

और उसके पड़ोसियों से उसकी नामधराई होती है।

42 तूने उसके विरोधियों को प्रबल किया;

और उसके सब शत्रुओं को आनन्दित किया है।

43 फिर तु उसकी तलवार की धार को मोड़ देता है,

और युद्ध में उसके पाँव जमने नहीं देता।

44 तूने उसका तेज हर लिया है,

और उसके सिंहासन को भूमि पर पटक दिया है।

⁴⁵ तूने उसकी जवानी को घटाया,

और उसको लज्जा से ढाँप दिया है।

(सेला)

46 हे यहोवा, तू कब तक लगातार मुँह फेरे रहेगा, तेरी जलजलाहट कब तक आग के समान भड़की रहेगी। 47 मेरा स्मरण कर, कि मैं कैसा अनित्य हूँ, तूने सब मनुष्यों को क्यों व्यर्थ सिरजा है? 48 कौन पुरुष सदा अमर रहेगा? क्या कोई अपने प्राण को अधोलोक से बचा सकता है?

(सेला)

चौथा भाग

90

?!?!?!. 90-106

शाशिशिश शिशिशिशिशिशिशिश शिश शिशिशिश शिशिशिशिश परमेश्वर के जन मूसा की प्रार्थना

1 हे प्रभु, तू पीढ़ी से पीढ़ी तक हमारे लिये धाम बना है।

2 इससे पहले कि पहाड़ उत्पन्न हुए,

या तूने पृथ्वी और जगत की रचना की,

वरन् अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही परमेश्वर है।

3तू मनुष्य को लौटाकर मिट्टी में ले जाता है, और कहता है, 'हे आदिमयों, लौट आओ!"

4 क्योंकि हजार वर्ष तेरी दृष्टि में ऐसे हैं, जैसा कल का दिन जो बीत गया, या रात का एक पहर। (2 ति. 3:8)

5 तू मनुष्यों को धारा में बहा देता है; वे स्वप्न से ठहरते हैं, वे भोर को बढ़नेवाली घास के समान होते हैं।

6 वह भोर को फूलती और बढ़ती है, और साँझ तक कटकर मुर्झा जाती है।

7 क्योंकि हम तेरे कोध से भस्म हुए हैं; और तेरी जलजलाहट से घबरा गए हैं।

8 हालावार हालावार हालावार हाला हाला

9 क्योंकि हमारे सब दिन तेरे क्रोध में बीत जाते हैं, हम अपने वर्ष शब्द के समान बिताते हैं। 10 हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं, और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष भी हो जाएँ, तो भी उनका घमण्ड केवल कष्ट और शोक ही शोक है; क्योंकि वह जल्दी कट जाती है, और हम जाते रहते हैं। 11 तेरे क्रोध की शक्ति को और तेरे भय के योग्य तेरे रोष को कौन समझता है?

^{* 90:8} 2/2/2 2/2/2/2

हो जाएँ। 13 हे यहोवा, लौट आ! कब तक? और अपने दासों पर तरस खा! 14 भोर को हमें अपनी करुणा से तृप्त कर, कि हम जीवन भर जयजयकार और आनन्द करते रहें। 15 जितने दिन तू हमें दु:ख देता आया, और जितने वर्ष हम क्लेश भोगते आए हैं उतने ही वर्ष हमको आनन्द दे। ¹⁶ तेरा काम तेरे दासों को, और तेरा प्रताप उनकी सन्तान पर प्रगट हो। ¹⁷ हमारे परमेश्वर यहोवा की मनोहरता हम पर प्रगट हो, त् हमारे हाथों का काम हमारे लिये दृढ़ कर, हमारे हाथों के काम को दृढ़ कर।

वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा। 2 मैं यहोवा के विषय कहँगा, "वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है; वह मेरा परमेश्वर है, जिस पर मैं भरोसा रखता हुँ" ??? ????????? ??? ????????*; 4वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा,

^{ं 90:12} शाशाश शाशाश शाशाश शाशाश शाशाश शाश शाशा शाशा उसकी प्रार्थना है कि परमेश्वर हमें निर्देश दे कि हम अपने दिनों की उचित गणना करें। उनकी संख्या, उनके समाप्त होने की शीघ्रता को कि अन्त शीघ्र ही आनेवाला है और भावी दशा पर उनका क्या * **91:3** *22 22 2222 222222 22 22 22*, *22 222222* प्रभाव पड़ेगा। 🏿 🖎 🖎 🖎 🖎 🖎 🖎 १८% थे। प्राप्त के प्रकड़नेवाला जाल यहाँ कहने का अर्थ है कि परमेश्वर उसे दुष्टों के उद्देश्यों से बचाएगा।

और तु उसके परों के नीचे शरण पाएगा; उसकी सच्चाई तेरे लिये ढाल और झिलम ठहरेगी। 5त न रात के भय से डरेगा, और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है. 6न उस मरी से जो अंधेरे में फैलती है. और न उस महारोग से जो दिन-दुपहरी में उजाड़ता है। ⁷तेरे निकट हजार, और तेरी दाहिनी ओर दस हजार गिरेंगे; परन्तु वह तेरे पास न आएगा। ⁸ परन्त*ी*? ????? ???????? ???????? और दुष्टों के अन्त को देखेगा। ⁹हे यहोवा, तू मेरा शरणस्थान ठहरा है। तूने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है, ¹⁰ इसलिए कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी, न कोई दु:ख तेरे डेरे के निकट आएगा। 11 क्यों कि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा, कि जहाँ कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें। ¹² वे तुझको हाथों हाथ उठा लेंगे, ????? 4:10,11, ??????. 1:14) 13 त् सिंह और नाग को कुचलेगा, त् जवान सिंह और अजगर को लताड़ेगा।

14 उसने जो मुझसे स्नेह किया है, इसलिए मैं उसको छुड़ाऊँगा; मैं उसको ऊँचे स्थान पर रखूँगा, क्योंकि उसने मेरे नाम को जान लिया है।

15 जब वह मुझ को पुकारे, तब मैं उसकी सुनूँगा;

संकट में मैं उसके संग रहूँगा, मैं उसको बचाकर उसकी महिमा बढ़ाऊँगा। ¹⁶ मैं उसको दीर्घायु से तृप्त करूँगा, और अपने किए हए उद्धार का दर्शन दिखाऊँगा।

92

clxvi

भजन। विश्राम के दिन के लिये गीत 1 यहोवा का धन्यवाद करना भला है,

हे परमप्रधान, तेरे नाम का भजन गाना;

2 प्रात:काल को तेरी करुणा,

और प्रति रात *शृशृशृशृशृशृशृशृश* का प्रचार करना,

³दस तारवाले बाजे और सारंगी पर,

और वीणा पर गम्भीर स्वर से गाना भला है।

4 क्योंकि, हे यहोवा, तूने मुझ को अपने कामों से आनन्दित किया है-

और मैं तेरे हाथों के कामों के कारण जयजयकार करूँगा।

5 हे यहोवा, तेरे काम क्या ही बड़े है!

तेरी कल्पनाएँ बहुत गम्भीर है; (2/2/2/2/2). 15:3, 2/2/2/2.

11:33,34)

6 पशु समान मनुष्य इसको नहीं समझता,

और मूर्ख इसका विचार नहीं करता:

7 कि दुष्ट जो घास के समान फूलते-फलते हैं,

और सब अनर्थकारी जो प्रफुल्लित होते हैं,

यह इसलिए होता है, कि वे सर्वदा के लिये नाश हो जाएँ,

8परन्तु हे यहोवा, तू सदा विराजमान रहेगा।

9 क्योंकि हे यहोवा, तेरे शत्रु, हाँ तेरे शत्रु नाश होंगे;

^{* 92:2 @@@@ @@@@@@:} प्रकृति के नियम में उसकी सच्चाई तेरी प्रतिज्ञाओं में, तेरे स्वभाव में, मनुष्यों के साथ तेरे दिव्य स्वभाव में।

13 वे यहोवा के भवन में रोपे जाकर, हमारे परमेश्वर के आँगनों में फूले फलेंगे। 14 वे पुराने होने पर भी फलते रहेंगे, और रस भरे और लहलहाते रहेंगे, 15 जिससे यह प्रगट हो कि यहोवा सच्चा है; वह मेरी चट्टान है, और उसमें कुटिलता कुछ भी नहीं।

93

^{ं 92:12 @2020 @202 @2020 @2020 @2020 @2020 @2020} खजूर का वृक्ष सिंदयों तक धीरे धीरे बड़ा होता है परन्तु स्थिरता से, उस पर ॠतुओं का प्रभाव नहीं पड़ता जो अन्य वृक्षों को प्रभावित करती हैं। * 93:3 @20202020 @2 @20202020 @2 @20202020 @2 ख़हाँ किसी आपदा या संकट की ओर संकेत है जो अपनी शक्ति और उग्रता सब कुछ नष्ट कर देगा। उसकी तुलना समुद्र की प्रचण्ड लहरों से की गई है।

महानद गरजते हैं।

⁴महासागर के शब्द से,
और समुद्र की महातरंगों से,
विराजमान यहोवा अधिक महान है।

⁵ तेरी चितौनियाँ अति विश्वासयोग्य हैं;
हे यहोवा, तेरे भवन को युग-युग पित्रता ही शोभा देती है।

94

1 हे यहोवा, हे पलटा लेनेवाले परमेश्वर, हे पलटा लेनेवाले परमेश्वर, अपना तेज दिखा! (<u>शिशिशः</u> **32:35)**

2 हे पृथ्वी के न्यायी, उठ;

और घमण्डियों को बदला दे!

³ हे यहोवा, दुष्ट लोग कब तक,

दुष्ट लोग कब तक डींग मारते रहेंगे?

4वे बकते और ढिठाई की बातें बोलते हैं,

सब अनर्थकारी बड़ाई मारते हैं।

5 हे यहोवा, वे तेरी प्रजा को पीस डालते हैं,

वे तेरे निज भाग को दुःख देते हैं।

6वे विधवा और परदेशी का घात करते,

और अनाथों को मार डालते हैं;

⁷ और कहते हैं, "यहोवा न देखेंगा,

याकूब का परमेश्वर विचार न करेगा।"

9 जिसने कान दिया, क्या वह आप नहीं सुनता?

जिसने आँख रची, क्या वह आप नहीं देखता?

10 जो जाति-जाति को ताड़ना देता, और मनुष्य को ज्ञान सिखाता है,

क्या वह न सुधारेगा?

11 यहोवा मनुष्य की कल्पनाओं को तो जानता है कि वे मिथ्या हैं। (1 ?????. 3:20)

12 हे यहोवा, क्या ही धन्य है वह पुरुष जिसको तू ताड़ना देता है, और अपनी व्यवस्था सिखाता है,

13 क्योंकि तू उसको विपत्ति के दिनों में उस समय तक चैन देता रहता है,

222 222 222222 22222 22222 22222 22222 22222 22222 22222 22222 22222 22222 22222

वह अपने निज भाग को न छोड़ेगा; (22. 11:1,2)

15 परन्तु न्याय फिर धर्म के अनुसार किया जाएगा,

और सारे सीधे मनवाले उसके पीछे-पीछे हो लेंगे।

16 कुकर्मियों के विरुद्ध मेरी ओर कौन खड़ा होगा?

मेरी ओर से अन्थंकारियों का कौन सामना करेगा?

¹⁷ यदि यहोवा मेरा सहायक न होता,

तो क्षण भर में मुझे चुपचाप होकर रहना पड़ता।

तब हे यहोवा, तेरी करुणा ने मुझे थाम लिया।

19 जब मेरे मन में बहुत सी चिन्ताएँ होती हैं,

तब हे यहोवा, तेरी दी हुई शान्ति से मुझ को सुख होता है। (2

20 क्या तेरे और दुष्टों के सिंहासन के बीच संधि होगी,

^{ं 94:13} 202 202 2020222222 202 202022 202022 202022 202022 202022: कहने का अर्थ है कि अपने मन में अधीर न हो कि उन्हें दण्ड नहीं मिलेगा या कि परमेश्वर को चिन्ता नहीं है। \div 94:18 202022 202022 2020202 20202 20202 20202 20202 हो पाता हूँ मेरी शक्ति समाप्त हो गई है, मैं कब्र में गिर रहा हूँ।

जो कानून की आड़ में उत्पात मचाते हैं?

21 वे धर्मी का प्राण लेने को दल बाँधते हैं,
और निर्दोष को प्राणदण्ड देते हैं।

22 परन्तु यहोवा मेरा गढ़,
और मेरा परमेश्वर मेरी शरण की चट्टान ठहरा है।

23 उसने उनका अनर्थ काम उन्हीं पर लौटाया है,
और वह उन्हें उन्हीं की बुराई के द्वारा सत्यानाश करेगा।
हमारा परमेश्वर यहोवा उनको सत्यानाश करेगा।

95

[?][?][?][?][?][?][?][?]

1 आओ हम यहोवा के लिये ऊँचे स्वर से गाएँ, अपने उद्धार की चट्टान का जयजयकार करें! ²हम धन्यवाद करते हुए उसके सम्मुख आएँ, और भजन गाते हुए उसका जयजयकार करें। 3 क्योंकि यहोवा महान परमेश्वर है, और सब देवताओं के ऊपर महान राजा है। 4 पृथ्वी के गहरे स्थान उसी के हाथ में हैं; और पहाड़ों की चोटियाँ भी उसी की हैं। 5 समुद्र उसका है, और उसी ने उसको बनाया, और स्थल भी उसी के हाथ का रचा है। 6 आओ हम झुककर दण्डवत् करें, और अपने कर्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें! 7 क्योंकि वही हमारा परमेश्वर है, और हम उसकी चराई की प्रजा, और उसके हाथ की भेड़ें हैं। भला होता, कि आज तुम उसकी बात सुनते! (???????. 17:7) ⁸ अपना-अपना हृदय ऐसा कठोर मत करो, जैसा मरीबा में, व मस्सा के दिन जंगल में हुआ था,

9 <u>शि. शि.श. शि.श</u>

96

<u> [222[22]22[2] 222[22]22[22]</u>

¹ यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ, हे सारी पृथ्वी के लोगों यहोवा के लिये गाओ! *(श्रिशाशाया. 5:9,* श्री. 33:3)

² यहोवा के लिये गाओ, उसके नाम को धन्य कहो; दिन प्रतिदिन उसके किए हुए उद्धार का शुभ समाचार सुनाते रहो। ³अन्यजातियों में उसकी महिमा का,

4 क्योंकि यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है; वह तो सब देवताओं से अधिक भययोग्य है। 5 क्योंकि देश-देश के सब देवता तो मूरतें ही हैं; परन्तु यहोवा ही ने स्वर्ग को बनाया है। 6 उसके चारों ओर वैभव और ऐश्वर्य है;

उसके पवित्रस्थान में सामर्थ्य और शोभा है। ⁷ हे देश-देश के कुल के लोगों, यहोवा का गुणानुवाद करो, यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को मानो! 8 यहोवा के नाम की ऐसी महिमा करो जो उसके योग्य है; भेंट लेकर उसके आँगनों में आओ! ⁹ पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो; ¹⁰ जाति-जाति में कहो, "यहोवा राजा हुआ है! और जगत ऐसा स्थिर है, कि वह टलने का नहीं; वह देश-देश के लोगों का न्याय खराई से करेगा।" 11 आकाश आनन्द करे, और पृथ्वी मगन हो; समुद्र और उसमें की सब वस्तुएँ गरज उठें; 12 मैदान और जो कुछ उसमें है, वह प्रफुल्लित हो; उसी समय वन के सारे वृक्ष जयजयकार करेंगे। 13 यह यहोवा के सामने हो, क्योंकि वह आनेवाला है। वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है, वह धर्म से जगत का, और सच्चाई से देश-देश के लोगों का न्याय करेगा। (?????????. *17:31)*

97

¹यहोवा राजा हुआ है, पृथ्वी मगन हो; और द्वीप जो बहुत से हैं, वह भी आनन्द करें! (११११) 19:7) ² बादल और अंधकार उसके चारों ओर हैं; उसके सिंहासन का मूल धर्म और न्याय है।

उसके विरोधियों को चारों ओर भस्म करती है। (???????. 11:5) 4 उसकी बिजलियों से जगत प्रकाशित हुआ, पृथ्वी देखकर थरथरा गई है! 5 पहाड़ यहोवा के सामने, मोम के समान पिघल गए, अर्थात सारी पृथ्वी के परमेश्वर के सामने। 6 आकाश ने उसके धर्म की साक्षी दी; और देश-देश के सब लोगों ने उसकी महिमा देखी है। 7 जितने खुदी हुई मूर्तियों की उपासना करते और मुरतों पर फुलते हैं, वे लज्जित हों; हे सब देवताओं तुम उसी को दण्डवत् करो। 8 सिय्योन सुनकर आनन्दित हुई, और यहदा की बेटियाँ मगन हुई; हे यहोवा, यह तेरे नियमों के कारण हुआ। 9 क्योंकि हे यहोवा, तू सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है; तू सारे देवताओं से अधिक महान ठहरा है। (????. 3:31) 10 हे यहोवा के प्रेमियों, बुराई से घृणा करो; और उन्हें दुष्टों के हाथ से बचाता है। 11 धर्मी के लिये ज्योति. और सीधे मनवालों के लिये आनन्द बोया गया है। 12 हे धर्मियों, यहोवा के कारण आनन्दित हो;

^{* 97:3 20202 2020-2020 202 20202 20202:} अर्थात् वह स्वयं को न्यायोचित परमेश्वर सिद्ध करता है, उसके शत्रुओं से बदला लेता है। ं 97:10 202 2020202 202020202 20202020202 202020202 202020202 202020202 202020202 2020202 2020202 2020202 2020202 34 पित्र जनों या उसके पृथक किए गए लोगों के प्राणों की। अर्थात् वह खतरों से उसकी रक्षा करता है और बड़ी सतर्कता से उनकी चौकसी करता है।

और जिस पवित्र नाम से उसका स्मरण होता है, उसका धन्यवाद करो!

98

 4 हे 2020 2020 2020 2020 * के लोगों, यहोवा का जयजयकार करो; उत्साहपूर्वक जयजयकार करो, और भजन गाओ! (2020 <math>44:23)

⁵ वीणा बजाकर यहोवा का भजन गाओ, वीणा बजाकर भजन का स्वर सुनाओ। ⁶ तुरहियां और नरसिंगे फूँक फूँककर यहोवा राजा का जयजयकार करो। ⁷ समुद्र और उसमें की सब वस्तुएँ गरज उठें; जगत और उसके निवासी महाशब्द करें! ⁸ नदियाँ तालियाँ बजाएँ; पहाड़ मिलकर जयजयकार करें।

^{* 98:4 💯 💯 💯 💯 💯} १ यह घटना इतनी महत्त्वपूर्ण है कि सब जातियाँ उत्सव मनाएँ। यह विश्वव्यापी उत्स्तास एवं आनन्द का विषय है।

⁹ यह यहोवा के सामने हो, क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है। वह धर्म से जगत का, और सच्चाई से देश-देश के लोगों का न्याय करेगा। (??????????. 17:31)

99

¹ यहोवा राजा हुआ है; देश-देश के लोग काँप उठें! वह करूबों पर विराजमान है; पृथ्वी डोल उठे! (?!?!?!?!?. 11:18, ?!?!?!?!?. 19:6)

2 यहोवा सिय्योन में महान है;

और वह देश-देश के लोगों के ऊपर प्रधान है।

³ वे ते्रे महान और भययोग्य नाम का धन्यवाद करें!

वह तो पवित्र है।

4 राजा की सामर्थ्य न्याय से मेल रखती है,

तू ही ने सच्चाई को स्थापित किया;

न्याय और धर्म को याकूब में तू ही ने चालू किया है।

5 हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो;

और उसके चरणों की चौकी के सामने दण्डवत् करो!

वह पवित्र है!

6 उसके याजकों में मूसा और हारून,

और उसके प्रार्थना करनेवालों में से <u>2020/20 2020/2020</u> <u>2020</u> <u>2020/2020</u> <u>2020</u>*, और वह उनकी सुन लेता था।

⁷ वह बादल के खम्भे में होकर उनसे बातें करता था; और वे उसकी चितौनियों और उसकी दी हुई विधियों पर चलते थे।

^{* 99:6} 2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2/2 कहने का अर्थ है कि सब स्तुति करें, पुरोहित भी और आम जनता भी । मूसा और हारून अतीतकाल में प्रमुख थे, उसी प्रकार श्रमूएल पुरोहितीय वर्ग से अलग एक मनुष्य था।

⁸ हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तू उनकी सुन लेता था; तू उनके कामों का पलटा तो लेता था तो भी उनके लिये क्षमा करनेवाला परमेश्वर था। ⁹ हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो, और उसके पवित्र पर्वत पर दण्डवत् करो; क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा पवित्र है!

100

धन्यवाद का भजन

1 हे सारी पृथ्वी के लोगों, यहोवा का जयजयकार करो!

² आनन्द से यहोवा की आराधना करो!

ज्यजयकार के साथ उसके सम्मुख् आओ!

³निश्चय जानो कि यहोवा ही परमेश्वर है उसी ने हमको बनाया, और हम उसी के हैं;

4 उसके फाटकों में धन्यवाद,

और उसके आँगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो,

उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो! 5 क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करुणा सदा के लिये,

और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है।

101

दाऊद का भजन

1 मैं क्रुणा और न्याय के विषय गाऊँगा;

हे यहोवा, मैं तेरा ही भजन गाऊँगा।

^{* 100:3} 2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 2/2/2 जिस प्रकार एक चरवाहा अपने वृन्द का स्वामी होता है, जिस प्रकार चरवाहा अपने वृन्द की रक्षा करता है और उनके लिए प्रावधान करता है, उसी प्रकार परमेश्वर हमारी रक्षा करता है और हमारी सुधि लेता है।

2 मैं बुद्धिमानी से खरे मार्ग में चलूँगा। तू मेरे पास कब आएगा? मैं अपने घर में मन की खराई के साथ अपनी चाल चलुँगा; मैं कुमार्ग पर चलनेवालों के काम से घिन रखता हैं; ऐसे काम में मैं न लगूँगा। 4टेढ़ा स्वभाव मुझसे दूर रहेगा; मैं बुराई को जानूँगा भी नहीं। 5 जो छिपकर अपने पड़ोसी की चुगली खाए, जिसकी आँखें चढ़ी हों और जिसका मन घमण्डी है, उसकी मैं न सहँगा।

6 मेरी आँखें देश के विश्वासयोग्य लोगों पर लगी रहेंगी कि वे मेरे संग रहें:

जो खरे मार्ग पर चलता है वही मेरा सेवक होगा। 7 जो छल करता है वह मेरे घर के भीतर न रहने पाएगा; जो झुठ बोलता है वह मेरे सामने बना न रहेगा। 8प्रति भोर, मैं देश के सब दुष्टों का सत्यानाश किया करूँगा, ताकि यहोवा के नगर के सब अनर्थकारियों को नाश करूँ।

102

शोक की बातें यहोवा के सामने खोलकर कहता हो ¹ हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन;

^{101:3 2/22 2/22 2/22 2/22 2/2 2/2 2/22 2/2 2/22 2/22} अछे काम से अभिप्राय है, निकम्मे, बुरे, दुष्टता के काम। उसका लक्ष्य दुष्टता का नहीं है वह पल भर के लिए भी दुष्टता के काम को नहीं देखेगा। † 101:5 2002 202 20202002 2020002 अर्थात मैं उसे अपने से अलग कर दूँगा; मैं उसके साथ काम नहीं करूँगा। ऐसे किसी को भी वह घर में या सेवा में नहीं रखेगा।

मेरी दुहाई तुझ तक पहुँचे! 2 मेरे संकट के दिन अपना मुख मुझसे न छिपा ले; अपना कान मेरी ओर लगा; जिस समय मैं पुका रूँ, उसी समय फुर्ती से मेरी सुन ले! ³क्योंकि मेरे दिन धुएँ के समान उड़े जाते हैं, 4मेरा मन झुलसी हुई घास के समान सूख गया है; और मैं अपनी रोटी खाना भूल जाता हाँ। 5 कराहते-कराहते मेरी चमड़ी हड्डियों में सट गई है। 6 मैं जंगल के धनेश के समान हो गया हँ, मैं उजड़े स्थानों के उल्लू के समान बन गया हुँ। 7मैं पड़ा-पड़ा जागता रहता हुँ और गौरे के समान हो गया हुँ जो छत के ऊपर अकेला बैठता है। 8मेरे शत्रु लगातार मेरी नामधराई करते हैं, जो मेरे विरुद्ध ठट्टा करते है, वह मेरे नाम से श्राप देते हैं। 9 क्योंकि मैंने रोटी के समान राख खाई और आँसू मिलाकर पानी पीता हैं। ¹⁰ यह तेरे क्रोध और कोप के कारण हुआ है, क्योंकि तूने मुझे उठाया, और फिर फेंक दिया है। ¹¹ मेरी आयु ढलती हुई छाया के समान है; और मैं आप घास के समान सुख चला हाँ। 12 परन्तु हे यहोवा, तु सदैव विराजमान रहेगा; और जिस नाम से तेरा स्मरण होता है, वह पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा।

13 तू उठकर सिय्योन पर दया करेगा; क्योंकि उस पर दया करने का *[20202020] 2020 2020 20 20202020 [2021]*

14 क्यों कि तेरे दास उसके पत्थरों को चाहते हैं, और उसके खंडहरों की धूल पर तरस खाते हैं।

15 इसलिए जाति-जाति यहोवा के नाम का भय मानेंगी,

और पृथ्वी के सब राजा तेरे प्रताप से डरेंगे।

¹⁶ क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को फिर बसाया है,

और वह अपनी महिमा के साथ दिखाई देता है;

17 वह लाचार की प्रार्थना की ओर मुँह करता है,

और उनकी प्रार्थना को तुच्छ नहीं जानता।

18 यह बात आनेवाली पीढ़ी के लिये लिखी जाएगी,

ताकि एक जाति जो उत्पन्न होगी, वह यहोवा की स्तुति करे।

19 क्योंकि यहोवा ने अपने ऊँचे और पवित्रस्थान से दृष्टि की; स्वर्ग से पृथ्वी की ओर देखा है,

²⁰तािक बन्दियों का कराहना सुने,

और घात होनेवालों के बन्धन खोले;

21 तब लोग सिय्योन में यहोवा के नाम का वर्णन करेंगे,

और यरूशलेम में उसकी स्तुति की जाएगी;

22 यह उस समय होगा जब देश-देश,

और राज्य-राज्य के लोग यहोवा की उपासना करने को इकट्ठे होंगे।

23 उसने मुझे जीवन यात्रा में दुःख देकर,

. मेरे बल और *222 22 22222* ।

24 मैंने कहा, "हे मेरे परमेश्वर, मुझे आधी आयु में न उठा ले,

^{ं 102:13} 2020202 2022 2022 20202022 2022 कहने का अर्थ है कि उस पर कृपा करने का या उसके कष्टों के अन्त का समय निश्चित किया हुआ था। \ddagger 102:23 2022 202 202222: ऐसा प्रतीत होता था कि वह मेरे जीवन का अन्त करने और मुझे कब्र में पहुँचाने पर है। भजनकार को पूर्ण विश्वास था कि वह मर जाएगा।

तरे वर्ष पीढ़ी से पीढ़ी तक बने रहेंगे!"

25 आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली,
और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है।

26 वह तो नाश होगा, परन्तु तू बना रहेगा;
और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा।
तू उसको वस्त्र के समान बदलेगा, और वह मिट जाएगा;

27 परन्तु तू वहीं है,
और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।

28 तेरे दासों की सन्तान बनी रहेगी;
और उनका वंश तेरे सामने स्थिर रहेगा।

103

<u>शाशिशिशिशिश</u> <u>202</u> 202 <u>202</u> <u>202</u> <u>202</u> <u>202</u> <u>202</u> <u>202</u> <u>202</u> <u>202</u> <u>202</u> <u>202</u>

धर्म और न्याय के काम करता है।

7 उसने मुसा को अपनी गति, और इस्राएलियों पर अपने काम प्रगट किए। (2. 147:19) 8 यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी, विलम्ब से कोप करनेवाला और अति करुणामय है (???. 86:15, ???. 145:8) न उसका ऋोध सदा के लिये भड़का रहेगा। 10 उसने हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार नहीं किया, और न हमारे अधर्म के कामों के अनुसार हमको बदला दिया है। ¹¹ जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊँचा है, वैसे ही उसकी करुणा उसके डरवैयों के ऊपर प्रबल है। ¹² उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया है। ¹³ जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है। ¹⁴ क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है; और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है। 15 मनुष्य की आयु घास के समान होती है, वह मैदान के फूल के समान फूलता है, ¹⁶ जो पवन लगते ही ठहर नहीं सकता, और न वह अपने स्थान में फिर मिलता है। ¹⁷परन्तु यहोवा की करुणा उसके डरवैयों पर युग-युग, और उसका धर्म उनके नाती-पोतों पर भी प्रगट होता रहता है, (??????? 1:50)

18 अर्थात् उन पर जो उसकी वाचा का पालन करते और उसके उपदेशों को स्मरण करके उन पर चलते हैं। 19 यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है, और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है।

^{ं 103:9} 2/2 2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2 द्वाड़केगा, विरोध करेगा, संघर्ष करेगा। वह मनुष्यों से सदैव संघर्ष नहीं करेगा, अप्रसन्न नहीं होगा।

20 हे यहोवा के दूतों, तुम जो बड़े वीर हो, और शिशिशिश शिशिशिशिशिशिशिशिश और पूरा करते हो, उसको धन्य कहो! 21 हे यहोवा की सारी सेनाओं, हे उसके सेवकों, तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो, उसको धन्य कहो! 22 हे यहोवा की सारी सृष्टि, उसके राज्य के सब स्थानों में उसको धन्य कहो। हे मेरे मन, तु यहोवा को धन्य कह!

104

<u>[2[2]2[2]2[2]2[2]2[2]2</u> [2]2 [2]2[2]2[2]?[1 हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह! हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू अत्यन्त महान है! तू वैभव और ऐश्वर्य का वस्त्र पहने हुए है, 2त उजियाले को चादर के समान ओढ़े रहता है, और आकाश को तम्बू के समान ताने रहता है, 3त अपनी अटारियों की कड़ियाँ जल में धरता है, और मेघों को अपना रथ बनाता है, और पवन के पंखों पर चलता है, 4त पवनों को अपने दूत, और धधकती आग को अपने सेवक बनाता है। (???????. 1:7) 5 तुने पृथ्वी को उसकी नींव पर स्थिर किया है, ताकि वह कभी न डगमगाए। 6 तूने उसको गहरे सागर से ढाँप दिया है जैसे वस्त्र से; जल पहाड़ों के ऊपर ठहर गया। 7 तेरी घड़की से वह भाग गया;

⁻‡ 103:20 @@@@ @@@ @@@ @@@@@@</u>: जो सदैव उसकी वाणी सुनते हैं जो उसकी आज्ञा नहीं टालते।

तेरे गरजने का शब्द सुनते ही, वह उतावली करके बह गया। 8वह पहाड़ों पर चढ़ गया, और तराइयों के मार्ग से उस स्थान में उतर गया जिसे तुने उसके लिये तैयार किया था। 9 तूने एक सीमा ठहराई जिसको वह नहीं लाँघ सकता है, और न लौटकर स्थल को ढाँप सकता है। वे पहाड़ों के बीच से बहते हैं, 11 उनसे मैदान के सब जीव-जन्तु जल पीते हैं; जंगली गदहे भी अपनी प्यास बुझा लेते हैं। 12 उनके पास आकाश के पक्षी बसेरा करते, 13 तू अपनी अटारियों में से पहाड़ों को सींचता है, तेरे कामों के फल से पृथ्वी तृप्त रहती है। 14त पशुओं के लिये घास, और मनुष्यों के काम के लिये अन्न आदि उपजाता है, और इस रीति भूमि से वह भोजन-वस्तुएँ उत्पन्न करता है 15 और दाखमधु जिससे मनुष्य का मन आनन्दित होता है, और तेल जिससे उसका मुख चमकता है, और अन्न जिससे वह सम्भल जाता है। ¹⁶ यहोवा के वृक्ष तृप्त रहते हैं, अर्थात् लबानोन के देवदार जो उसी के लगाए हुए हैं। 17 उनमें चिड़ियाँ अपने घोंसले बनाती हैं: सारस का बसेरा सनोवर के वृक्षों में होता है। 18 ऊँचे पहाड़ जंगली बकरों के लिये हैं; और चट्टानें शापानों के शरणस्थान हैं।

^{* 104:10} 2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2 2/2/2/2/2/2 यद्यपि पानी समुद्र में भरता है, परमेश्वर ने फिर भी ध्यान रखा है कि पृथ्वी सूखी, निर्जल और ऊसर न रहे। उसने उसकी सींचाई कि व्यवस्था की है।

सूर्य अपने अस्त होने का समय जानता है। 20 तू अंधकार करता है, तब रात हो जाती है; जिसमें वन के सब जीव-जन्तु घूमते-फिरते हैं। 21 जवान सिंह अहेर के लिये गर्जते हैं, और परमेश्वर से अपना आहार माँगते हैं। 22 सूर्य उदय होते ही वे चले जाते हैं और अपनी माँदों में विश्राम करते हैं। 23 तब मनुष्य अपने काम के लिये और संध्या तक परिश्रम करने के लिये निकलता है। 24 हे यहोवा, तेरे काम अनगिनत हैं! इन सब वस्तुओं को तूने बुद्धि से बनाया है; पृथ्वी तेरी सम्पत्ति से परिपूर्ण है। ²⁵ इसी प्रकार समुद्र बड़ा और बहुत ही चौड़ा है, और उसमें अनगिनत जलचर जीव-जन्तु, क्या छोटे, क्या बड़े भरे पड़े हैं। ²⁶ उसमें जहाज भी आते-जाते हैं, और लिव्यातान भी जिसे तूने वहाँ खेलने के लिये बनाया है। ²⁷ इन सब को तेरा ही आसरा है, कि तू उनका आहार समय पर दिया करे। 28 तू उन्हें देता है, वे चुन लेते हैं; तू अपनी मुट्टी खोलता है और वे उत्तम पदार्थों से तृप्त होते हैं। ²⁹ तू मुख फेर लेता है, और वे घबरा जाते हैं; तू उनकी साँस ले लेता है, और उनके प्राण छुट जाते हैं

और मिट्टी में फिर मिल जाते हैं।

105

और दुष्ट लोग आगे को न रहें! हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह!

यहोवा की स्तुति करो!

¹ यहोवा का धन्यवाद करो, उससे प्रार्थना करो, देश-देश के लोगों में उसके कामों का प्रचार करो! ² उसके लिये भजन गाओ, उसके लिये भजन गाओ, उसके सब आश्चर्यकर्मों का वर्णन करो! ³ उसके पवित्र नाम की बड़ाई करो; यहोवा के खोजियों का हृदय आनन्दित हो! ⁴ यहोवा और उसकी सामर्थ्य को खोजो, उसके दर्शन के लगातार खोजी बने रहो! ⁵ उसके किए हए आश्चर्यकर्मों को स्मरण करो,

 $[\]ddagger$ **104:30** 22 2222 22 222 222 222 222 222 पृथ्वी को निर्जन नहीं रखा गया है। एक पीढ़ी समाप्त होती है तो दूसरी पीढ़ी आ जाती है।

उसके चमत्कार और निर्णय स्मरण करो! 6 हे उसके दास अब्राहम के वंश, हे याकूब की सन्तान, तुम तो उसके चुने हुए हो! 7 वही हमारा परमेश्वर यहोवा है; पृथ्वी भर में उसके निर्णय होते हैं। 8वह अपनी वाचा को सदा स्मरण रखता आया है, यह वही वचन है जो उसने हजार पीढ़ियों के लिये ठहराया है; 9 वही वाचा जो उसने अब्राहम के साथ बाँधी, और उसके विषय में उसने इसहाक से शपथ खाई, (2)???? 1:72,73) 10 और उसी को उसने याकुब के लिये विधि करके, और इस्राएल के लिये यह कहकर सदा की वाचा करके दृढ़ किया, 11 "मैं कनान देश को तुझी को दुँगा, वह बाँट में तुम्हारा निज भाग होगा।" 12 उस समय तो वे गिनती में थोड़े थे, वरन् बहत ही थोड़े, और उस देश में परदेशी थे। ¹³ वे एक जाति से दूसरी जाति में, और एक राज्य से दूसरे राज्य में फिरते रहे; 14 परन्तु उसने किसी मनुष्य को उन पर अत्याचार करने न दिया; और वह राजाओं को उनके निमित्त यह धमकी देता था, 15 "?!!?!?! ?!!?!?!?!?!?!?!?!?!?! ?!!?! ?!!?! ?!!?!. और न मेरे निबयों की हानि करो!" ¹⁶ फिर उसने उस देश में अकाल भेजा, और अन्न के सब आधार को दूर कर दिया। 17 उसने यूसुफ नामक एक पुरुष को उनसे पहले भेजा था,

* 105:15 @@@@ @@@@@@@@@@@ @@ @@@ यहाँ अभिषिक्त शब्द का अर्थ है परमेश्वर ने उन्हें अपनी सेवा के लिए पृथक कर दिया है।

¹⁸ लोगों ने उसके पैरों में बेड़ियाँ डालकर उसे दु:ख दिया;

जो दास होने के लिये बेचा गया था।

वह लोहे की साँकलों से जकड़ा गया;

¹⁹जब तक कि उसकी बात पूरी न हुई

तब तक यहोवा का वचन उसे कसौटी पर कसता रहा।

²⁰तब राजा ने दूत भेजकर उसे निकलवा लिया,

और देश-देश के लोगों के स्वामी ने उसके बन्धन खुलवाए;

21 उसने उसको अपने भवन का प्रधान

22 कि वह उसके हाकिमों को अपनी इच्छा के अनुसार नियंत्रित करे

और पुरनियों को ज्ञान सिखाए।

²³ फिर इस्राएल मिस्र में आया;

और याकूब हाम के देश में रहा।

24 तब उसने अपनी प्रजा को गिनती में बहुत बढ़ाया,

और उसके शत्रुओं से अधिक बलवन्त किया।

25 उसने मिस्रियों के मन को ऐसा फेर दिया,

कि वे उसकी प्रजा से बैर रखने,

और उसके दासों से छल करने लगे।

26 उसने अपने दास मूसा को,

और अपने चुने हुए हारून को भेजा।

27 उन्होंने मिस्रियों के बीच उसकी ओर से भाँति-भाँति के चिन्ह,

और हाम के देश में चमत्कार दिखाए।

²⁸ उसने अंधकार कर दिया, और अंधियारा हो गया;

और उन्होंने उसकी बातों को न माना।

²⁹ उसने मिस्रियों के जल को लह कर डाला,

और मछलियों को मार डाला।

³⁰ मेंद्रक उनकी भूमि में वरन् उनके राजा की कोठरियों में भी भर गए।

³¹ उसने आज्ञा दी, तब डांस आ गए,

और उनके सारे देश में कुटकियाँ आ गई। 32 उसने उनके लिये जलवृष्टि के बदले ओले, और उनके देश में धधकती आग बरसाई। ³³ और उसने उनकी दाखलताओं और अंजीर के वृक्षों को वरन उनके देश के सब पेड़ों को तोड़ डाला। ³⁴ उसने आज्ञा दी तब अनगिनत टिड्डियाँ, और कीड़े आए, 35 और उन्होंने उनके देश के सब अन्न आदि को खा डाला; और उनकी भूमि के सब फलों को चट कर गए। ³⁶ उसने उनके देश के सब पहिलौठों को, उनके पौरूष के सब पहले फल को नाश किया। ³⁷ तब वह इस्राएल को सोना चाँदी दिलाकर निकाल लाया, और उनमें से कोई निर्बल न था। 38 उनके जाने से मिस्री आनन्दित हए, क्योंकि उनका डर उनमें समा गया था। 39 उसने छाया के लिये बादल फैलाया, और रात् को प्रकाश देने के लिये आग प्रगट की। ⁴⁰ उन्होंने माँगा तब उसने बटेरें पहँचाई, और उनको स्वर्गीय भोजन से तृप्त किया। (????. 6:31) 41 उसने चट्टान फाड़ी तब पानी बह निकला; और निर्जल भूमि पर नदी बहने लगी। ⁴³वह अपनी प्रजा को हर्षित करके और अपने चुने हुओं से जयजयकार कराके निकाल लाया। 44 और उनको जाति-जाति के देश दिए; और वे अन्य लोगों के श्रम के फल के अधिकारी किए गए, 45 कि वे उसकी विधियों को मानें.

और उसकी व्यवस्था को पूरी करें। यहोवा की स्तृति करो!

106

भला है:

और उसकी करुणा सदा की है!

2 यहोवा के पराऋम के कामों का वर्णन कौन कर सकता है,

या उसका पूरा गुणानुवाद कौन सुना सकता है?

3 क्या ही धन्य हैं वे जो न्याय पर चलते,

और हर समय धर्म के काम करते हैं!

4हे यहोवा, अपनी प्रजा पर की, प्रसन्नता के अनुसार मुझे स्मरण

मेरे उद्घार के लिये मेरी सुधि ले,

5 कि मैं तेरे चुने हओं का कल्याण देखूँ,

और तेरी प्रजा के आनन्द में आनन्दित हो जाऊँ;

और तेरे निज भाग के संग बड़ाई करने पाऊँ।

हमने कुटिलता की, हमने दुष्टता की है!

⁷ मिस्र[े] में हमारे पुरखाओं ने तेरे आश्चर्यकर्मों पर मन नहीं लगाया.

न तेरी अपार करुणा को स्मरण रखा;

उन्होंने समुद्र के किनारे, अर्थात् लाल समुद्र के किनारे पर बलवा किया।

8तो भी उसने अपने नाम के निमित्त उनका उद्धार किया, जिससे वह अपने पराऋम को प्रगट करे।

⁹तब उसने लाल समुद्र को घुड़का और वह सूख गया;

किया है। हमने उनका उदाहरण अनुसरण किया है।

और वह उन्हें गहरे जल के बीच से मानो जंगल में से निकाल ले ¹⁰ उसने उन्हें बैरी के हाथ से उबारा, और शत्रु के हाथ से छुड़ा लिया। *(?!?!?!? 1:71)* 11 और उनके शत्र जल में डूब गए; उनमें से एक भी न बचा। 12 तब उन्होंने उसके वचनों का विश्वास किया; और उसकी स्तृति गाने लगे। 13 परन्तु वे झट उसके कामों को भूल गए; और उसकी युक्ति के लिये न ठहरे। 14 उन्होंने जंगल में अति लालसा की और निर्जल स्थान में परमेश्वर की परीक्षा की। (1 2/2/2/2. 10:9) ¹⁵तब उसने उन्हें मुँह माँगा वर तो दिया, परन्तु उनके प्राण को सूखा दिया। 16 उन्होंने छावनी में मुसा के, और यहोवा के पवित्र जन हारून के विषय में डाह की, 17 भूमि फटकर दातान को निगल गई, और अबीराम के झुण्ड को निगल लिया। 18 और उनके झुण्ड में आग भड़क उठी; और दुष्ट लोग लौ से भस्म हो गए। ¹⁹ उन्होंने होरेब में बछुड़ा बनाया, और ढली हुई मूर्ति को दण्डवत् किया।

20 <u>2022. 20</u>

21 वे अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को भूल गए, जिसने मिस्र में बड़े-बड़े काम किए थे।

- 22 उसने तो हाम के देश में आश्चर्यकर्मों
- और लाल समुद्र के तट पर भयंकर काम किए थे।
- ²³ इसलिए उसने कहा कि मैं इन्हें सत्यानाश कर डालता
- यदि मेरा चुना हुआ मूसा जोखिम के स्थान में उनके लिये खड़ा न होता
- ताकि मेरी जलजलाहट को ठंडा करे कहीं ऐसा न हो कि मैं उन्हें नाश कर डालुँ।
- 24 उन्होंने मनभावने देश को निकम्मा जाना,
- और उसके वचन पर विश्वास न किया।
- 25 वे अपने तम्बुओं में कुड़कुड़ाए,
- और यहोवा का कहा न माना।
- ²⁶ तब उसने उनके विषय में शपथ खाई कि मैं इनको जंगल में नाश करूँगा.
- 27 और इनके वंश को अन्यजातियों के सम्मुख गिरा दुँगा,
- और देश-देश में तितर-बितर करूँगा। (???. 44:11)
- 28 वे बालपोर देवता को पूजने लगे और मुर्दों को चढ़ाए हुए पशुओं का माँस खाने लगे।
- 29 यों उन्होंने अपने कामों से उसको ऋोध दिलाया,
- और मरी उनमें फूट पड़ी।
- 30 तब पीनहास ने उठकर न्यायदण्ड दिया,

जिससे मरी थम गई।

- 31 और यह उसके लेखे पीढ़ी से पीढ़ी तक सर्वदा के लिये धर्म गिना गया।
- 32 उन्होंने मरीबा के सोते के पास भी यहोवा का ऋोध भड़काया, और उनके कारण मूसा की हानि हई;
- 33 क्योंकि उन्होंने उसकी आत्मा से बलवा किया,

तब ????? ???? ???? ???? !! 34 जिन लोगों के विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी, उनको उन्होंने सत्यानाश न किया, ³⁵ वरन् उन्हीं जातियों से हिलमिल गए और उनके व्यवहारों को सीख लिया; ³⁶ और उनकी मूर्तियों की पूजा करने लगे, और वे उनके लिये फंदा बन गई। 37 वरन् उन्होंने अपने बेटे-बेटियों को पिशाचों के लिये बलिदान किया; (1 ??????. 10:20) ³⁸ और अपने निर्दोष बेटे-बेटियों का लह बहाया जिन्हें उन्होंने कनान की मूर्तियों पर बलि किया, इसलिए देश खून से अपवित्र हो गया। ³⁹ और वे आप अपने कामों के द्वारा अशुद्ध हो गए, और अपने कार्यों के द्वारा व्यभिचारी भी बन गए। 40 तब यहोवा का ऋोध अपनी प्रजा पर भड़का, और उसको अपने निज भाग से घणा आई: 41 तब उसने उनको अन्यजातियों के वश में कर दिया. और उनके बैरियों ने उन पर प्रभुता की। 42 उनके शत्रुओं ने उन पर अत्याचार किया, और वे उनके हाथों तले दब गए। 43 बारम्बार उसने उन्हें छुड़ाया, परन्तु वे उसके विरुद्ध बलवा करते गए, और अपने अधर्म के कारण दबते गए। 44 फिर भी जब जब उनका चिल्लाना उसके कान में पड़ा, तब-तब उसने उनके संकट पर दृष्टि की!

^{‡ 106:33 2020 2020 2020 2020 2020} मूसा ने उन्हें सहन नहीं किया। उसने परमेश्वर के सामने उनकी समस्या नहीं रखी। उसने अपने सामर्थ्य पर और अपनी भलाई पर ध्यान नहीं दिया जैसा वह कर सकता था। उसने इस प्रकार बोला जैसे की सब कुछ उस पर और हारून पर निर्भर था।

 45 और उनके हित अपनी वाचा को स्मरण करके अपनी अपार करुणा के अनुसार तरस खाया,

46 और जो उन्हें बन्दी करके ले गए थे उन सबसे उन पर दया कराई।

47 हे हमारे परमेश्वर यहोवा, हमारा उद्घार कर, और हमें अन्यजातियों में से इकट्ठा कर ले, कि हम तेरे पिवत्र नाम का धन्यवाद करें, और तेरी स्तुति करते हुए तेरे विषय में बड़ाई करें। 48 इस्राएल का परमेश्वर यहोवा अनादिकाल से अनन्तकाल तक धन्य है! और सारी प्रजा कहे "आमीन!" यहोवा की स्तुति करो। (20. 41:13)

पाँचवाँ भाग

107

22. 107-150

1 यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी करुणा सदा की है!

2 यहोवा के छुड़ाए हुए ऐसा ही कहें,

जिन्हें उसने शत्रु के हाथ से दाम देकर छुड़ा लिया है,

3 और उन्हें देश-देश से,

पूरव-पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से इकट्ठा किया है। (212). 106:47)

4वे जंगल में मरूभूमि के मार्ग पर भटकते फिरे, और कोई बसा हुआ नगर न पाया;

5 भूख और प्यास के मारे,

वे विकल हो गए।

6 तब उन्होंने संकट में यहोवा की दुहाई दी,

और उसने उनको सकेती से छुड़ाया;

7 और उनको ठीक मार्ग पर चलाया,

ताकि वे बसने के लिये किसी नगर को जा पहुँचे।

8 लोग यहोवा की करुणा के कारण,

और उन आश्चर्यकर्मों के कारण, जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें!

9 क्योंकि वह अभिलाषी जीव को सन्तुष्ट करता है,

और भूखे को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है। (??????? 1:53, ????????. 31:25)

¹⁰ जो अंधियारे और मृत्यु की छाया में बैठे,

और दु:ख में पड़े और बेड़ियों से जकड़े हुए थे,

11 22222 22 22 22222222 22 2222222 222*,

और परमप्रधान की सम्मति को तुच्छ जाना।

12 तब उसने उनको कष्ट के द्वारा दबाया;

वे ठोकर खाकर गिर पड़े, और उनको कोई सहायक न मिला।

13 तब उन्होंने संकट में यहोवा की दुहाई दी,

और उसने सकेती से उनका उद्धार किया;

 14 उसने उनको अंधियारे और मृत्यु की छाया में से निकाल लिया;

और उनके बन्धनों को तोड़ डाला।

15 लोग यहोवा की करुणा के कारण,

और उन आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें!

16 क्योंकि उसने पीतल के फाटकों को तोड़ा,

और लोहे के बेंड़ों को टुकड़े-टुकड़े किया।

¹⁷ मूर्ख अपनी कुचाल,

और अधर्म के कामों के कारण अति दुःखित होते हैं।

18 उनका जी सब भाँति के भोजन से मिचलाता है,

और वे मृत्यु के फाटक तक पहुँचते हैं।

19 तब वे संकट में यहोवा की दुहाई देते हैं,

और वह सकेती से उनका उद्धार करता है;

और जिस गड्ढे में वे पड़े हैं, उससे निकालता है। (🕮. 147:15)

21 लोग यहोवा की करुणा के कारण

और उन आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें!

22 और वे धन्यवाद-बलि चढ़ाएँ,

और जयजयकार करते हुए, उसके कामों का वर्णन करें।

23 जो लोग जहाजों में समुद्र पर चलते हैं,

और महासागर पर होकर व्यापार करते हैं;

24 वे यहोवा के कामों को,

और उन आश्चर्यकर्मों को जो वह गहरे समुद्र में करता है, देखते हैं।

25 क्योंकि वह आज्ञा देता है, तब प्रचण्ड वायु उठकर तरंगों को उठाती है।

26 वे आकाश तक चढ़ जाते, फिर गहराई में उतर आते हैं;

और क्लेश के मारे उनके जी में जी नहीं रहता;

²⁷ वे चक्कर खाते, और मतवालों की भाँति लड़खड़ाते हैं,

और उनकी सारी बुद्धि मारी जाती है।

28 तब वे संकट में यहोवा की दुहाई देते हैं,

और वह उनको सकेती से निकालता है।

²⁹ वह आँधी को थाम देता है और तरंगें बैठ जाती हैं।

30 तब वे उनके बैठने से आनन्दित होते हैं,

और वह उनको मन चाहे बन्दरगाह में पहुँचा देता है।

31 लोग यहोवा की करणा के कारण, और उन आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें। 32 और सभा में उसको सराहें, और पुरनियों के बैठक में उसकी स्तुति करें। 33 वह निदयों को जंगल बना डालता है, और जल के सोतों को सूखी भूमि कर देता है। 34 वह फलवन्त भूमि को बंजर बनाता है, यह वहाँ के रहनेवालों की दुष्टता के कारण होता है।

³⁵ वह जंगल को जल का ताल,

और निर्जल देश को जल के सोते कर देता है।

36 और वहाँ वह भूखों को बसाता है,

कि वे बसने के लिये नगर तैयार करें;

37 और खेती करें, और दाख की बारियाँ लगाएँ,

और भाँति-भाँति के फल उपजा लें।

³⁸ और वह उनको ऐसी आशीष देता है कि वे बहुत बढ़ जाते हैं,

और उनके पशुओं को भी वह घटने नहीं देता।

40 और वह हाकिमों को अपमान से लादकर मार्ग रहित जंगल में भटकाता है;

41 वह दिरद्रों को दुःख से छुड़ाकर ऊँचे पर रखता है,

और उनको भेड़ों के झुण्ड के समान परिवार देता है।

42 सीधे लोग देखकर आनन्दित होते हैं;

और सब कुटिल लोग अपने मुँह बन्द करते हैं।

43 जो कोई बुद्धिमान हो, वह इन बातों पर ध्यान करेगा;

^{‡ 107:39 202 202020 202 202020 202020 20202:} अर्थात् सब कुछ परमेश्वर के हाथ में है। वह सब पर राज करता है और सब को निर्देश देता है। यदि समृद्धि है तो वह परमेश्वर से है यदि इसका विपरीत होता है तो वह भी परमेश्वर के हाथ में हैं। मनुष्य सदा ही समृद्ध नहीं रहता है।

और यहोवा की करुणा के कामों पर ध्यान करेगा।

108

1 हे परमेश्वर, मेरा हृदय स्थिर है; <u> 222 22222, 222 2222 2222 2222 2222</u> ² हे सारंगी और वीणा जागो! मैं आप पौ फटते जाग उठूँगा ³हे यहोवा, मैं देश-देश के लोगों के मध्य में तेरा धन्यवाद करूँगा, और राज्य-राज्य के लोगों के मध्य में तेरा भजन गाऊँगा। 4 क्योंकि तेरी करुणा आकाश से भी ऊँची है, और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक है। 5 हे परमेश्वर, तू स्वर्ग के ऊपर हो! और तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर हो! ⁶ इसलिए कि तेरे प्रिय छुड़ाए जाएँ, तू अपने दाहिने हाथ से बचा ले और हमारी विनती सुन ले! ⁷ परमेश्वर ने अपनी पवित्रता में होकर कहा है, "मैं प्रफुल्लित होकर शेकेम को बाँट लूँगा, और सुक्कोत की तराई को नपवाऊँगा। 8 गिलाद मेरा है, मनश्शे भी मेरा है; और एप्रैम मेरे सिर का टोप है; यहदा मेरा राजदण्ड है। 9 मो आब मेरे धोने का पात्र है, मैं एदोम पर अपना जूता फेंकूँगा, पलिश्त पर मैं जयजयकार करूँगा।" ¹⁰ मुझे गढ़वाले नगर में कौन पहुँचाएगा?

एदोम तक मेरी अगुआई किसने की हैं?

109

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन 1 हे परमेश्वर तू, जिसकी मैं स्तुति करता हूँ, चुप न रह! 2 क्यों कि दुष्ट और कपटी मनुष्यों ने मेरे विरुद्ध मुँह खोला है, वे मेरे विषय में झठ बोलते हैं। 3 उन्होंने बैर के वचनों से मुझे चारों ओर घेर लिया है, और व्यर्थ मुझसे लड़ते हैं। (शिशि. 15:25) 4 मेरे प्रेम के बदले में वे मेरी चुगली करते हैं, परन्तु मैं तो प्रार्थना में लौलीन रहता हैं। 5 उन्होंने भलाई के बदले में मुझसे बुराई की और मेरे प्रेम के बदले मुझसे बैर किया है। 6त उसको किसी दुष्ट के अधिकार में रख, और कोई विरोधी उसकी दाहिनी ओर खड़ा रहे। 7 जब उसका न्याय किया जाए, तब वह दोषी निकले, और उसकी प्रार्थना पाप गिनी जाए! 8 उसके दिन थोड़े हों, ⁹ उसके बच्चे अनाथ हो जाएँ.

और उसकी स्त्री विधवा हो जाए! 10 और उसके बच्चे मारे-मारे फिरें, और भीख माँगा करे; उनको अपने उजड़े हुए घर से दूर जाकर टुकड़े माँगना पड़े! ¹¹ 22222 2222 22222, 2222 22222 22 22*; और परदेशी उसकी कमाई को लूट लें! 12 कोई न हो जो उस पर करुणा करता रहे, और उसके अनाथ बालकों पर कोई तरस न खाए! ¹³ उसका वंश नाश हो जाए, दूसरी पीढ़ी में उसका नाम मिट जाए! 14 उसके पितरों का अधर्म यहोवा को स्मरण रहे, और उसकी माता का पाप न मिटे! ¹⁵ वह निरन्तर यहोवा के सम्मुख रहे, वह उनका नाम पृथ्वी पर से मिटे! ¹⁶ क्योंकि वह दुष्ट, करुणा करना भूल गया वरन दीन और दरिद्र को सताता था और मार डालने की इच्छा से खेदित मनवालों के पीछे पड़ा रहता था। 17 वह श्राप देने से प्रीति रखता था, और श्राप उस पर आ पड़ा; वह आशीर्वाद देने से प्रसन्न न होता था, इसलिए आशीर्वाद उससे दूर रहा। 18 वह श्राप देना वस्त्र के समान पहनता था, और वह उसके पेट में जल के समान और 2222 22222 विशेषा गया। ¹⁹ वह उसके लिये ओढ़ने का काम दे, और फेंटे के समान उसकी कमर में नित्य कसा रहे। 20 यहोवा की ओर से मेरे विरोधियों को,

^{* 109:11} 20202 20202 202022, 20202 2020202 202

और मेरे विरुद्ध बुरा कहनेवालों को यही बदला मिले!

21 परन्तु हे यहोवा प्रभुं, तू अपने नाम के निमित्त मुझसे बर्ताव कर;

तेरी करुणा तो बड़ी है, इसलिए तू मुझे छुटकारा दे!

22 क्यों कि मैं दीन और दरिद्र हुँ,

और ????? ???? ???? ???? ???!

23 मैं ढलती हुई छाया के समान जाता रहा हूँ;

मैं टिड्डी के समान उड़ा दिया गया हूँ।

24 उपवास करते-करते मेरे घुटने निर्बल हो गए;

और मुझ में चर्बी न रहने से मैं सूख गया हूँ।

25 मेरी तो उन लोगों से नामधराई होती है;

जब वे मुझे देखते, तब सिर हिलाते हैं। (????????. 10:12-13, ??????? 20:42-43)

²⁶ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरी सहायता कर!

अपनी करुणा के अनुसार मेरा उद्घार कर!

27 जिससे वे जाने कि यह तेरा काम है,

और हे यहोवा, तूने ही यह किया है!

28 वे मुझे कोसते तो रहें, परन्तु तु आशीष दे!

वे तो उठते ही लज्जित हों, परन्तु तेरा दास आनन्दित हो! (1 ??!?!?!. 4:12)

29 मेरे विरोधियों को अनादररूपी वस्त्र पहनाया जाए,

और वे अपनी लज्जा को कम्बल के समान ओढ़ें!

30 मैं यहोवा का बहुत धन्यवाद करूँगा,

और बहुत लोगों के बीच में उसकी स्तुति करूँगा।

31 क्योंकि वह दरिद्र की दाहिनी ओर खड़ा रहेगा, कि उसको प्राणदण्ड देनेवालों से बचाए।

110

दाऊद का भजन

¹ मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, "तू मेरे दाहिने ओर बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ।" (????????. 10:12,13, ?????? 20:42,43)

- ² तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिय्योन से बढ़ाएगा। तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन कर।
- 3 तेरी प्रजा के लोग तेरे पराक्रम के दिन स्वेच्छाबलि बनते हैं; तेरे जवान लोग पवित्रता से शोभायमान, और भोर के गर्भ से जन्मी हुई ओस के समान तेरे पास हैं। 4 यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा,

⁵ प्रभु तेरी दाहिनी ओर होकर

अपने क्रोध के दिन राजाओं को चूर कर देगा। (212. 143:5)

6 वह जाति-जाति में न्याय चुकाएगा, रणभूमि शवों से भर जाएगी;

वह लम्बे चौड़े देशों के प्रधानों को चूर चूरकर देगा

7 वह मार्ग में चलता हुआ नदी का जल पीएगा
और तब वह विजय के बाद अपने सिर को ऊँचा करेगा।

111

1यहोवा की स्तुति करो। मैं सीधे लोगों की गोष्ठी में और मण्डली में भी सम्पूर्ण मन से यहोवा का धन्यवाद करूँगा।

^{* 110:4 @@ @@@@@@@@@ @@ @@@@ @@ @@@@@ @@ @@@@ @@} अर्थात् वह मलिकिसिदक के समान पुरोहित था जैसा वह पुरोहित था वैसा ही पुरोहित होगा।

² यहोवा के काम बड़े हैं, जितने उनसे प्रसन्न रहते हैं, वे उन पर ध्यान लगाते हैं। (212). 143:5)

3 उसके काम वैभवशाली और ऐश्वर्यमय होते हैं, और उसका धर्म सदा तक बना रहेगा। 4 उसने अपने आश्चर्यकर्मों का स्मरण कराया है; यहोवा अनुग्रहकारी और दयावन्त है। (22. 86:5) 5 उसने अपने डरवैयों को आहार दिया है; वह अपनी वाचा को सदा तक स्मरण रखेगा। 6 उसने अपनी प्रजा को जाति-जाति का भाग देने के लिये, *????? ?????? ?? ?????? ??????? ??**\ ⁷सच्चाई और न्याय उसके हाथों के काम हैं; उसके सब उपदेश विश्वासयोग्य हैं, 8वे सदा सर्वदा अटल रहेंगे, वे सच्चाई और सिधाई से किए हुए हैं। 9 उसने अपनी प्रजा का उद्धार किया है; उसने अपनी वाचा को सदा के लिये ठहराया है। उसका नाम पवित्र और भययोग्य है। (?????? 1:49,68) 10 बुद्धि का मूल यहोवा का भय है; जितने उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, उनकी समझ अच्छी होती है। उसकी स्तुति सदा बनी रहेगी।

112

1यहोवा की स्तुति करो! क्या ही धन्य है वह पुरुष जो यहोवा का भय मानता है,

* 111:6 @@@@ @@@@@ @@@@@@@@@@@@@@@@@ @@: उसके कार्यों का प्रताप या उसके कामों में निहित सामर्थ्य । यहाँ जिस प्रताप और सामर्थ्य की चर्चा की गई है वह मिस्र के विनाश और कनान की जातियों के विनाश में कार्यकारी सामर्थ्य है । और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है! सीधे लोगों की सन्तान आशीष पाएगी। 3 उसके घर में धन-सम्पत्ति रहती है; और उसका धर्म सदा बना रहेगा। 4सीधे लोगों के लिये अंधकार के बीच में ज्योति उदय होती है; वह अनुग्रहकारी, दयावन्त और धर्मी होता है। 5 जो व्यक्ति अनुग्रह करता और उधार देता है, और ईमानदारी के साथ अपने काम करता है, उसका कल्याण होता है। 6 वह तो सदा तक अटल रहेगा; धर्मी का स्मरण सदा तक बना रहेगा। 7वह बुरे समाचार से नहीं डरता; उसका हृदय यहोवा पर भरोसा रखने से स्थिर रहता है। 8 उसका हृदय सम्भला हुआ है, इसलिए वह न डरेगा, वरन् अपने शत्रुओं पर दृष्टि करके सन्तुष्ट होगा। उसका धर्म सदा बना रहेगा: 9:9)

10 दुष्ट इसे देखकर कुढ़ेगा; वह दाँत पीस-पीसकर गल जाएगा; दुष्टों की लालसा पूरी न होगी। (2020 2020 7:54)

^{* 112:2 20202 2020 20202020 202 2020202020 202020:} उसकी सन्तान, उसके वंशज अर्थात् वे समृद्ध होंगे, सम्मानित होंगे, मनुष्यों के मध्य अपनी पहचान रखेंगे। † 112:9 20202 20202020 202 2020202020 202 2020202020 202 2020202020 वह उदार है वह मुक्त हस्त दान देता है। वह आवश्यकता ग्रस्त और अभागों में बाँट देता है।

113

1यहोवा की स्तुति करो! हे यहोवा के दासों, स्तुति करो, यहोवा के नाम की स्तुति करो! 2 यहोवा का नाम अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहा जाएँ! 3 उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक, यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है। 4 यहोवा सारी जातियों के ऊपर महान है, और उसकी महिमा आकाश से भी ऊँची है। 5 हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कौन है? वह तो ऊँचे पर विराजमान है, 6 और आकाश और पृथ्वी पर, दृष्टि करने के लिये झुकता है। 8 कि उसको प्रधानों के संग, 9 वह बाँझ को घर में बाल-बच्चों की आनन्द करनेवाली माता बनाता है। यहोवा की स्तुति करो!

114

???? ??? ????

1 जब इस्राएल ने मिस्र से, अर्थात् याकूब के घराने ने अन्य भाषावालों के मध्य से कूच किया,

²तब यहूदा यहोवा का पिवत्रस्थान
और इस्राएल उसके राज्य के लोग हो गए।

³समुद्र देखकर भागा,

यरदन नदी उलटी बही। (ति. 77:16)

⁴पहाड़ मेढ़ों के समान उछलने लगे,
और पहाड़ियाँ भेड़-बकरियों के बच्चों के समान उछलने लगीं।

⁵हे समुद्र, तुझे क्या हुआ, कि तू भागा?
और हे यरदन तुझे क्या हुआ कि तू उलटी बही?

⁶हे पहाड़ों, तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़ों के समान,
और हे पहाड़ियों तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़-बकरियों के बच्चों के समान उछलीं?

⁷हे पृथ्वी प्रभु के सामने,
हाँ, याकूब के परमेश्वर के सामने थरथरा। (ति. 96:9)

⁸ ति तित्राति वित्राति व

115

1 हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं, वरन् अपने ही नाम की महिमा,

अपनी करुणा और सच्चाई के निमित्त कर।

² जाति-जाति के लोग क्यों कहने पाएँ,

"उनका परमेश्वर कहाँ रहा?"

3 हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में हैं;

उसने जो चाहा वही किया है।

^{* 114:8 @@ @@@@@@ @@ @@ @@@ @@@ @@@ @@@@@ @@:} संदर्भ उस समय की घटना का है जब चट्टान से पानी निकलकर वहाँ तालाब बन गया था।

4 2/2 2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2/2* सोने चाँदी ही की तो हैं, वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं।

5 उनके मुँह तो रहता है परन्तु वे बोल नहीं सकती;
उनके आँखें तो रहती हैं परन्तु वे देख नहीं सकती।

6 उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सून नहीं सकती;
उनके नाक तो रहती हैं, परन्तु वे सूँघ नहीं सकती।

7 उनके हाथ तो रहते हैं, परन्तु वे स्पर्श नहीं कर सकती;
उनके पाँव तो रहते हैं, परन्तु वे चल नहीं सकती;
और उनके कण्ठ से कुछ, भी शब्द नहीं निकाल सकती। (2/2).

135:16,17)

8 जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले हैं; और उन पर सब भरोसा रखनेवाले भी वैसे ही हो जाएँगे। 9 हे इस्राएल, यहोवा पर भरोसा रख! तेरा सहायक और ढाल वही है। 10 हे हारून के घराने, यहोवा पर भरोसा रख! तेरा सहायक और ढाल वही है। 11 हे यहोवा के डरवैयों, यहोवा पर भरोसा रखो! तुम्हारा सहायक और ढाल वही है। 12 यहोवा ने हमको स्मरण किया है; वह आशीष देगा; वह इस्राएल के घराने को आशीष देगा;

वह हारून के घराने को आशीष देगा।

13 <u>22222 22222 22222</u> <u>222222</u> <u>5</u> जितने यहोवा के डरवैये हैं, वह उन्हें आशीष देगा। **(222. 128:1)**

¹⁴यहोवा तुम की और तुम्हारे वंश को भी अधिक बढ़ाता जाए।

^{* 115:4 2/2 2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2/2: 115:4-8} में मूर्तियों में विश्वास करने की निस्सारता की पराकाष्ठा और इस्राएल को सच्चे परमेश्वर में विश्वास करने का वर्णन किया गया है। † 115:13 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2/2: बड़ों के साथ छोटे, बच्चे और वयस्क, कंगाल और धनवान, अज्ञानी और ज्ञानवान, अकिंचन जन और गौरवान्वित जन्म एवं परिस्थिति के लोग।

15 यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है, उसकी ओर से तुम आशीष पाए हो।
16 स्वर्ग तो यहोवा का है,
परन्तु पृथ्वी उसने मनुष्यों को दी है।
17 मृतक जितने चुपचाप पड़े हैं,
वे तो यहोवा की स्तुति नहीं कर सकते,
18 परन्तु हम लोग यहोवा को
अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहते रहेंगे।
यहोवा की स्तुति करो!

116

^{* 116:3 2222 2222 222 222 2222 22222 22222 33} जीवन में संग्रह के प्रयत्न में हम जिन बातों में चूक: जाते हैं, हम मृत्यु से सम्बंधित संकटों और दुःखों को पाने में नहीं चूकते हैं। हम जहाँ भी जाए वे हमारे मार्ग में है, हम उनसे बच नहीं सकते।

क्योंकि यहोवा ने तेरा उपकार किया है। 8तूने तो मेरे प्राण को मृत्यु से, मेरी आँख को आँसु बहाने से, और मेरे पाँव को ठोकर खाने से बचाया है। 9मैं जीवित रहते हए, अपने को यहोवा के सामने जानकर नित चलता रहँगा। 10 मैंने जो ऐसा कहा है, इसे विश्वास की कसौटी पर कसकर कहा "मैं तो बहत ही दु:खित हँ;" (2 ??????. 4:13) 11 मैंने उतावली से कहा, "सब मनुष्य झठें हैं।" *(शिशि. 3:4)* 12 यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं, उनके बदले मैं उसको क्या दुँ? ¹³ मैं उद्घार का कटोरा उठाकर, यहोवा से प्रार्थना करूँगा, ¹⁴ मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें, सभी की दृष्टि में प्रगट रूप में, उसकी सारी प्रजा के सामने पूरी करूँगा। 15 <u>???????</u> <u>??? ????????</u> <u>??? ????????</u>

17 मैं तुझको धन्यवाद-बलि चढ़ाऊँगा, और यहोवा से प्रार्थना करूँगा। 18 मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें,

¹⁶ हे यहोवा, सुन, मैं तो तेरा दास हूँ; मैं तेरा दास, और तेरी दासी का पुत्र हूँ। तूने मेरे बन्धन खोल दिए हैं।

प्रगट में उसकी सारी प्रजा के सामने 19 यहोवा के भवन के आँगनों में, हे यरूशलेम, तेरे भीतर पूरी करूँगा। यहोवा की स्तृति करो!

117

1 हे जाति-जाति के सब लोगों, यहोवा की स्तुति करो! हे राज्य-राज्य के सब लोगों, उसकी प्रशंसा करो! *(?!!?!?*!. 15:11)

2 क्योंकि उसकी करुणा हमारे ऊपर प्रबल हुई है; और <u>??????</u> ?? ??????? ??? ??? ?? यहोवा की स्तुति करो!

118

1 यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी करुणा सदा की है! 2 इस्राएल कहे, उसकी करुणा सदा की है। ³हारून का घराना कहे उसकी करुणा सदा की है। 4 यहोवा के डरवैये कहे. उसकी करुणा सदा की है।

परमेश्वर ने मेरी सुनकर, मुझे चौड़े स्थान में पहुँचाया।

घोषणाएं, उसकी प्रतिज्ञाएँ, दया का उसका आश्वासन आदि। वे सभी देशों में जहाँ उनकी चर्चा है, अपरिवर्तनीय हैं। *** 118:5** @@@@@ @@@@@@@@@@@@@ 22 222222: संकटों के मध्य उसने परमेश्वर से प्रार्थना की और उसकी वाणी जो उसके दु:खों की गहराई से निकलती थी सुनी गई।

6 यहोवा मेरी ओर है, मैं न डरूँगा।
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है? (2020. 8:31, 2020. 13:6)
7 यहोवा मेरी ओर मेरे सहायक है;
मैं अपने बैरियों पर दृष्टि कर सन्तुष्ट होऊँगा।
8 यहोवा की शरण लेना,
मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम है।
9 यहोवा की शरण लेना,
प्रधानों पर भी भरोसा रखने से उत्तम है।
10 सब जातियों ने मुझ को घेर लिया है;
परन्तु यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूँगा।
11 उन्होंने मुझ को घेर लिया है, निःसन्देह, उन्होंने मुझे घेर लिया है;
परन्तु यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूँगा।
12 उन्होंने मुझे पर परिचलों के समस्त है।

परन्तु यहावा के नाम से में निश्चय उन्हें नाश कर डालूगा 12 उन्होंने मुझे मधुमिक्खयों के समान घेर लिया है, परन्तु काँटों की आग के समान वे बुझ गए; यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूँगा! 13 तने मझे बडा धक्का दिया तो था कि मैं गिर पड़ँ

13 तूने मुझे बड़ा धक्का दिया तो था, कि मैं गिर पड़ूँ,

परन्तु यहोवा ने मेरी सहायता की।

14 परमेश्वर मेरा बल और भजन का विषय है;

वह मेरा उद्धार ठहरा है।

15 धर्मियों के तम्बुओं में जयजयकार और उद्धार की ध्वनि हो रही है,

यहोवा के दाहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है,

 16 यहोवा का दाहिना हाथ महान हुआ है,

^{ं 118:17 222 2 2222222 2222 22222 2222222:} स्पष्ट है कि भजनकार ने जान लिया था कि वह मर जाएगा या उसे मृत्यु के अवश्यंभावी संकट की अनुभूति हो गई थी।

और परमेश्वर के कामों का वर्णन करता रहुँगा।

18 परमेश्वर ने मेरी बड़ी ताड़ना तो की है

परन्तु मुझे मृत्यु के वश में नहीं किया। (2 शाशाशा 6:9, शाशाशाशा 12:10.11)

19 मेरे लिये धर्म के द्वार खोलो.

मैं उनमें प्रवेश करके यहोवा का धन्यवाद करूँगा।

²⁰ यहोवा का द्वार यही है,

इससे धर्मी प्रवेश करने पाएँगे। (????. 10:9)

21 हे यहोवा, मैं तेरा धन्यवाद करूँगा,

क्योंकि तुने मेरी सुन ली है,

और मेरा उद्धार ठहर गया है।

22 राजिमस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था वहीं कोने का सिरा हो गया है। (1 ति. 2:4, ति. 2:17)

23 यह तो यहोवा की ओर से हआ है,

यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है।

24 आज वह दिन है जो यहोवा ने बनाया है;

हम इसमें मगन और आनन्दित हों।

²⁵ हे यहोवा, विनती सुन, उद्धार कर!

हे यहोवा, विनती सुन, सफलता दे!

²⁶ धन्य है वह जो यहोवा के नाम से आता है!

हमने तुम को यहोवा के घर से आशीर्वाद दिया है। (????????? **23:39**, **22.2 13:35**, **22. 11:9,10**, **22.2**

19:38)

27 यहोवा परमेश्वर है, और उसने हमको प्रकाश दिया है। यज्ञपशु को वेदी के सींगों से रस्सियों से बाँधो!

28 हे यहोवा, तु मेरा परमेश्वर है, मैं तेरा धन्यवाद करूँगा;

त् मेरा परमेश्वर है, मैं तुझको सराहँगा।

²⁹ यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है;

और उसकी करुणा सदा बनी रहेगी!

119

[?][?][?][?] आलेफ 1 क्या ही धन्य हैं वे जो चाल के खरे हैं, और यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं! 2 क्या ही धन्य हैं वे जो उसकी चितौनियों को मानते हैं, और पूर्ण मन से उसके पास आते हैं! 3 फिर वे कुटिलता का काम नहीं करते, वे उसके मार्गों में चलते हैं। कि हम उसे यत्न से माने। 5 भला होता कि तेरी विधियों को मानने के लिये मेरी चाल चलन दृढ़ हो जाए! 6 तब मैं तेरी सब आज्ञाओं की ओर चित्त लगाए रहुँगा, और मैं लज्जित न होऊँगा। 7 जब मैं तेरे धर्ममय नियमों को सीखँगा, तब तेरा धन्यवाद सीधे मन से करूँगा। 8 मैं तेरी विधियों को मानूँगाः मुझे पुरी रीति से न तज!

9 जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे? तेरे वचन का पालन करने से। ¹⁰ मैं पूरे मन से तेरी खोज में लगा हुँ; मुझे तेरी आज्ञाओं की बाट से भटकने न दे! 11 मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है,

करना अनिवार्य है वरन सदैव, हर परिस्थिति में उनका पालन किया जाए।

कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।

12 हे यहोवा, तू धन्य है;
मुझे अपनी विधियाँ सिखा!

13 तेरे सब कहे हुए नियमों का वर्णन,
मैंने अपने मुँह से किया है।

14 मैं तेरी चितौनियों के मार्ग से,
मानो सब प्रकार के धन से हर्षित हुआ हूँ।

15 मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूँगा,
और तेरे मार्गों की ओर दृष्टि रखूँगा।

16 मैं तेरी विधियों से सुख पाऊँगा;
और तेरे वचन को न भूलूँगा।

गिमेल्

. ¹⁷ अपने दास का उपकार कर कि मैं जीवित रहूँ,

और 2222 222 222 2222 2222 2222

18 मेरी आँखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूँ।

¹⁹ मैं तो पृथ्वी पर परदेशी हुँ;

अपनी आज्ञाओं को मुझसे छिपाए न रख!

20 मेरा मन तेरे नियमों की अभिलाषा के कारण हर समय खेदित रहता है।

 $^{\hat{21}}$ तूने अभिमानियों को, जो श्रापित हैं, घुड़का है,

वे तेरी आज्ञाओं से भटके हुए हैं।

22 मेरी नामधराई और अपमान दूर कर, क्योंकि मैं तेरी चितौनियों को पकड़े हुँ।

^{ं 119:17 2020 2020 2020 2020 2020 2020 2020} इस काम में अनुग्रह के लिए वह पूर्णरूपेण परमेश्वर पर निर्भर था और उसने प्रार्थना की कि ऐसा जीवन सदा बना रहे कि वह परमेश्वर के वचनों का पालन करके उनका सम्मान करे।

²³हाकिम भी बैठे हुए आपस में मेरे विरुद्ध बातें करते थे, परन्तु तेरा दास तेरी विधियों पर ध्यान करता रहा। 24 तेरी चितौनियाँ मेरा सुखमूल और मेरे मंत्री हैं।

दाल्थ

²⁵ मैं धूल में पड़ा हँ;

त् अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला!

26 मैंने अपनी चाल चलन का तुझ से वर्णन किया है और तूने मेरी बात मान ली है;

त् मुझ को अपनी विधियाँ सिखा!

27 अपने उपदेशों का मार्ग मुझे समझा,

तब मैं तेरे आश्चर्यकर्मों पर ध्यान करूँगा।

28 मेरा जीव उदासी के मारे गल चला है;

तू अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल!

29 मुझ को झुठ के मार्ग से दूर कर;

और कृपा करके अपनी व्यवस्था मुझे दे।

30 मैंने सच्चाई का मार्ग चुन लिया है,

तेरे नियमों की ओर मैं चित्त लगाए रहता हूँ।

31 मैं तेरी चितौनियों में लौलीन हँ,

हे यहोवा, मुझे लज्जित न होने दे!

32 जब तू मेरा हियाव बढ़ाएगा,

तब मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में दौड़ँगा।

हे ³³हे यहोवा, मुझे अपनी विधियों का मार्ग सिखा दे; तब मैं उसे अन्त तक पकड़े रहुँगा।

³⁴ मुझे समझ दे, तब मैं तेरी व्यवस्था को पकड़े रहँगा

और पूर्ण मन से उस पर चलुँगा।

35 अपनी आज्ञाओं के पथ में मुझ को चला,

क्योंकि मैं उसी से प्रसन्न हाँ।

36 मेरे मन को लोभ की ओर नहीं,

अपनी चितौनियों ही की ओर फेर दे।

तू अपने मार्ग में मुझे जिला।

38 तेरा वादा जो तेरे भय माननेवालों के लिये है,

उसको अपने दास के निमित्त भी पूरा कर।

³⁹ जिस नामधराई से मैं डरता हूँ, उसे दूर कर;

क्योंकि तेरे नियम उत्तम हैं।

40 देख, मैं तेरे उपदेशों का अभिलाषी हूँ;

अपने धर्म के कारण मुझ को जिला।

वाव

⁴¹ हे यहोवा, तेरी करुणा और तेरा किया हुआ उद्धार,

तेरे वादे के अनुसार, मुझ को भी मिले;

42 तब मैं अपनी नामधराई करनेवालों को कुछ उत्तर दे सकूँगा,

क्योंकि मेरा भरोसा, तेरे वचन पर है।

43 मुझे अपने सत्य वचन कहने से न रोक

क्योंकि मेरी आशा तेरे नियमों पर है।

 44 तब मैं तेरी व्यवस्था पर लगातार,

सदा सर्वदा चलता रहूँगा;

45 और मैं चौड़े स्थान में चला फिरा करूँगा, क्योंकि मैंने तेरे उपदेशों की सुधि रखी है।

46 और मैं तेरी चितौनियों की चर्चा राजाओं के सामने भी करूँगा, और लज्जित न होऊँगा; (2) 1:16)

47 क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं के कारण सुखी हूँ,

और मैं उनसे प्रीति रखता हूँ।

48 मैं तेरी आज्ञाओं की ओर जिनमें मैं प्रीति रखता हूँ, हाथ ूफैलाऊँगा

और तेरी विधियों पर ध्यान करूँगा।

ज़ैन

⁴⁹ जो वादा तूने अपने दास को दिया है, उसे स्मरण कर, क्योंकि तुने मुझे आशा दी है।

⁵⁰ मेरे दुःख में मुझे शान्ति उसी से हुई है,

क्यों कि तेरे वचन के द्वारा मैंने जीवन पाया है।

51 अहंकारियों ने मुझे अत्यन्त ठट्टे में उड़ाया है,

तो भी मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा।

52 हे यहोवा, मैंने तेरे प्राचीन नियमों को स्मरण करके

शान्ति पाई है।

53 जो दुष्ट तेरी व्यवस्था को छोड़े हुए हैं,

उनके कारण मैं ऋोध से जलता हूँ।

54 जहाँ मैं परदेशी होकर रहता हूँ, वहाँ तेरी विधियाँ,

मेरे गीत गाने का विषय बनी हैं।

55 हे यहोवा, मैंने रात को तेरा नाम स्मरण किया,

और तेरी व्यवस्था पर चला हूँ।

56 यह मुझसे इस कारण हुआ,

कि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए था।

2222222 22 2222 2222

हेथ

57 यहोवा मेरा भाग है;

मैंने तेरे वचनों के अनुसार चलने का निश्चय किया है।

58 मैंने पूरे मन से तुझे मनाया है;

इसलिए अपने वादे के अनुसार मुझ पर दया कर।

59 मैंने अपनी चाल चलन को सोचा,

और तेरी चितौनियों का मार्ग लिया।

60 मैंने तेरी आज्ञाओं के मानने में विलम्ब नहीं, फुर्ती की है।

61 मैं दुष्टों की रस्सियों से बन्ध गया हूँ,

तो भी मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला।

62 तेरे धर्ममय नियमों के कारण

मैं आधी रात को तेरा धन्यवाद करने को उठूँगा।

63 जितने तेरा भय मानते और तेरे उपदेशों पर चलते हैं, उनका मैं संगी हाँ।

64 हे यहोवा, तेरी करुणा पृथ्वी में भरी हुई है; तू मुझे अपनी विधियाँ सिखा!

टेथ

⁶⁵ हे यहोवा, तूने अपने वचन के अनुसार

अपने दास के संग भलाई की है।

66 मुझे भली विवेक-शक्ति और समझ दे,

क्योंकि मैंने तेरी आज्ञाओं का विश्वास किया है।

67 उससे पहले कि मैं दु:खित हुआ, मैं भटकता था;

⁶⁸ तू भला है, और भला करता भी है;

मुझे अपनी विधियाँ सिखा।

69 अभिमानियों ने तो मेरे विरुद्ध झूठ बात गढ़ी है, परन्तु मैं तेरे उपदेशों को पूरे मन से पकड़े रहँगा।

S 119:67 (2020) 2020 (2020) (2020) (2020) (2020) (2020) (2020) जब से में कष्टों में पड़ा उसका प्रभाव यह हुआ कि मैं भटकने नहीं पाया। उन्होंने मुझे कर्त्तव्य एवं पवित्रता के मार्ग में फिर से खड़ा कर दिया।

70 उनका मन मोटा हो गया है, परन्तु मैं तेरी व्यवस्था के कारण सुखी हूँ। 71 मुझे जो दु:ख हुआ वह मेरे लिये भला ही हुआ है, जिससे मैं तेरी विधियों को सीख सकूँ। 72 तेरी दी हुई व्यवस्था मेरे लिये हजारों रुपयों और मुहरों से भी उत्तम है।

योध

73 तरे हाथों से मैं बनाया और रचा गया हूँ;

मुझे समझ दे कि मैं तेरी आज्ञाओं को सीखूँ।
74 तेरे डरवैये मुझे देखकर आनन्दित होंगे,

क्योंकि मैंने तेरे वचन पर आशा लगाई है।

75 हे यहोवा, मैं जान गया कि तेरे नियम धर्ममय हैं, और तूने अपने सच्चाई के अनुसार मुझे दु:ख दिया है।

⁷⁶ मुझे अपनी करुणा से शान्ति दे,

क्यों कि तूने अपने दास को ऐसा ही वादा दिया है।

77 तेरी दया मुझ पर हो, तब मैं जीवित रहूँगा;

क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूँ।

78 अहं कारी लिज्जित किए जाए, क्योंकि उन्होंने मुझे झूठ के द्वारा गिरा दिया है;

परन्तु मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूँगा।

79 जो तेरा भय मानते हैं, वह मेरी ओर फिरें, तब वे तेरी चितौनियों को समझ लेंगे।

⁸⁰मेरा मन तेरी विधियों के मानने में सिद्ध हो,

ऐसा न हो कि मुझे लज्जित होना पड़े।

2022/22/22 22 22/22 22/22/22/22/2 काफ

81 मेरा प्राण तेरे उद्धार के लिये बैचेन है;

परन्तु मुझे तेरे वचन पर आशा रहती है।

82 मेरी आँखें तेरे वादे के पूरे होने की बाट जोहते-जोहते धुंधली पड़ गई है;

और मैं कहता हुँ कि तू मुझे कब शान्ति देगा?

83 क्यों कि मैं धुएँ में की कुप्पी के समान हो गया हूँ,

तो भी तेरी विधियों को नहीं भूला।

84 तेरे दास के कितने दिन रह गए हैं?

तू मेरे पीछे पड़े हुओं को दण्ड कब देगा?

85 अहंकारी जो तेरी व्यवस्था के अनुसार नहीं चलते,

उन्होंने मेरे लिये गड्ढे खोदे हैं।

86 तेरी सब आज्ञाएँ विश्वासयोग्य हैं;

वे लोग झूठ बोलते हुए मेरे पीछे पड़े हैं;

तू मेरी सहायता कर!

87 वे मुझ को पृथ्वी पर से मिटा डालने ही पर थे,

परन्तु मैंने तेरे उपदेशों को नहीं छोड़ा।

 88 अपनी करुणा के अनुसार मुझ को जिला,

तब मैं तेरी दी हुई चितौनी को मानूँगा।

लामेध

89 हे यहोवा, तेरा वचन,

आकाश में सदा तक स्थिर रहता है।

90 तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है;

तूने पृथ्वी को स्थिर किया, इसलिए वह बनी है।

91 वे आज के दिन तक तेरे नियमों के अनुसार ठहरे हैं;

क्योंकि सारी सृष्टि तेरे अधीन है।

92 यदि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी न होता,

तो शिशिश शिव शिशिश शिशि शिशिश शिशि शिशिश शिशिश शिशि शिश

मीम

⁹⁷ आहा! मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूँ!

दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है।

98 तू अपनी आज्ञाओं के द्वारा मुझे अपने शत्रुओं से अधिक बुद्धिमान करता है,

क्योंकि वे सदा मेरे मन में रहती हैं।

99 मैं अपने सब शिक्षकों से भी अधिक समझ रखता हूँ,

क्योंकि मेरा ध्यान तेरी चितौनियों पर लगा है।

¹⁰⁰ मैं पुरनियों से भी समझदार हूँ,

क्योंकि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए हूँ।

101 मैंने अपने पाँवों को हर एक बुरे रास्ते से रोक रखा है,

जिससे मैं तेरे वचन के अनुसार चलुँ।

102 मैं तेरे नियमों से नहीं हटा,

क्योंकि तू ही ने मुझे शिक्षा दी है।

103 तेरे वचन मुझ को कैसे मीठे लगते हैं,

वे मेरे मुँह में मधु से भी मीठे हैं!

^{* 119:92 @@@ @@@@ @@ @@@ @@@ @@@@.} मैं बोझ से दबकर चूर हो जाता । दु:खों और परीक्षाओं के बोझ के नीचे में ठहर नहीं पाता ।

104 तेरे उपदेशों के कारण मैं समझदार हो जाता हँ, इसलिए मैं सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हाँ।

नृन

105 तेरा वचन मेरे पाँव के लिये दीपक,

और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।

106 मैंने शपथ खाई, और ठान लिया है

कि मैं तेरे धर्ममय नियमों के अनुसार चलुँगा।

¹⁰⁷ मैं अत्यन्त दुःख में पड़ा हुँ;

हे यहोवा, अपने वादे के अनुसार मुझे जिला।

108 हे यहोवा, मेरे वचनों को स्वेच्छाबलि जानकर ग्रहण कर,

और अपने नियमों को मुझे सिखा।

तो भी मैं तेरी व्यवस्था को भूल नहीं गया।

110 दुष्टों ने मेरे लिये फंदा लगाया है,

परन्तु मैं तेरे उपदेशों के मार्ग से नहीं भटका।

111 मैंने तेरी चितौनियों को सदा के लिये अपना निज भागकर लिया है.

क्योंकि वे मेरे हृदय के हर्ष का कारण है।

112 मैंने अपने मन को इस बात पर लगाया है, कि अन्त तक तेरी विधियों पर सदा चलता रहूँ।

 113 मैं दुचित्तों से तो बैर रखता हँ,

परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूँ।

114 तू मेरी आड़ और ढाल है;

^{ं 119:109} शशाश शाशाश शाशाश शाशाश शाशाश शाशाश शाशाश शाशाश शाशाश सका जीवन सदैव संकट मैं रहता था। हथेली पर रहने का अर्थ है कि झपटा जा सके।

मेरी आशा तेरे वचन पर है।

115 हे कुकर्मियों, मुझसे दूर हो जाओ,

िक मैं अपने परमेश्वर की आज्ञाओं को पकड़े रहूँ!

116 हे यहोवा, अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल, कि मैं जीवित रहूँ,

और मेरी आशा को न तोड़!

117 मुझे थामे रख, तब मैं बचा रहूँगा,

और निरन्तर तेरी विधियों की ओर चित्त लगाए रहूँगा!

118 जितने तेरी विधियों के मार्ग से भटक जाते हैं,

उन सब को तू तुच्छ जानता है,

क्यों कि उनकी चतुराई झूठ है।

119 तूने पृथ्वी के सब दुष्टों को धातु के मैल के समान दूर किया है;

इस कारण मैं तेरी चितौनियों से प्रीति रखता हूँ।

और मैं तेरे नियमों से डरता हाँ।

¹²⁰ तेरे भय से मेरा शरीर काँप उठता है,

एन

121 मैंने तो न्याय और धर्म का काम किया है;
तू मुझे अत्याचार करनेवालों के हाथ में न छोड़।

122 अपने दास की भलाई के लिये जामिन हो,
ताकि अहंकारी मुझ पर अत्याचार न करने पाएँ।

123 मेरी आँखें तुझ से उद्घार पाने,
और तेरे धर्ममय वचन के पूरे होने की बाट जोहते-जोहते धुँधली
पड़ गई हैं।

124 अपने दास के संग अपनी करुणा के अनुसार बर्ताव कर,
और अपनी विधियाँ मुझे सिखा।

125 मैं तेरा दास हुँ, तू मुझे समझ दे

कि मैं तेरी चितौनियों को समझँ।

126 वह समय आया है, कि यहोवा काम करे,

क्योंकि लोगों ने तेरी व्यवस्था को तोड़ दिया है।

127 इस कारण मैं तेरी आज्ञाओं को सोने से वरन् कुन्दन से भी अधिक प्रिय मानता हाँ।

128 इसी कारण मैं तेरे सब उपदेशों को सब विषयों में ठीक जानता हुँ;

और सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हूँ।

पे

129 तेरी चितौनियाँ अद्भुत हैं,

इस कारण मैं उन्हें अपने जी से पकड़े हुए हूँ।

130 <u>2020</u> <u>202</u>

131 मैं मुँह खोलकर हाँफने लगा,

क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं का प्यासा था।

132 जैसी तेरी रीति अपने नाम के प्रीति रखनेवालों से है,

वैसे ही मेरी ओर भी फिरकर मुझ पर दया कर।

133 मेरे पैरों को अपने वचन के मार्ग पर स्थिर कर,

और किसी अनर्थ बात को मुझ पर प्रभुता न करने दे।

134 मुझे मनुष्यों के अत्याचार से छुड़ा ले,

तब मैं तेरे उपदेशों को मानुँगा।

135 अपने दास पर अपने मुख का प्रकाश चमका दे,

और अपनी विधियाँ मुझे सिखा।

136 मेरी आँखों से आँसूओं की धारा बहती रहती है,

^{‡ 119:130 @@@@ @@@@@@ @@ @@@@@@ @@@@@@ @@@ @@:} घर में प्रवेश के लिए द्वार स्रोला जाता है, नगर में प्रवेश के लिए फाटक अत: परमेश्वर की बातों के सुलने का अर्थ है कि हम उनमें घुसकर उसकी सुन्दरता को देखें।

क्योंकि लोग तेरी व्यवस्था को नहीं मानते।

138 तूने अपनी चितौनियों को धर्म और पूरी सत्यता से कहा है।

139 मैं तेरी धुन में भस्म हो रहा हूँ,

क्योंकि मेरे सतानेवाले तेरे वचनों को भूल गए हैं।

140 तेरा वचन पूरी रीति से ताया हुआ है, इसलिए तेरा दास उसमें प्रीति रखता है।

141 में छोटा और तुच्छ हूँ,

तो भी मैं तेरे उपदेशों को नहीं भूलता।

142 तेरा धर्म सदा का धर्म है, और तेरी व्यवस्था सत्य है।

¹⁴³ मैं संकट और सकेती में फँसा हूँ,

परन्तु मैं तेरी आज्ञाओं से सुखी हूँ।

144 तेरी चितौनियाँ सदा धर्ममय हैं; तू मुझ को समझ दे कि मैं जीवित रहूँ।

काफ़्र्

145 मैंने सारे मन से प्रार्थना की है,

हे यहोवा मेरी सुन!

मैं तेरी विधियों को पकड़े रहँगा।

146 मैंने तुझ से प्रार्थना की है, तू मेरा उद्धार कर,

और मैं तेरी चितौनियों को माना करूँगा। 147 मैंने पौ फटने से पहले दुहाई दी;

मेरी आशा तेरे वचनों पर थी।

148 मेरी आँखें रात के एक-एक पहर से पहले खुल गई, कि मैं तेरे वचन पर ध्यान करूँ। 149 अपनी करुणा के अनुसार मेरी सुन ले; हे यहोवा, अपनी नियमों के रीति अनुसार मुझे जीवित कर। 150 जो दुष्टता की धुन में हैं, वे निकट आ गए हैं; वे तेरी व्यवस्था से दूर हैं। 151 हे यहोवा, तू निकट है, और तेरी सब आज्ञाएँ सत्य हैं। 152 बहुत काल से मैं तेरी चितौनियों को जानता हूँ, कि तूने उनकी नींव सदा के लिये डाली है।

रेश ¹⁵³ मेरे दुःख को देखकर मुझे छुड़ा ले, क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था को भूल नहीं गया। ¹⁵⁴ मेरा मुकद्दमा लड़, और मुझे छुड़ा ले; अपने वादे के अनुसार मुझ को जिला। ¹⁵⁵ दुष्टों को उद्धार मिलना कठिन है, क्योंकि वे तेरी विधियों की सुधि नहीं रखते। 156 हे यहोवा, तेरी दया तो बड़ी है; इसलिए अपने नियमों के अनुसार मुझे जिला। ¹⁵⁷ मेरा पीछा करनेवाले और मेरे सतानेवाले बहुत हैं, परन्तु मैं तेरी चितौनियों से नहीं हटता। 158 मैं विश्वासघातियों को देखकर घृणा करता हँ; क्योंकि वे तेरे वचन को नहीं मानते। ¹⁵⁹ देख, मैं तेरे उपदेशों से कैसी प्रीति रखता हाँ! हे यहोवा, अपनी करुणा के अनुसार मुझ को जिला। ¹⁶⁰ तेरा सारा वचन सत्य ही है: और तेरा एक-एक धर्ममय नियम सदाकाल तक अटल है।

शीन

161 हाकिम व्यर्थ मेरे पीछे पड़े हैं,

162 जैसे कोई बड़ी लूट पाकर हर्षित होता है,

वैसे ही मैं तेरे वचन के कारण हर्षित हूँ।

¹⁶³ झूठ से तो मैं बैर और घृणा रखता हूँ,

परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूँ।

164 तेरे धर्मम्य नियमों के कारण मैं प्रतिदिन सात बार तेरी स्तुति करता हूँ।

165 तेरी व्यवस्था से प्रीति रखनेवालों को बड़ी शान्ति होती है; और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती।

166 हे यहोवा, मैं तुझ से उद्धार पाने की आशा रखता हूँ;

और तेरी आज्ञाओं पर चलता आया हूँ।

167 मैं तेरी चितौनियों को जी से मानता हूँ,

और उनसे बहुत प्रीति रखता आया हुँ।

¹⁶⁸ मैं तेरे उपदेशों और चितौनियों को मानता आया हूँ,

क्योंकि मेरी सारी चाल चलन तेरे सम्मुख प्रगट है।

22222222 22 222222 22222 ताव

169 हे यहोवा, मेरी दुहाई तुझ तक पहुँचे;

तू अपने वचन के अनुसार मुझे समझ दे!

¹⁷⁰ मेरा गिड़गिड़ाना तुझ तक पहुँचे;

तू अपने वचन के अनुसार मुझे छुड़ा ले। 171 मेरे मुँह से स्तुति निकला करे,

 $[\]S$ 119:161 🛮 🗗 🗗 🖒 तेरे विधान से टलता नहीं, चाहे आश्रंकाएँ हों या भय हो ।

क्योंकि तू मुझे अपनी विधियाँ सिखाता है।

172 मैं तेरे वचन का गीत गाऊँगा,
क्योंकि तेरी सब आज्ञाएँ धर्ममय हैं।

173 तेरा हाथ मेरी सहायता करने को तैयार रहता है,
क्योंकि मैंने तेरे उपदेशों को अपनाया है।

174 हे यहोवा, मैं तुझ से उद्धार पाने की अभिलाषा करता हूँ,
मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूँ।

175 मुझे जिला, और मैं तेरी स्तुति करूँगा,
तेरे नियमों से मेरी सहायता हो।

176 मैं खोई हुई भेड़ के समान भटका हूँ;
तू अपने दास को ढूँढ़ ले,
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं को भूल नहीं गया।

120

परन्तु ????? ??????* ही, वे लड़ना चाहते हैं!

121

यात्रा का गीत ¹मैं अपनी आँखें पर्वतों की ओर उठाऊँगा। मुझे सहायता कहाँ से मिलेगी? 2 मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है, जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है। तेरा रक्षक कभी न ऊँघेगा। ⁴सुन, इस्राएल का रक्षक, न ऊँघेगा और न सोएगा। 5 यहोवा तेरा रक्षक है; यहोवा तेरी दाहिनी ओर तेरी आड़ है। 6न तो दिन को धूप से, और न रात को चाँदनी से तेरी कुछ हानि होगी। 7 यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा; वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।

122

तब मैं आन्निदत् हुआ।

² हे यरूशलेम, तेरे फाटकों के भीतर,

हम खड़े हो गए हैं!

³ हे यरूशलेम, तू ऐसे नगर के समान बना है,

जिसके घर एक दूसरे से मिले हुए हैं।

4वहाँ यहोवा के गोत्र-गोत्र के लोग यहोवा के नाम का धन्यवाद करने को जाते हैं;

यह इस्राएल के लिये साक्षी है।

⁵ वहाँ तो *शशाशाश शा शाशाशाशा**,

दाऊद के घराने के लिये रखे हुए हैं।

6 यरूशलेम की शान्ति का वरदान माँगो, तेरे प्रेमी कुशल से रहें!

⁷तेरी शहरपनाह के भीतर शान्ति,

और तेरे महलों में कुशल होवे!

8 अपने भाइयों और संगियों के निमित्त,

मैं कह्ँगा कि तुझ में शान्ति होवे!

9 अपने परमेश्वर यहोवा के भवन के निमित्त,

मैं तेरी भलाई का यत्न करूँगा।

123

यात्रा का गीत

1 हे स्वर्ग में विराजमान

मैं अपनी आँखें तेरी ओर उठाता हुँ!

² देख, जैसे दासों की आँखें अपने स्वामियों के हाथ की ओर, और जैसे दासियों की आँखें अपनी स्वामिनी के हाथ की ओर लगी रहती है,

^{* 122:5 @@@@@ @@ @@@@@@@:} जिन आसनों पर बैठकर न्याय किया जाता है। आज सिंहासन शब्द से समझा जाता है राजाओं के आसन।

वैसे ही हमारी आँखें हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर उस समय तक लगी रहेंगी,

जब तक वह हम पर दया न करे।

³हम पर दया कर, हे यहोवा, हम पर कृपा कर,
क्योंकि हम अपमान से बहुत ही भर गए हैं।

⁴हमारा जीव सुखी लोगों के उपहास से,
और <u>2020/2020/2020</u> <u>2020</u> <u>2020</u> <u>2020</u>* बहुत ही भर गया है।

124

जाल फट गया और हम बच निकले! 8 यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है, हमारी सहायता उसी के नाम से होती है।

125

126

यात्रा का गीत

1 जब यहोवा सिय्योन में लौटनेवालों को लौटा ले आया,

127

ccxxxiii

और कठोर परिश्रम की रोटी खाते हो, यह सब तुम्हारे लिये व्यर्थ ही है:

क्योंकि वह अपने प्रियों को यों ही नींद प्रदान करता है।

गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है।

⁴ जैसे वीर के हाथ में तीर,

वैसे ही जवानी के बच्चे होते हैं।

⁵ क्या ही धन्य है वह पुरुष जिसने अपने तरकश को उनसे भर लिया हो!

वह फाटक के पास अपने शत्रुओं से बातें करते संकोच न करेगा।

128

यात्रा का गीत

¹क्या ही धन्य है हर एक जो यहोवा का भय मानता है,

और *2222 ????2222 ?? 2222 ??**!

2त अपनी कमाई को निश्चय खाने पाएगा;

त् धन्य होगा, और तेरा भला ही होगा।

³तेरे घर के भीतर तेरी स्त्री फलवन्त दाखलता सी होगी;

तेरी मेज के चारों ओर तेरे बच्चे जैतृन के पौधे के समान होंगे।

4सून, जो पुरुष यहोवा का भय मानता हो,

वह ऐसी ही आशीष पाएगा।

और तू जीवन भर यरूशलेम का कुशल देखता रहे!

6 वरन तु अपने नाती-पोतों को भी देखने पाए!

की भक्ति का प्रतिफल हैं वे परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार आशी में हैं। * 128:1 में ही आशीष नहीं देगा परन्तु तेरी आशीषें सीधी सिय्योन से आती प्रतीत होंगी।

इस्राएल को शान्ति मिले!

129

यात्रा का गीत ¹ इस्राएल अब यह कहे, "मेरे बचपन से लोग मुझे बार बार क्लेश देते आए हैं, 2 मेरे बचपन से वे मुझ को बार बार क्लेश देते तो आए हैं, परन्तु मुझ पर प्रबल नहीं हुए। ³ [?!]?![?!]?![?!]? [?!]?![?!]?! [? और लम्बी-लम्बी रेखाएँ की।" 4 यहोवा धर्मी है; उसने दुष्टों के फंदों को काट डाला है; 5 जितने सिय्योन से बैर रखते हैं. वे सब लज्जित हों, और पराजित होकर पीछे हट जाए! 6वे छत पर की घास के समान हों. जो बढ़ने से पहले सख जाती है; न पूलियों का कोई बाँधनेवाला अपनी अँकवार भर पाता है, 8 और न आने-जानेवाले यह कहते हैं, "यहोवा की आशीष तुम पर होवे!

हम तुम को यहोवा के नाम से आशीर्वाद देते हैं!"

यात्रा का गीत 1 हे यहोवा, मैंने गहरे स्थानों में से तुझको पुकारा है! ² हे प्रभु, मेरी सुन! तेरे कान मेरे गिड़गिड़ाने की ओर ध्यान से लगे रहें! 3 हे यहोवा, यदि तू अधर्म के कामों का लेखा ले, तो हे प्रभु कौन खड़ा रह सकेगा? 4 परन्तु तु क्षमा करनेवाला है, जिससे तेरा भय माना जाए। 5 मैं यहोवा की बाट जोहता हूँ, मैं जी से उसकी बाट जोहता हूँ, और मेरी आशा उसके वचन पर है: पहरुए जितना भोर को चाहते हैं, उससे भी अधिक मैं यहोवा को अपने प्राणों से चाहता हैं। ⁷ इस्राएल, यहोवा पर आशा लगाए रहे! क्योंकि यहोवा करुणा करनेवाला और पूरा छुटकारा देनेवाला है। 8 इस्राएल को उसके सारे अधर्म के कामों से वही छटकारा देगा।

131

दाऊद की यात्रा का गीत 1हे यहोवा, न तो मेरा मन गर्व से

(22. 131:3)

^{* 130:6} 222222 222222 22222 22222 22222 रात में जो चौकसी करते हैं वे सूर्योदय की प्रतिक्षा करते हैं कि वे कार्य निवृत्त हों। इसी प्रकार कष्टों में, दुःख की लम्बी, तमसपूर्ण, विशादपूर्ण रात में कष्ट भोगी प्राण के लिए शान्ति का पहला संकेत, पहली हलकी सी किरण की प्रतिक्षा करता है।

³ हे इस्राएल, अब से लेकर सदा सर्वदा यहोवा ही पर आशा लगाए रह!

132

यात्रा का गीत

1 हे यहोवा, दाऊद के लिये उसकी सारी दुर्दशा को स्मरण कर;

2 उसने यहोवा से शपथ खाई,

और याकूब के सर्वशक्तिमान की मन्नत मानी है,

³ उसने कहा, "निश्चय मैं उस समय तक अपने घर में प्रवेश न करूँगा,

और न अपने पलंग पर चढुँगा;

4न अपनी आँखों में नींद,

और न अपनी पलकों में झपकी आने दूँगा,

5 जब तक मैं यहोवा के लिये एक स्थान,

⁶ देखो, हमने एप्राता में इसकी चर्चा सुनी है, हमने इसको वन के खेतों में पाया है।

7 आओ, हम उसके निवास में प्रवेश करें, हम उसके चरणों की चौकी के आगे दण्डवत् करें! 8 हे यहोवा, उठकर अपने विश्रामस्थान में 2022 2022 2022 2022 2022 2022 2022 व्याप्य 2022 व्याप्य 2022 व्याप्य व्याप्य विश्वास 9 तेरे याजक धर्म के वस्त्र पहने रहें, और तेरे भक्त लोग जयजयकार करें। 10 अपने दास दाऊद के लिये, अपने अभिषक्त की प्रार्थना को अनसुनी न कर।

11 यहोवा ने दाऊद से सच्ची श्रपथ खाई है और वह उससे न मकरेगा:

"मैं तेरी गद्दी पर तेरे एक निज पुत्र को बैठाऊँगा। (2 थ्रीथ्री. 7:12, थ्रीथ्रीथ्रीथ्रीथ्री 2:30)

12 यदि तेरे वंश के लोग मेरी वाचा का पालन करें और जो चितौनी मैं उन्हें सिखाऊँगा, उस पर चलें, तो उनके वंश के लोग भी तेरी गद्दी पर युग-युग बैठते चले जाएँगे।"

मैंने अपने अभिषिक्त के लिये एक दीपक तैयार कर रखा है। (?????? 1:69)

18 मैं उसके शत्रुओं को तो लज्जा का वस्त्र पहनाऊँगा, परन्तु उसके सिर पर उसका मुकुट शोभायमान रहेगा।"

133

134

यात्रा का गीत

यहोवा को धन्य कहो। (????????. 19:5) ² अपने हाथ पवित्रस्थान में उठाकर,

यहोवा को धन्य कहो। ³यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है, वह सिय्योन से तुझे आशीष देवे।

135

22222 222 222 ¹यहोवा की स्तुति करो, यहोवा के नाम की स्तृति करो, हे यहोवा के सेवकों उसकी स्तुति करो, (22. 113:1) 2तुम जो यहोवा के भवन में, अर्थात् हमारे परमेश्वर के भवन के आँगनों में खड़े रहते हो! 3 यहोवा की स्तुति करो, क्योंकि वो भला है; उसके नाम का भजन गाओ, क्योंकि यह मनोहर है! अर्थात् इस्राएल को अपना निज धन होने के लिये चुन लिया है। 5 मैं तो जानता हुँ कि यहोवा महान है, हमारा प्रभु सब देवताओं से ऊँचा है। 6 जो कुछ यहोवा ने चाहा उसे उसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और सब गहरे स्थानों में किया है। 7वह पृथ्वी की छोर से कुहरे उठाता है, और वर्षा के लिये बिजली बनाता है, और पवन को अपने भण्डार में से निकालता है। 8 उसने मिस्र में क्या मनुष्य क्या पशु, सब के पहिलौठों को मार डाला! ⁹हे मिस्र, *2222 222 222 222 222*

| 2012 | 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2012|| 2 <u>शिशिशिशिशिशिशिशिश</u>ि। ¹⁰ उसने बहुत सी जातियाँ नाश की,

और सामर्थी राजाओं को.

11 अर्थात एमोरियों के राजा सीहोन को,

और बाशान के राजा ओग को.

और कनान के सब राजाओं को घात किया;

12 और उनके देश को बाँटकर,

अपनी प्रजा इस्राएल का भाग होने के लिये दे दिया।

¹³ हे यहोवा, तेरा नाम सदा स्थिर है,

हे यहोवा, जिस नाम से तेरा स्मरण होता है,

वह पीढ़ी-पीढ़ी बना रहेगा।

14 यहोवा तो अपनी प्रजा का न्याय चुकाएगा,

32:36)

15 अन्यजातियों की मुरतें सोना-चाँदी ही हैं,

वे मनुष्यों की बनाई हई हैं।

16 उनके मुँह तो रहता है, परन्तु वे बोल नहीं सकती,

उनके आँखें तो रहती हैं, परन्तु वे देख नहीं सकती,

¹⁷ उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन नहीं सकती,

न उनमें कुछ भी साँस चलती है। (???????. 9:20)

18 जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले भी हैं;

और उन पर सब भरोसा रखनेवाले भी वैसे ही हो जाएँगे!

¹⁹ हे इस्राएल के घराने, यहोवा को धन्य कह!

हे हारून के घराने, यहोवा को धन्य कह!

20 हे लेवी के घराने, यहोवा को धन्य कह!

हे यहोवा के डरवैयों, यहोवा को धन्य कहो!

^{135:9} [2021][2] [2121][2] [2121] [2 प्रमाण।

21 यहोवा जो यरूशलेम में वास करता है, उसे सिय्योन में धन्य कहा जाए! यहोवा की स्तुति करो!

136

¹यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है, और उसकी करुणा सदा की है। 2 जो ईश्वरों का परमेश्वर है, उसका धन्यवाद करो, उसकी करुणा सदा की है। 3 जो प्रभुओं का प्रभु है, उसका धन्यवाद करो, उसकी करुणा सदा की है। 4 उसको छोड़कर कोई बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म नहीं करता, उसकी करुणा सदा की है। 5 उसने अपनी बुद्धि से आकाश बनाया, उसकी करुणा सदा की है। 6 उसने पृथ्वी को जल के ऊपर फैलाया है, उसकी करुणा सदा की है। 7 उसने बड़ी-बड़ी ज्योतियाँ बनाई. उसकी करुणा सदा की है। 8दिन पर प्रभुता करने के लिये सूर्य को बनाया, उसकी करुणा सदा की है। 9 और रात पर प्रभुता करने के लिये चन्द्रमा और तारागण को बनाया. उसकी करुणा सदा की है। ¹⁰ उसने मिस्रियों के पहिलौठों को मारा, उसकी करुणा सदा की है। 11 और उनके बीच से इस्राएलियों को निकाला, उसकी करुणा सदा की है।

¹² बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से निकाल लाया, उसकी करुणा सदा की है। ¹³ उसने लाल समुद्र को विभाजित कर दिया, उसकी करुणा सदा की है। 14 और इस्राएल को उसके बीच से पार कर दिया, उसकी करुणा सदा की है: 15 और फ़िरौन को उसकी सेना समेत लाल समुद्र में डाल दिया, उसकी करुणा सदा की है। ¹⁶ वह अपनी प्रजा को जंगल में ले चला, उसकी करुणा सदा की है। 17 उसने बड़े-बड़े राजा मारे. उसकी करुणा सदा की है। ¹⁸ उसने प्रतापी राजाओं को भी मारा, उसकी करुणा सदा की है; ¹⁹ एमोरियों के राजा सीहोन को, उसकी करुणा सदा की है; 20 और बाशान के राजा ओग को घात किया, उसकी करुणा सदा की है। 21 और उनके देश को भाग होने के लिये. उसकी करुणा सदा की है; 22 अपने दास इस्राएलियों के भाग होने के लिये दे दिया, उसकी करुणा सदा की है। उसकी करुणा सदा की है: ²⁴ और हमको द्रोहियों से छुड़ाया है, उसकी करुणा सदा की है।

137

¹ बाबेल की नदियों के किनारे हम लोग बैठ गए, और सिय्योन को स्मरण करके रो पड़े! 2 उसके बीच के मजनू वृक्षों पर हमने अपनी वीणाओं को टाँग दिया; 3 क्योंकि जो हमको बन्दी बनाकर ले गए थे, उन्होंने वहाँ हम से गीत गवाना चाहा, और हमारे रुलाने वालों ने हम से आनन्द चाहकर कहा, "सिय्योन के गीतों में से हमारे लिये कोई गीत गाओ!" 4हम यहोवा के गीत को, पराए देश में कैसे गाएँ? 5 हे यरूशलेम, यदि मैं तुझे भूल जाऊँ, तो मेरा दाहिना हाथ सूख जाए! 6 यदि मैं तुझे स्मरण न रखुँ, यदि मैं यरूशलेम को. अपने सब आनन्द से श्रेष्ठ न जानुँ, तो मेरी जीभ तालू से चिपट जाए! 7 हे यहोवा, यरूशलेम के गिराए जाने के दिन को एदोमियों के विरुद्ध स्मरण कर, कि वे कैसे कहते थे, "ढाओ! उसको नींव से ढा दो!" 8 हे बाबेल, तू जो जल्द उजड़नेवाली है,

^{† 136:25 2/2 2/2 2/2/2/2/2/2/2 2/2 2/2/2/2 2/2/2/2 2/2/2} सब प्राणियों को आकाश पृथ्वी और जल के।

जैसा तूने हम से किया है! (शाशाशाया: 18:6)

⁹ क्या ही धन्य वह होगा, जो तेरे बच्चों को पकड़कर, चट्टान पर पटक देगा! (2)???. 13:16)

138

दाऊद का भजन

1मैं पूरे मन से तेरा धन्यवाद करूँगा;

देवताओं के सामने भी मैं तेरा भजन गाऊँगा।

2मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूँगा,

और तेरी करुणा और सच्चाई के कारण तेरे नाम का धन्यवाद करूँगा;

क्योंकि तूने अपने वचन को और अपने बड़े नाम को सबसे अधिक महत्त्व दिया है।

³ जिस दिन मैंने पुकारा, उसी दिन तूने मेरी सुन ली,

और मुझ में बल देकर हियाव बन्धाया।

⁴ हे यहोवा, *2022.*2022 *22.*22 *20*

क्योंकि उन्होंने तेरे वचन सुने हैं;

5 और वे यहोवा की गति के विषय में गाएँगे,

क्योंकि यहोवा की महिमा बड़ी है।

⁶ यद्यपि यहोवा महान है, तो भी वह नम्र मनुष्य की ओर दृष्टि करता है;

परन्तु अहंकारी को दूर ही से पहचानता है।

139

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन् ¹हे यहोवा, तूने मुझे जाँचकर जान लिया है। **(शाक्ष. 8:27)** 2त मेरा उठना और बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है। 3 मेरे चलने और लेटने की तू भली भाँति छानबीन करता है, और मेरी पूरी चाल चलन का भेद जानता है। 4हे यहोवा, मेरे मुँह में ऐसी कोई बात नहीं जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो। और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है। ⁶ यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है; यह गम्भीर और मेरी समझ से बाहर है। 7मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊँ? या तेरे सामने से किधर भागुँ? 8 यदि मैं आकाश पर चढ़ूँ, तो तू वहाँ है! यदि मैं अपना खाट अधोलोक में बिछाऊँ तो वहाँ भी तु है!

 9 यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़कर समुद्र के पार जा बसूँ, 10 तो वहाँ भी तू अपने हाथ से मेरी अगुआई करेगा,

अर अपने दाहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा।

11 यदि मैं कहँ कि अंधकार में तो मैं छिप जाऊँगा,

और मेरे चारों ओर का उजियाला रात का अंधेरा हो जाएगा,

12 तो भी अंधकार तुझ से न छिपाएगा, रात तो दिन के तुल्य प्रकाश देगी:

क्योंकि तेरे लिये अंधियारा और उजियाला दोनों एक समान हैं। 13 तुने मेरे अंदरूनी अंगों को बनाया है;

तूने मुझे माता के गर्भ में रचा।

14 मैं तेरा धन्यवाद करूँगा, इसलिए कि *2022 202202 202 20202020 20202 202 2020 2020*† हुँ।

तेरे काम तो आश्चर्य के हैं,

और मैं इसे भली भाँति जानता हुँ। (???????. 15:3)

¹⁵ जब मैं गुप्त में बनाया जाता,

और पृथ्वी के नीचे स्थानों में रचा जाता था,

तब मेरी देह तुझ से छिपी न थीं।

16 तेरी आँखों ने मेरे बेडौल तत्व को देखा;

और मेरे सब अंग जो दिन-दिन बनते जाते थे वे रचे जाने से पहले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।

17 मेरे लिये तो हे परमेश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं! उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है!

ाड़ पता जाड़ पता बड़ा हु: ¹⁸यदि मैं उनको गिनता तो वे रेतकणों से भी अधिक ठहरते। जब मैं जाग उठता हुँ, तब भी तेरे संग रहता हुँ।

19 हे परमेश्वर निश्चय तु दुष्ट को घात करेगा!

हे हत्यारों, मुझसे दूर हो जाओ।

20 क्योंकि वे तेरे विरुद्ध बलवा करते और छल के काम करते हैं;
तेरे शत्रु तेरा नाम झूठी बात पर लेते हैं।

21 हे यहोवा, क्या मैं तेरे बैरियों से बैर न रखूँ,
और तेरे विरोधियों से घृणा न करूँ? (शाशाशा 2:6)

22 हाँ, मैं उनसे पूर्ण बैर रखता हूँ;
मैं उनको अपना शत्रु समझता हूँ।

23 हे परमेश्वर, मुझे जाँचकर जान ले!

मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले!

24 और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं,
और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुआई कर!

140

प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन ¹ हे यहोवा, मुझ को बुरे मनुष्य से बचा ले; उपद्रवी पुरुष से मेरी रक्षा कर, 2 क्योंकि उन्होंने मन में बुरी कल्पनाएँ की हैं; वे लगातार लड़ाइयाँ मचाते हैं। 3 उनका बोलना साँप के काटने के समान है, उनके मुँह में नाग का सा विष रहता है। (सेला) (22. 3:13, ?????. 3:8) 4 हे यहोवा, मुझे दुष्ट के हाथों से बचा ले; उपद्रवी पुरुष से मेरी रक्षा कर, क्योंकि उन्होंने मेरे पैरों को उखाड़ने की युक्ति की है। 5 घमण्डियों ने मेरे लिये फंदा और पासे लगाए, और पथ के किनारे जाल बिछाया है: उन्होंने मेरे लिये फंदे लगा रखे हैं। (सेला) 6 हे यहोवा, मैंने तुझ से कहा है कि तू मेरा परमेश्वर है;

हे यहोवा, मेरे गिड़गिड़ाने की ओर कान लगा! 7हे यहोवा प्रभु, हे मेरे सामर्थी उद्धारकर्ता, तूने युद्ध के दिन मेरे सिर की रक्षा की है। 8 हे यहोवा, <u>22222 22 22222 22 2222</u> 2<u>2222</u> 2<u>2222</u> 22*, उसकी बुरी युक्ति को सफल न कर, नहीं तो वह घमण्ड करेगा। (सेला) 9मेरे घेरनेवालों के सिर पर उन्हीं का विचारा हुआ उत्पात पड़े! ¹⁰ उन पर अंगारे डाले जाएँ! वे आग में गिरा दिए जाएँ! और ऐसे गड़ों में गिरें, कि वे फिर उठ न सके! 11 बकवादी पृथ्वी पर स्थिर नहीं होने का; उपद्रवी पुरुष को गिराने के लिये बुराई उसका पीछा करेगी। 22 22<u>22222 22 22222 22222 22222</u> 1 13 नि:सन्देह धर्मी तेरे नाम का धन्यवाद करने पाएँगे; सीधे लोग तेरे सम्मुख वास करेंगे।

141

<u>2020 202 202020202</u> 202 20202020202 दाऊद का भजन ¹हे यहोवा, मैंने तुझे पुकारा है; मेरे लिये फुर्ती कर! जब मैं तुझको पुकारूँ, तब मेरी ओर कान लगा! ² मेरी प्रार्थना तेरे सामने <u>20202020</u> <u>2020</u>*,

⁶ जब उनके न्यायी चट्टान के ऊपर से गिराए गए, तब उन्होंने मेरे वचन सुन लिए; क्योंकि वे मधुर हैं। ⁷ <u>शिशिश शिशिश शिशि शिशि शिशिश शिशिश शिशिश शिशिश शिशिश</u> वैसे ही हमारी हिड्ड्याँ अधोलोक के मुँह पर छितराई गई हैं। ⁸ परन्तु हे यहोवा प्रभु, मेरी आँखें तेरी ही ओर लगी हैं; मैं तेरा शरणागत हूँ; तू मेरे प्राण जाने न दे! ⁹ मुझे उस फंदे से, जो उन्होंने मेरे लिये लगाया है, और अनर्थकारियों के जाल से मेरी रक्षा कर! ¹⁰ दुष्ट लोग अपने जालों में आप ही फँसें, और मैं बच निकलूँ।

142

202020202020 202 2020 2020 20202020 वाऊद का मश्कील, जब वह गुफा में था: प्रार्थना

 1 मैं यहोवा की दुहाई देता,

मैं यहोवा से गिड़गिड़ाता हुँ,

2मैं अपने शोक की बातें उससे खोलकर कहता,

मैं अपना संकट उसके आगे प्रगट करता हुँ।

3 22 2222 2222 2222 222 22 22222 22 222 22*,

तब तू मेरी दशा को जानता था!

जिस रास्ते से मैं जानेवाला था, उसी में उन्होंने मेरे लिये फंदा लगाया।

4मैंने दाहिनी ओर देखा, परन्तु कोई मुझे नहीं देखता। मेरे लिये शरण कहीं नहीं रही, न मुझ को कोई पृछता है।

5 हे यहोवा, मैंने तेरी दुहाई दी है;

मैंने कहा, तू मेरा शरणस्थान है,

मेरे जीते जी तु मेरा भाग है।

6 मेरी चिल्लाहट को ध्यान देकर सुन,

क्योंकि मेरी बड़ी दुर्दशा हो गई है!

जो मेरे पीछे पड़े हैं, उनसे मुझे बचा ले;

क्योंकि वे मुझसे अधिक सामर्थी हैं।

⁷ <u>शिशि शिश शिशिशिशिशिशि शिश शिशिशिशि</u> कि मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूँ!

धर्मी लोग मेरे चारों ओर आएँगे;

क्योंकि तू मेरा उपकार करेगा।

^{* 142:3} @2 @2@2 @2022 @2022 @2022 @2022 @2 @2020 @2 @202 @2 @202 @2: कहने का अर्थ है कि कष्टों में फँसा वह अशक्त, निर्जीव, और हताश था। वह कष्टों से मुक्ति का मार्ग खोज नहीं पा रहा था। † 142:7 <math>@202 @2 @20202020202 @2 @202020202 @2 @202020202 @3 हम परिस्थित से उबार ले, यह मेरे लिए कारागार के समान है। मैं ऐसा हूँ जैसे मैं कैद कर दिया गया हूँ।

दाऊद का भजन 1 हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन; मेरे गिड़गिड़ाने की ओर कान लगा! तू जो सच्चा और धर्मी है, इसलिए मेरी सुन ले, 2 और अपने दास से मुकद्दमा न चला! क्योंकि कोई प्राणी तेरी दुष्टि में निर्दोष नहीं ठहर सकता। (????. 3:20, 1 ?????. 4:4, ????. 2:16) ³शत्रु तो मेरे प्राण का गाहक हुआ है; उसने मुझे चूर करके मिट्टी में मिलाया है, और मुझे बहत दिन के मरे हओं के समान अंधेरे स्थान में डाल दिया है। 4 मेरी आत्मा भीतर से व्याकुल हो रही है मेरा मन विकल है। 5 मुझे प्राचीनकाल के दिन स्मरण आते हैं, मैं तेरे सब अद्भुत कामों पर ध्यान करता हँ, और तेरे हाथों के कामों को सोचता हाँ। 6 मैं तेरी ओर अपने हाथ फैलाए हुए हूँ; सूखी भूमि के समान मैं तेरा प्यासा हूँ। (सेला) 7 हे यहोवा, फुर्ती करके मेरी सुन ले; क्योंकि मेरे प्राण निकलने ही पर हैं! मुझसे अपना मुँह न छिपा, ऐसा न हो कि मैं कब्र में पड़े हओं के समान हो जाऊँ। 8 2/2/2/2/2/2/2/2/2* को अपनी करुणा की बात मुझे सुना, क्योंकि मैंने तुझी पर भरोसा रखा है।

^{* 143:8 @@@@@@@@@@@} अर्थात् अति शीघ्र, अविलम्ब, प्रातःकाल की प्रथम किरण पर ही। इसे ऐसा कर दे कि वह दिन की सर्वप्रथम बात हो।

144

और मेरे सब सतानेवालों का नाश कर डाल.

क्योंकि मैं तेरा दास हाँ।

[†] **143:10** *2222 222 222 222 222 22 2222 22 2222 22 2*

उसके दिन ढलती हुई छाया के समान हैं।

⁵ हे यहोवा, अपने स्वर्ग को नीचा करके उतर आ! पहाड़ों को छ तब उनसे धुआँ उठेगा!

विज्ञाना छू (प उनस चुना उउना: 6 बिजली कड़काकर उनको तितर-बितर कर दे.

अपने तीर चलाकर उनको घबरा दे!

⁷ अपना हाथ ऊपर से बढ़ाकर मुझे महासागर से उबार, अर्थात् परदेशियों के वश से छुड़ा।

8 उनके मुँह से तो झुठी बातें निकलती हैं,

और उनके दाहिने हाथ से धोखे के काम होते हैं।

9 हे परमेश्वर, मैं तेरी स्तुति का नया गीत गाऊँगा;

मैं दस तारवाली सारंगी बजाकर तेरा भजन गाऊँगा। (21/21/21/21). 5:9, [21/21/21/21]. 14:3)

 10 तू राजाओं का उद्धार करता है,

और अपने दास दाऊद को तलवार की मार से बचाता है।

11 मुझ को उबार और परदेशियों के वश से छुड़ा ले, जिनके मुँह से झुठी बातें निकलती हैं,

और जिनका दाहिना हाथ झठ का दाहिना हाथ है।

और हमारी बेटियाँ उन कोनेवाले खम्भों के समान हों, जो महल के लिये बनाए जाएँ;

13 हमारे खत्ते भरे रहें, और उनमें भाँति-भाँति का अन्न रखा जाए, और हमारी भेड़-बकरियाँ हमारे मैदानों में हजारों हजार बच्चे जनें;

 14 तब हमारे बैल खूब लदे हुए हों;

हमें न विघ्न हो और न हमारा कहीं जाना हो, और न 202222 202022 2022 2022-202022 2021,

15 तो इस दशा में जो राज्य हो वह क्या ही धन्य होगा! जिस राज्य का परमेश्वर यहोवा है, वह क्या ही धन्य है!

145

दाऊद का भजन 1 हे मेरे परमेश्वर, हे राजा, मैं तुझे सराह्ँगा, और तेरे नाम को सदा सर्वदा धन्य कहता रहँगा। 2 प्रतिदिन मैं तुझको धन्य कहा करूँगा, और तेरे नाम की स्तुति सदा सर्वदा करता रहँगा। 3 यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है, और उसकी बड़ाई अगम है। 4 तेरे कामों की प्रशंसा और तेरे पराक्रम के कामों का वर्णन. पीढ़ी-पीढ़ी होता चला जाएगा। 5 मैं तेरे ऐश्वर्य की महिमा के प्रताप पर और तेरे भाँति-भाँति के आश्चर्यकर्मों पर ध्यान करूँगा। 6 लोग तेरे भयानक कामों की शक्ति की चर्चा करेंगे, और मैं तेरे बड़े-बड़े कामों का वर्णन करूँगा। 7 लोग तेरी बड़ी भलाई का स्मरण करके उसकी चर्चा करेंगे, और तेरे धर्म का जयजयकार करेंगे। ⁸यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से ऋोध करनेवाला और अति करुणामय है। ⁹ यहोवा सभी के लिये भला है, और उसकी दया उसकी सारी सुष्टि पर है। 10 हे यहोवा, तेरी सारी सृष्टि तेरा धन्यवाद करेगी, और तेरे भक्त लोग तुझे धन्य कहा करेंगे! 11 वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा करेंगे, और तेरे पराक्रम के विषय में बातें करेंगे; 12 कि वे मनुष्यों पर तेरे पराऋम के काम और तेरे राज्य के प्रताप की महिमा प्रगट करें।

¹³तेरा राज्य युग-युग का और तेरी प्रभुता सब पीढ़ियों तक बनी रहेगी। ¹⁴ यहोवा सब गिरते हुओं को सम्भालता है, और सब झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है। 15 सभी की आँखें तेरी ओर लगी रहती हैं. और तू उनको आहार समय पर देता है। ¹⁶त् अपनी मुट्टी खोलकर, सब प्राणियों को आहार से तुप्त करता है। 22 222 22 2222 222 222 22222 22^{*} 1 **(?!?!?!?!?.** *15:3, ?!?!?!?!*. *16:5)* ¹⁸ (2012) 18 (19 वह अपने डरवैयों की इच्छा पुरी करता है, और उनकी दुहाई सुनकर उनका उद्धार करता है। 20 यहोवा अपने सब प्रेमियों की तो रक्षा करता, परन्तु सब दुष्टों को सत्यानाश करता है। 21 मैं यहोवा की स्तुति करूँगा, और सारे प्राणी उसके पवित्र नाम को सदा सर्वदा धन्य कहते रहें।

146

 1 यहोवा की स्तुति करो। हे मेरे मन यहोवा की स्तुति कर! 2 मैं जीवन भर यहोवा की स्तुति करता रहँगा;

जब तक मैं बना रहूँगा, तब तक मैं अपने परमेश्वर का भजन गाता रहुँगा।

³तुम प्रधानों पर भरोसा न रखना, न किसी आदमी पर क्योंकि उसमें उ

न किसी आदमी पर, क्योंकि उसमें उद्धार करने की शक्ति नहीं।

4 उसका भी प्राण निकलेगा, वह भी मिट्टी में मिल जाएगा;

उसी दिन *2022. 202 2022. 2022. 2022 2022 2022.*

जिसका सहायक याकूब का परमेश्वर है,

और जिसकी आशा अपने परमेश्वर यहोवा पर है।

⁶वह आकाश और पृथ्वी और समुद्र

और उनमें जो कुछ है, सब का कर्ता है;

और वह अपना वचन सदा के लिये पूरा करता रहेगा। (<u>शीशीशीशी</u>. 4:24, <u>शीशीशीशी</u>. 14:15, <u>शीशीशीशी</u>. 17:24, शीशीशीशी. 10:6, शिशीशीशी. 14:7)

7वह पिसे हुओं का न्याय चुकाता है;

और भूखों को रोटी देता है।

यहोवा बन्दियों को छुड़ाता है;

8 यहोवा अंधों को आँखें देता है।

यहोवा झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है;

यहोवा धर्मियों से प्रेम रखता है।

9 यहोवा परदेशियों की रक्षा करता है;

और <u>222222 22 22222 22 22222222 22</u>;

परन्तु दुष्टों के मार्ग को टेढ़ा-मेढ़ा करता है।

10 हे सिय्योन, यहोवा सदा के लिये,

तेरा परमेश्वर पीढ़ी-पीढ़ी राज्य करता रहेगा।

यहोवा की स्तुति करो!

147

¹यहोवा की स्तुति करो! क्योंकि अपने परमेश्वर का भजन गाना अच्छा है; क्योंकि वह मनभावना है, उसकी स्तुति करना उचित है। 2 यहोवा यरूशलेम को फिर बसा रहा है; वह निकाले हुए इस्राएलियों को इकट्टा कर रहा है। 3 वह खेदित मनवालों को चंगा करता है, 4वह तारों को गिनता, और उनमें से एक-एक का नाम रखता है। 5 हमारा प्रभु महान और अति सामर्थी है; उसकी बुद्धि अपरम्पार है। 6 यहोवा नम्र लोगों को सम्भालता है, और दुष्टों को भूमि पर गिरा देता है। 7धन्यवाद करते हुए यहोवा का गीत गाओ; वीणा बजाते हुए हमारे परमेश्वर का भजन गाओ। 8वह आकाश को मेघों से भर देता है, और पृथ्वी के लिये मेंह को तैयार करता है, और पहाड़ों पर घास उगाता है। (????????. 14:17) 9 वह पशुओं को और कौवे के बच्चों को जो पुकारते हैं, आहार देता है। (🏽 🗗 🗗 12:24) 10 न तो वह घोड़े के बल को चाहता है, और न पुरुष के बलवन्त पैरों से प्रसन्न होता है;

^{* 147:3 @@@@ @@@ @@@@@@@@@@@@@@@@@} जो दुःख एवं कष्टों से ग्रस्त हैं। यहाँ संदर्भ मानसिक व्यथा, परेशान आत्मा, और किसी भी प्रकार से दुःखी मन से हैं।

11 <u>2222</u> <u>22222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>22222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>22222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>22222</u> <u>2222</u> 2222 <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>22</u> अर्थात् उनसे जो उसकी करुणा पर आशा लगाए रहते हैं। 12 हे यरूशलेम, यहोवा की प्रशंसा कर! हे सिय्योन, अपने परमेश्वर की स्तुति कर! ¹³ क्योंकि उसने तेरे फाटकों के खम्भों को दृढ़ किया है; और तेरी सन्तानों को आशीष दी है। 14 वह तेरी सीमा में शान्ति देता है, और तुझको उत्तम से उत्तम गेहँ से तृप्त करता है। 15 वह पृथ्वी पर अपनी आज्ञा का प्रचार करता है, उसका वचन अति वेग से दौड़ता है। ¹⁶ वह ऊन के समान हिम को गिराता है, और राख के समान पाला बिखेरता है। 17 वह बर्फ के टुकड़े गिराता है, उसकी की हुई ठण्ड को कौन सह सकता है? 18 वह आज्ञा देकर उन्हें गलाता है; वह वायु बहाता है, तब जल बहने लगता है। 19 वह याकूब को अपना वचन, और इस्राएल को अपनी विधियाँ और नियम बताता है। 20 किसी और जाति से उसने ऐसा बर्ताव नहीं किया; और उसके नियमों को औरों ने नहीं जाना। यहोवा की स्तुति करो। (2/2/2/2. 3:2)

148

[ं] **147:11** 20202 20202 20202020 202 202 20202020 2020 20202 2020 जो सच्चे दिल से उसकी उपासना करते हैं वो विनम्र और दीन होते हैं।

2 हे उसके सब दतों, उसकी स्तुति करो: हे उसकी सब सेना उसकी स्तुति करो! 3हे सूर्य और चन्द्रमा उसकी स्तृति करो, हे सब ज्योतिमय तारागण उसकी स्तुति करो! 4 हे सबसे ऊँचे आकाश और हे आकाश के ऊपरवाले जल, तुम दोनों उसकी स्तृति करो। 5 वे यहोवा के नाम की स्तुति करें, 6 और उसने उनको सदा सर्वदा के लिये स्थिर किया है: और ऐसी विधि ठहराई है, जो टलने की नहीं। 7 पृथ्वी में से यहोवा की स्तृति करो, हे समुद्री अजगरों और गहरे सागर, 8 हे अग्नि और ओलों, हे हिम और कुहरे, हे उसका वचन माननेवाली प्रचण्ड वायु! 9 हे पहाड़ों और सब टीलों, हे फलदाई वृक्षों और सब देवदारों! 10 हे वन-पशुओं और सब घरेलू पशुओं, हे रेंगनेवाले जन्तुओं और हे पक्षियों! 11 हे पृथ्वी के राजाओं, और राज्य-राज्य के सब लोगों, हे हाकिमों और पृथ्वी के सब न्यायियों! 12 हे जवानों और कुमारियों, हे पुरनियों और बालकों! 13 यहोवा के नाम की स्तुति करो, क्योंकि केवल उसी का नाम महान है: उसका ऐश्वर्य पृथ्वी और आकाश के ऊपर है।

^{* 148:5 @@@@ @@@@@ @@ @@ @@@@@@} उसने अपने शब्द के उच्चारण द्वारा ही अपना सामर्थ्य प्रगट किया और वे तत्काल ही अस्तित्व में आए।

14 और <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u> <u>2222</u>

यह उसके सब भक्तों के लिये अर्थात् इस्राएलियों के लिये और उसके समीप रहनेवाली प्रजा के लिये स्तुति करने का विषय है। यहोवा की स्तुति करो!

149

1 यहोवा की स्तुति करो!

यहोवा के लिये नया गीत गाओ,

14:3)

² इस्राएल अपने कर्ता के कारण आनन्दित हो, सिय्योन के निवासी अपने राजा के कारण मगन हों! ³ वे नाचते हुए उसके नाम की स्तुति करें, और डफ और वीणा बजाते हुए उसका भजन गाएँ!

5 भक्त लोग महिमा के कारण प्रफुल्लित हों; और अपने बिछौनों पर भी पड़े-पड़े जयजयकार करें। 6 उनके कण्ठ से परमेश्वर की प्रशंसा हो, और उनके हाथों में दोधारी तलवारें रहें, 7 कि वे जाति-जाति से पलटा ले सके;

और राज्य-राज्य के लोगों को ताड़ना दें, ⁹ और उनको ठहराया हुआ दण्ड देंगे! उसके सब भक्तों की ऐसी ही प्रतिष्ठा होगी। यहोवा की स्तुति करो।

150

1यहोवा की स्तृति करो! परमेश्वर के पवित्रस्थान में उसकी स्तृति करो; उसकी सामर्थ्य से भरे हुए आकाशमण्डल में उसकी स्तुति करो! उसकी अत्यन्त बड़ाई के अनुसार उसकी स्तुति करो! ³ नरसिंगा फूँकते हुए उसकी स्तुति करो; सारंगी और वीणा बजाते हुए उसकी स्तुति करो! 4डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करो; तारवाले बाजे और बाँसुरी बजाते हए उसकी स्तुति करो! 5 ऊँचे शब्दवाली झाँझ बजाते हए उसकी स्तुति करो; आनन्द के महाशब्दवाली झाँझ बजाते हए

अधिकतर जो कहा गया है, यह विचार उसी के अनुकूल है कि दुष्ट को न्यायोचित * **150:2** 2222 222222 22 22222 22 2222 करनेवाली बातों का संदर्भ दिया गया है।

उसकी स्तुति करो! ⁶ <u>2121212</u> <u>2121212</u> <u>21212</u> <u>2121 212 2121 21212</u> <u>2121 2121212</u> <u>2121212</u>†! यहोवा की स्तुति करो!

cclxiii

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) हिंदी - 2019 The Indian Revised Version Holy Bible in the Hindi language of India

copyright © 2017, 2018, 2019 Bridge Connectivity Solutions

Language: मानक हिन्दी (Hindi)

Translation by: Bridge Connectivity Solutions

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

You include the above copyright and source information.

If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.

If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-04-11

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 11 Apr 2023

38a51cad-1000-51f5-b603-a89990bf4b77